

हिन्दी मासिक

ओ३म्

एक प्रति मूल्य: रु. १८/-

जनज्ञान

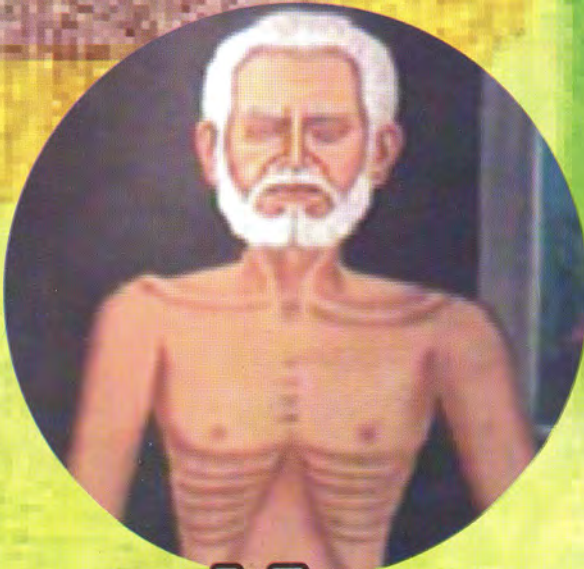
ओ३म्



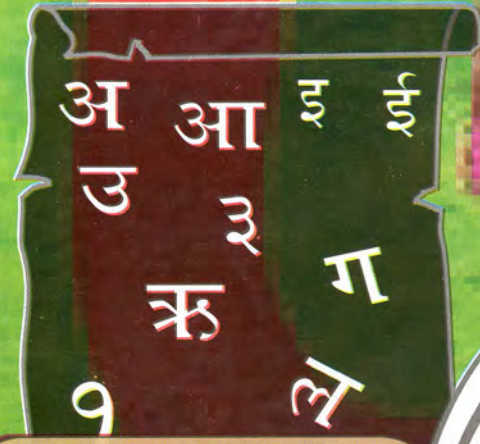
सितम्बर २०१६

वर्ष: ५२ अंक: ०५

भाद्रपद-आश्विन २०७३



स्वामी विरजानन्द
पुण्यतिथि 14 सितम्बर

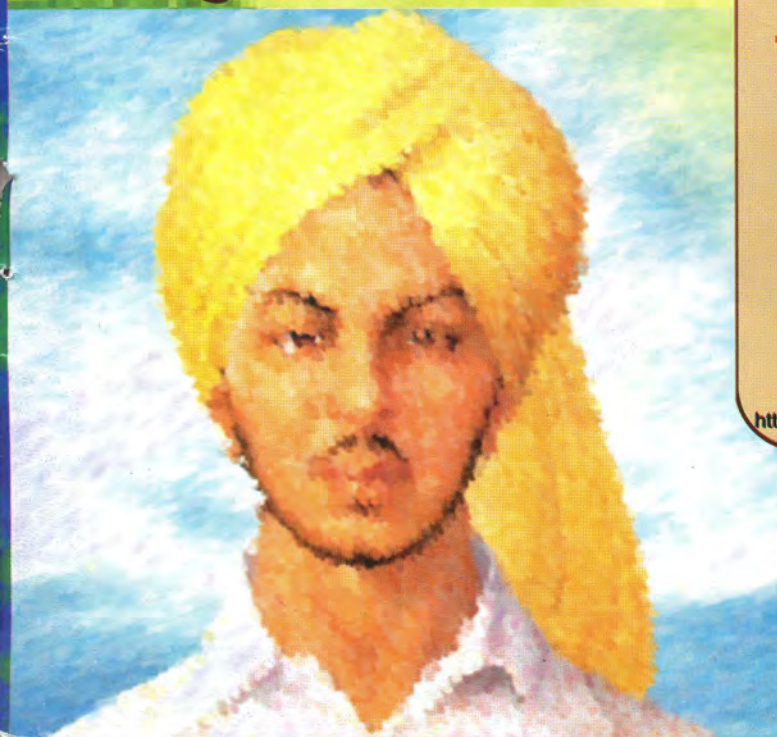


हिन्दी दिवस १४.९.२०१६

हिन्दी हमारी
मातृभाषा है;
मात्र
एक भाषा
नहीं

<http://www.libraryjunction.net/blogs/item/1132102>

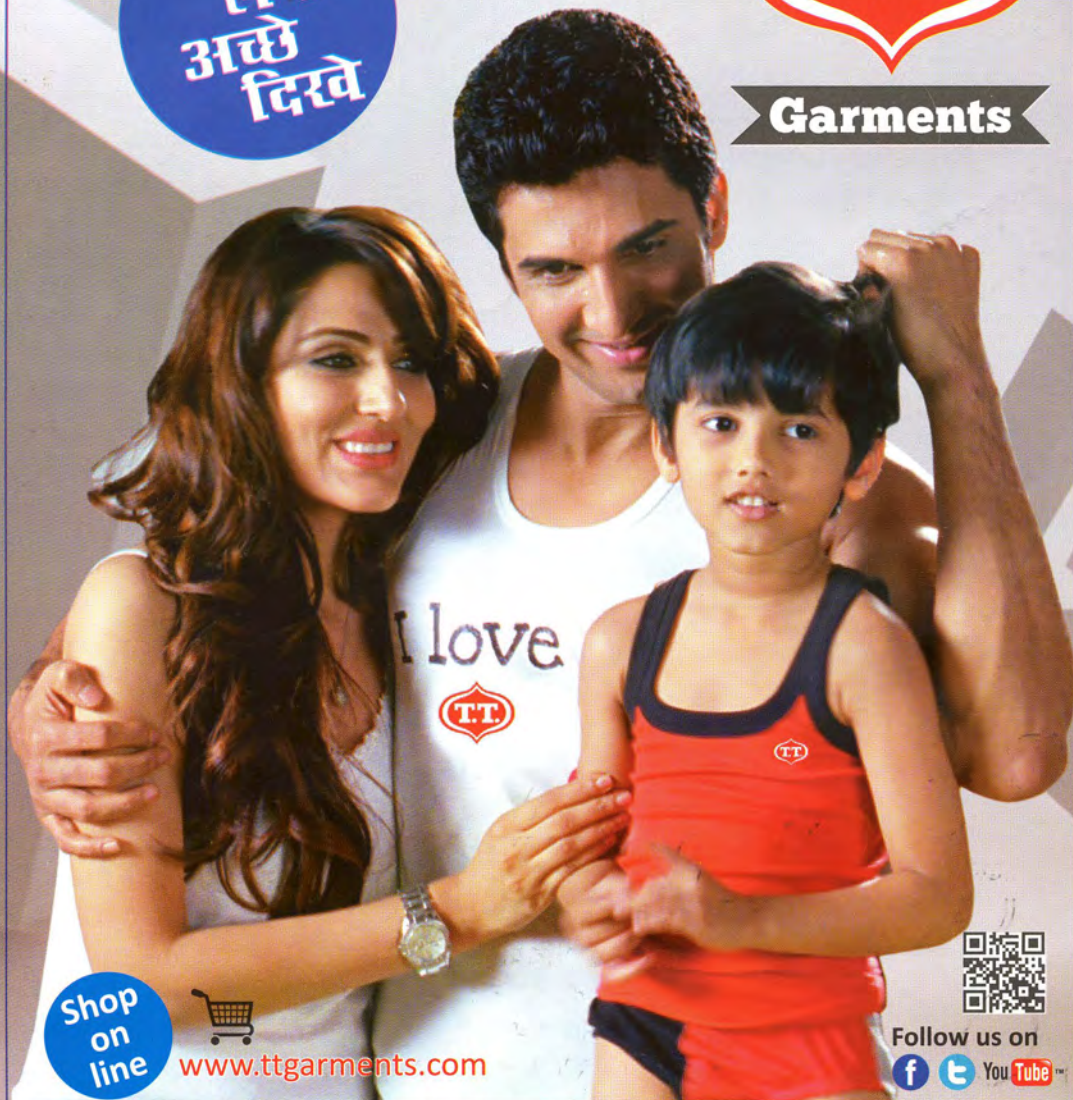
शहीद भगतसिंह
जयन्ती २८ सितम्बर



अच्छे
लगे
अच्छे
दिखते



Garments



Shop
on
line



www.ttgarments.com



Follow us on



INNER WEAR | CASUAL WEAR | SPORTS WEAR | SHIRTS & TROUSERS - MEN, LADIES & KIDS

T.T. LTD.: Ph.: 011-45060708, 18001035681 (Toll Free) | E-mail: export@tttextiles.com | Web.: www.tttextiles.com



is a world famous globally well known Multi Product Brand selling in 65+ countries Since 1964



॥ ओ३म् ॥



कृण्वन्तो
विश्वमार्यम्

सम्पादकीय



हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु

सम्पादक : पण्डिता राकेश रानी

सह-सम्पादक : दिव्या आर्य

मोबाइल : 8459349349, 9810257254

Email: dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम

केशवनगर बस स्टैण्ड

(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर

दिल्ली-११००३६

एक प्रति- 18 रु०, पांच वर्ष-900 रु०,

आजीवन-3100 रु०,

संरक्षक सदस्य-11000 रु०

विदेश में (हवाई जहाज से)---

वार्षिक शुल्क-3500, आजीवन-35000रु

सितम्बर 2016 वर्ष 52 अंक 5

आवरण पृष्ठ : अरविन्द मोहन मित्तल

स्वतन्त्रता का पावन पर्व, 70वें वर्ष का एक नया संकल्प

गत माह 15 अगस्त को स्वतन्त्रता का पावन पर्व, सत्तरवां वर्ष भारतवर्ष, आर्यावर्त हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ देशवासियों तथा विश्व में फैले हुए भारतीयों ने सोत्साह परिपालित किया। इस अवसर पर ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उद्घोषित किया कि यह पर्व, एक नया संकल्प, नई उमंग, नई ऊर्जा, राष्ट्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का संकल्प है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि आज हम जो आजादी की सांस ले रहे हैं, उसके पीछे लक्षावधि महापुरुषों का बलिदान है, त्याग और तपस्या की गाथा है।

श्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से अपने सम्बोधन में इतिहास के इस विस्मृत से सत्य को भी अपनी वाणी से उद्घोषित किया कि भारत एक चिर-पुरातन राष्ट्र है। उन्होंने कहा "राष्ट्र का हजारों साल का इतिहास है। वेद से विवेकानन्द तक, उपनिषद् से उपग्रह तक, सुदर्शन चक्रधारी मोहन से लेकर चरखाधारी मोहन तक, महाभारत के भीम से लेकर भीमराव तक हमारी इतिहास की लम्बी यात्रा है, विरासत है। अनेक उतार-चढ़ाव इस धरती ने देखे हैं अनेक पीढ़ियों ने संघर्ष किया है।"

प्रधानमन्त्री ने अपने उद्बोधन में राष्ट्र के सहस्रों वर्षों के इतिहास और संघर्ष गाथा के उन निर्माताओं के प्रति भी श्रद्धा समर्पण का भाव दर्शाया है, जिनका स्मरण इस मास (सितम्बर) में सहसा मानस पटल पर उभार पा जाता है।

सितम्बर माह स्मरण कराता है-महान विभूति स्वामी विरजानन्द का....जिन्होंने अपने ज्ञान चक्षुओं से मूलशंकर का पथ

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

जनज्ञान (मासिक)

3

सितम्बर, 2016

प्रदर्शन कर उन्हें मिथ्या ग्रन्थों से छुटकारा दिलाकर परम पिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद के अध्ययन, और प्रचार-प्रसार में संलग्न होकर दयानन्द होने की राह दिखाई थी। देव दयानन्द ने अपने वेद प्रचार अभियान में विस्मृत भारत संतान को वेदों के इस आह्वान से अवगत कराया कि आर्य दासता को कदापि स्वीकार नहीं करता। उन्होंने ही अपनी महानकृति सत्यार्थ प्रकाश में 'स्वराज्य' की महत्ता और आवश्यकता का प्रतिपादन किया था। उनके आह्वान पर पूर्ण निष्ठा सहित ध्यान देकर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने उद्घोषित किया था.. "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

देवदयानन्द के स्वातन्त्र्य महामन्त्र से प्रेरित होकर उनके निष्ठावान शिष्य पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में इंडिया हाउस (भारत भवन) को स्वदेश की स्वतन्त्रता के लिए, ब्रिटिश सत्ता को उसके मूल स्थान में ही चुनौती देने वाले स्वातन्त्र्य वीर सावरकर का दीक्षा स्थल बनाया था। वहीं मैडम भीखाजी कामा ने भी स्वदेश की आजादी की संकल्प ग्रहण किया था। स्वतन्त्रता की उन आराधिका मैडम भीखाजी कामा की जयन्ती भी इसी सितम्बर माह की 13 को आती है।

22 सितम्बर महान् सन्त गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत अवैद्यनाथ की पुण्यतिथि है। हिन्दुत्व अभियान के इन महान योद्धा ने हिन्दू समाज की एकता के अभियान को अपने पूज्य गुरुदेव तथा स्वाधीनता सेनानी रहे महंत दिग्विजय नाथ के दिशा निर्देशन में हिन्दू महासभा के मंच पर सक्रिय होकर सशक्त करने में योगदान दिया था। हिन्दू महासभा के प्रत्याशी के तौर पर महंत अवैद्यनाथ जी पांच बार विधायक रहे थे। संसद में भी उन्होंने हिन्दू महासभा का प्रतिनिधित्व किया।

अयोध्या-मथुरा और काशी के पवित्र स्थानों की मुक्ति हेतु बनी 'धर्मस्थान मुक्ति यज्ञ समिति' के वे प्रथम संस्थापक अध्यक्ष थे।

उनका मानना था कि उपरोक्त तीनों स्थानों पर बने मन्दिरों को कभी विदेशी आक्रमणकारियों ने तोड़ा, इसलिए इन तीनों स्थानों को वापस प्राप्त कर उन पर पुनः भव्य मन्दिर निर्माण से ही दासता का कलंक मिट सकेगा। हिन्दू जीवन मूल्यों के प्रति अपनी अंतिम श्वास तक पूर्णतः समर्पित रहे महन्त जी कहा करते थे कि गोरक्ष पीठ देश, धर्म, और संस्कृति के प्रति सदैव समर्पित रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

वर्तमान गोरक्ष पीठाधीश्वर योगी आदित्य नाथ महन्त अवैद्यनाथ के ही निष्ठावान शिष्य हैं। वे भी अपने पूज्य गुरुदेव के समान संसद में निर्भीकता सहित हिन्दुत्व हित संरक्षण और संवर्धन के लिए सक्रिय हैं।

सितम्बर माह का अंतिम सप्ताह अमर शहीद भगत सिंह का स्मरण दिलाता है। 28 सितम्बर उन अमर हुतात्मा की जयन्ती है।

उस महान योद्धा ने स्वदेश के स्वाधीनता संग्राम में योगदान करते हुए क्रान्ति का पथ अपनाया था। भारत माता की बंधन मुक्ति हेतु अपना जीवन प्रसून समर्पित करने वाले इस महान कर्मयोगी ने देशभक्ति के पावन अपराध में फांसी का फंदा चूमने से कुछ ही समय पूर्व अपने पिताजी को लिखे पत्र में उल्लेख किया था कि मेरे यज्ञोपवीत संस्कार के समय जो संकल्प व्यक्त किया गया था, मैं उसकी पूर्ति हेतु सक्रिय हूँ। उन्हें जब अपनी अन्तिम अभिलाषा बताने को कहा गया तो उन्होंने यह भाव व्यक्त किया था—

इंकलाब हो अमर हमारा,
इंकलाब की जय हो।

इस साम्राज्यवाद का,
भारत की धरती से क्षय हो।

राष्ट्र को संरक्षण-संवर्धन और दिशादर्शन प्रदान करने वाली सभी पुण्यात्माओं का स्मरण करना जहां हर राष्ट्रभक्त का कर्तव्य है, वहीं स्वदेश, स्वराष्ट्र के समक्ष विद्यमान चुनौतियों और समस्याओं के निदान और निवारण में योगदान भी दायित्व है। राष्ट्र के समक्ष आतंक और अलगाव के पक्षधरों द्वारा रचे जा रहे नित नए षड्यन्त्रों की चुनौतियां हैं विद्यमान, तो कई स्वयंभू बुद्धिजीवियों द्वारा राष्ट्र के इतिहास और संस्कृति की विकृति हेतु भी ताने जा रहे हैं नित नए वितान!

देश के निर्धन जन के मुख से आज भी उभर रहा है, रोटी, कपड़ा, और मकान की चाह का स्वर। राष्ट्र घातक शक्तियां नित नए गठजोड़ कर राष्ट्र को तोड़ने के कुचक्र में संलग्न हैं। ये तत्व-जिनके प्रतीक माओवादी, कट्टर मजहबवादी जिहादी तथा विदेशी मिशनरी हैं, देश को खण्ड खण्डित कर आपस में बांट लेने की अपनी तमन्ना को पूरा करने के लिए नित नए पाशों फेंकने में अपनी पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं।

इस स्थिति में, राष्ट्रवाद के प्रसंग में तनिक गहनता सहित विचार करें तो जिस रूप में कुछ

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय-स्वतन्त्रता का पावन पर्व 70वां वर्ष का एक नया संकल्प	विश्वप्रेम	-स्व. भगत सिंह २०
सामायिक-विचार: मोदी के तीर, घाव करे गंभीर	श्रीमती भीका जी कामा	-डॉ. सहदेव वर्मा २३
आत्मा को ज्योतिर्मय करो	'क' से कबूतर को फुर करने की चाल	
-पण्डिता राकेशरानी ७		-डॉ. रमेशचन्द्र नागपाल २७
महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी: जीने की बात करो!	राष्ट्रभाषा हिन्दी का समृद्धि एवं विकसित स्वरूप	
हृदय मंदिर के उद्गार	-डॉ. गोपाल राम वर्मा २९	
-दिव्या आर्य ९		
आपके पत्र	हिन्दी क्यों और कैसे?	-डॉ. महेश चन्द्र गुप्त ३०
वैदिक-दर्शन: ब्रह्मयज्ञ	हमारी आंखें: बुझती ज्योति	-बाल कवि वैरागी ३३
मेरी माता का जय गौरव	गुमनामी बाबा नहीं थे नेता जी	-रणजीत पांचाले ३५
बृहद् विमान शास्त्र-विमान यंत्रों का संक्षिप्त विवरण	विभाजक राजनीति	-बनवारी ३७
-कृपाल सिंह वर्मा १६	'कायर हैं भारतीय सेकुलर'	-देवेन्द्र स्वरूप ४०
गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द दण्डी	तांगेवाला कैसे बना मसालों...	-म. धर्मपाल गुलाटी ४२
शहीद भगतसिंह का पिता जी के नाम पत्र	स्वास्थ्य विचार: वृद्धावस्था और....	
-प्रस्तुति: दिव्या आर्य १९	-डॉ. फणिभूषण दास ४३	
स्व. भगतसिंह की दृष्टि में आर्यसमाज	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल-2016	४४
-प्रस्तुति: दिव्या आर्य १९	समाचार-दर्शन	४८

स्वयंभू बुद्धिजीवियों द्वारा इसे पेश किया जाता है वह तो एक यूरोपीय धारणा है, जिसकी पृष्ठभूमि भारतीय इतिहास से मेल नहीं खाती। इसीलिए हाल की सदियों से आज तक भारतीय समाज की चिंता को राष्ट्रवाद की शब्दावली से ही नहीं समझा जा सकता। यह भी कहा जा सकता है कि हमारे सेक्युलर बुद्धिजीवी भारतीयों पर इस्लामी उम्मत वाला राष्ट्रवाद थोपना चाह रहे हैं। आज तथाकथित बुद्धिजीवियों का एक वर्ग हिन्दुओं को ही सारी 'असहिष्णुता ; 'साम्प्रदायिकता' आदि का दोषी ठहराते हुए भी नहीं कतराता।

इन बुद्धिजीवियों ने अनवर शेख, तस्लीमा, तारिक फतेह जैसे स्वतंत्र-चेतन मुस्लिम मनीषियों को सदैव उपेक्षित किया है।.....वली उल्लाह, मौलाना मोदुदी, सर इकबाल, अली बंधु जैसे.....मुस्लिम विचारिकों की पूरी श्रृंखला ने भारतीय राष्ट्रवाद या राष्ट्रीय समाज जैसी बात तथा राष्ट्र की मुख्य धारा सरीखी सोच को सिरे से खारिज किया है। ये भी उसी सोच के हैं।....

आज भारतीय जन गण के समक्ष तर्कसंगत ढंग से दृढ़ता सहित यह प्रतिपादित करने की आवश्यकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद में हिन्दू रंगत का होना

इसका दोष नहीं, इसकी शक्ति है।....

देश की केन्द्रीय सत्ता में दो वर्ष पूर्व आए बदलाव से भारत की एकता, अखण्डता और सुदृढ़ता के पक्षधर हर विशुद्ध राष्ट्रवाद के पक्षधर के मन में निश्चय ही आशा की एक किरण विस्फुटित हुई है।

मजहब के आधार पर भारत से अलग होकर अस्तित्व में आया था पाकिस्तान! भारत के प्रति शत्रु भाव से ही प्रेरित हैं आज भी वहां के 'सुलतान'! अब बलूचिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के प्रति भारत के नए दृष्टिकोण को विदेश नीति में खोखले आदर्शवाद के अन्त के रूप में देखा जाना चाहिए।....

तनिक गहनता सहित विचार करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी नीतियां राष्ट्र हित की साध्य नहीं थीं, अपितु स्वयं को महानतम दर्शाने का माध्यम बनी हुई थीं। सही समय पर ही भारत ने बलूचिस्तान का मामला उठाया है। विदेश नीति में आए शुभ बदलाव के साथ घरेलू नीतियों में भी काल प्रवाह के अनुरूप अपेक्षित संशोधन के संकेत मिल रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक समाज, एक स्वप्न, एक संकल्प, एक गंतव्य' की दिशा के लिए हर देशवासी को प्रतिबद्ध होने का जो आह्वान किया है: वह काल प्रवाह की पुकार है। ★ ★

वृहद आरण्यक उपनिषद के एक मंत्र को राहुल गांधी ने अस्त्र जैसा बना दिया है। उससे वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर वार कर बैठे हैं। पर वे नहीं जानते कि वह अस्त्र उन पर पलटवार कर सकता है। वार और पलटवार से अलग हटकर अगर देखें तो दो बातें बहुत साफ नजर आ रही हैं।

पहली, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहस का पैमाना बदलने के लिए राहुल गांधी को विवश कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। अब बहस भारत के शास्त्र और उनकी परम्परा पर होने जा रही है। यह भारत के लिए एक आश्वासन है। ऐसा आश्वासन जो भविष्य की राजनीति की परिभाषा बदलने में समर्थ है। अपनी जड़ों की तरफ लौटने का यह संकेत भी है।....

दूसरी बात, इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह मंत्र में ही छिपी हुई है। उसे जानने से भी पहले मंत्र को जानना जरूरी है। उसका स्रोत जानना उससे भी ज्यादा जरूरी है। ऐसा हो जाने पर ही उस मंत्र का महत्व ध्यान में आएगा, नहीं तो विवाद में उसके ओझल हो जाने का खतरा है।....उपनिषद अनेक हैं। कुछ लोग उसकी संख्या 250 मानते हैं तो कुछ 120....! इतना अधिक अंतर यह बताता है कि प्रमाणिक उपनिषद कम से कम 100 से ज्यादा हैं। उनमें 11 उपनिषद को ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है।

उन्हीं में से एक है—वृहद आरण्यक उपनिषद! वह क्रम में 11वां माना जाता है। क्या राहुल गांधी ने उस उपनिषद को देखा है? पढ़ने और समझने की बात तो बाद में आती है।

अगर उन्होंने किसी के कहने पर उस मंत्र को एक राजनीतिक जुमले की तरह चलाया तो भी कोई हर्ज नहीं है। एक बढ़िया माध्यम उन्होंने चुना। आरोप-प्रत्यारोप के घटिया उदाहरणों से यह बेहतर ही मान जाएगा।

लेकिन सवाल इससे भी अधिक गहरा है। उसका राहुल गांधी सामना क्या कर सकेंगे? उनके बारे में जो धारणा बनी हुई है, वह तो दूसरी ही है। वह यह कि उन्हें कोई चलाता है। किसी ने सलाह दे दी होगी। और वे बोल पड़े। यानी ट्वीट कर बैठे, बिना समझे।

मीडिया ने इसे खासा महत्व दिया। देना भी चाहिए। मीडिया ने राहुल गांधी पर बड़ा उपकार किया। अपना

फर्ज निभाया। यह अलग बात है। मीडिया ने उपेक्षा कर दी होती तब कौन जानता कि राहुल गांधी क्या बोले। अब सभी जानते हैं कि वे उपनिषद का सहारा अपने राजनीतिक हित को साधने के लिए ले रहे हैं।

जिस मंत्र को उन्होंने अस्त्र बनाया वह अपने आप महान है। राहुल गांधी का ज्ञान बढ़े और वे सही बात जान सकें, इसलिए जरूरी है कि उन्हें यह बता दिया जाना चाहिए कि वृहद आरण्यक उपनिषद के पहले अध्याय का जो तीसरा खण्ड है उसका यह 28वां मन्त्र है। जिसमें ऋषि की प्रेरणा से यह प्रार्थना उपजती है कि.....‘मुझे असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले जाओ।’ यह किसी की भी चेतना को जगाने का मंत्र बन सकता है।

सबसे पहले यह मन्त्र ऋग्वेद में आता है। मूलतः उसी का यह मंत्र है। साफ है कि इस मन्त्र का स्रोत वेद है। लेकिन शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद में इसे प्रार्थना मन्त्र के रूप में दोहराया जाता है। राहुल गांधी को यह भी जान लेना चाहिए कि शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में सौ अध्याय हैं। उसके छह अध्याय ही वृहद आरण्यक उपनिषद कहाते हैं। साफ है कि अनजाने में ही राहुल गांधी ने शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ की शरण ले ली है। इसी अर्थ में वे वेदांत की शरण पहुंच गए हैं। उन्हें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्हें वेदान्त के उपवन में पहुंचा दिया।

दस जनपथ के उद्यान और राजनीति के वन को वेदान्त का उपवन जोड़ सके तो भारतीय राजनीतिक में क्रान्ति घटित होने से कौन रोक सकता है? पर क्या यह उतना ही सरल है जितना दिखता है? सरल नहीं है बहुत कठिन है। उपदेश देने से ही नहीं, उसे समझ कर आचरण में उतारने पर संभव है कि वह प्रार्थना राहुल गांधी पर बरस जाए! ऐसा संभव है। लेकिन उनकी शर्त परीक्षा की मांग करती है। क्या राहुल गांधी उसके लिए तैयार हैं??.....

पहली परीक्षा उन्हें अपनी संगति सुधार कर देनी होगी। उन्हें नरेन्द्र मोदी की संगति में रहना होगा। दूसरी परीक्षा इससे भी कठिन है। सेवा भाव से राजनीति का तत्व ज्ञान सीखना होगा। जैसा कि उपनिषद के उच्चारण से ही प्रकट होता है।

(शेष पृष्ठ-10 पर)



आत्मा को ज्योतिर्मय करो



उपदेश: माँ का

-माँ पण्डिता राकेशरानी



आज सभी अपने में मस्त हैं, अपने स्वार्थ को सर्वोपरि मान कर हमारा चिन्तन और व्यवहार है। और.....हम सभी का लक्ष्य बन गया है केवल अपना सीमित स्वार्थ!.... किन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम अपने को भी तो भुला रहे हैं।.... असंत्य, भ्रम, भ्रष्ट आचरण द्वारा धन संग्रह ने हमारे जीवन को तम के आवरण में ढक लिया है।.....

‘स्व’ को भुलाकर ‘पर’ की चिन्ता में हम भटक रहे हैं। देह से आगे न हमारा मस्तिष्क काम करता है न मन। आत्म तत्व को विस्मृत ही नहीं, हमने अंध कूप में डालकर एक ऐसा कृत्य किया है जिस पर सोचते हुए भी कंपकंपी आती है।

आप सोचिए तो सही, अपने शरीर के लिए जितना करते हैं क्या उसका हजारवां भाग भी अपने लिए आपने किया है? प्रसाधन, धन, वस्त्र, जीवन के मूल्यवान् क्षण क्या आपको कभी ‘आत्मा’ का स्मरण भी करा पाए हैं?

देश-धर्म-ज्ञान, सभी की सीमाएं केवल मेरे बाहरी रूप की सज्जा का केन्द्र हैं। शिक्षा, दीक्षा, भाषा, साधन, परिवार भी केवल मेरे स्वार्थ के लिए हैं। लेकिन ‘मैं’ कहाँ हूँ, यह ज्ञान आपने सर्वथा विस्मृत ही कर दिया प्रतीत हो रहा है।.....

परिणाम आपके सामने है। हम मरते जा रहे हैं। हमारा अस्तित्व तक संकट में पड़ गया है।

धर्म का मूल प्रतिष्ठान ही जब शून्य की छाया से ग्रस्त हो तो धर्म के उन्नायक तत्त्वों को त्रस्त होने से कौन रोक सकता है?

अतः आज का प्रथम आवश्यक कर्तव्य है आत्मा को ज्योतिर्मय करना!.....यही युग धर्म है, यही सत्य है, पूजा है, आराधना है, परम स्वार्थ है यह सिद्धि है और नवनिधि प्राप्ति का एक मात्र मार्ग है कि अपने को ज्योतिर्मय करो।

बन्धु! सोचो, गहरे पानी पैठ, सोचो और देखो, तुम कहाँ खड़े हो?? क्या होगा—यदि इसी तरह चलते रहे तो? जिस आत्मा के न रहने पर देह शव बन जाता है, उस आत्मा का तुम्हें न ज्ञान है, न ध्यान...यह कैसा अज्ञान है।

भगवान कृष्ण से योगेश्वर दयानन्द तक सारे महामानव क्या यही नहीं पुकारते आए? सभी के उपदेशों में क्या यही आदेश नहीं ध्वनित था कि आत्मा को जानो, समझो और ज्योतिर्मय करो, तुम देव बन जाओगे!....लौकिक धन तुम्हारे साथ नहीं जाएगा। आत्मा का ज्योतिर्मय भाव ही हमें प्रभु की अमृतमय गोद में बैठने का अधिकारी बनाएगा।

इसलिए हे मेरे प्रिय! इसी क्षण से जीवन की धारा बदलो। अन्तर को टटोलो और सब कुछ भुलाकर भी अपने को जानो, अपने को उठाओ और प्राणों को दीप्ति से भरओ। यही जीवन है, यही धर्म है, यही सत्य है।



* महात्मा वेदभिक्षु: की अमर-वाणी *

जीने की बात करो!



भारत रहे का अर्थ है भारत की

संस्कृति, आदर्श, इतिहास, परम्पराएं जीवित रहें। बड़े-बड़े काल के गाल में समा गए पर वेद-शास्त्र उपनिषद्-गीता के रूप में आज भी भारत के पास वह पूंजी है जिसकी तुलना में धरती के साम्राज्य

का भी कोई महत्त्व नहीं!....

आज भी हम उन्हीं के संरक्षण के लिए लड़ रहे हैं। हमारी सन्तान इन्हें भूल रही है। शासन इन्हें भुलवा रहा है। विदेशी शक्तियाँ इन्हें मिटाना चाह रही हैं और इनके रखवारे गहरी नींद में सो रहे हैं!!!.....

आज देश धधक रहा है। कोई भी राजनैतिक दल राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। समाज सेवा संस्थानों का उद्देश्य भी धन बटोरना ही रह गया है। न किसी में साहस है, न समस्या पर पकड़ है। ऐसे में देश मृत्यु की ओर न जाए तो कहाँ जाए?

हमसे जो बन पड़ा किया और करेंगे, पर प्रश्न यह है कि क्या ६० करोड़ हिन्दुओं में से ६ व्यक्ति भी बलिदान नहीं दे सकते?

यदि कुछ व्यक्ति भी बलि वेदी पर शीश कटाने के लिए नहीं आ सकते तो बात, बातों से नहीं बनेगी। धन-साधन-भाषण समस्या का हल नहीं है। त्याग और बलिदान की भावना ही देश की रक्षा कर सकेगी, यह सत्य सब समझ लें।

शासन ने अभियोग आरम्भ किया। धन का अभाव, व्यक्तियों का अभाव, केवल भावना से हम कब तक लड़ें, जबकि साधन शून्य हैं।

समय के प्रवाह को बदलने के लिए प्रत्येक हिन्दु स्वयं सेनापति बने। जोश और होश से अपना कार्य करो। विजय की भावना उसमें व्याप्त हो और अपनी बुद्धि और साधना से एक ही नारा गूँजे—

वन्दे मातरम् गाना होगा या
भारत से जाना होगा।

इस नारे में बड़ी शक्ति है। इसमें राष्ट्र की भक्ति का उमड़ता स्रोत है। इसलिए इस नारे को बल से गुंजाइए और देशभक्ति का वातावरण बनाइए।

हम मुसलमानों-ईसाइयों से द्वेष न करें, अपितु उन्हें भारत का भक्त बनाएं। भारत के सभी नागरिक चाहे जिसकी पूजा करें पर भारत की महिमा को हृदयंगम करें। उन्हें वेद-शास्त्र-उपनिषद्-दर्शन पर अभिमान हो। मुसलमान राम के भक्त क्यों नहीं बन सकते? कोई बताए तो सही कि वे क्यों नहीं भारत की जनधारा में घुल सकते? सभी की वेश-भूषा यदि एक हो जाए, सबकी भाषा एक हो तो फिर झगड़ा कैसा?

अब एक बात सभी समझ लें कि औरंगजेब के गीत गाने वाला, तैमूरलंग को महापुरुष मानने वाला, मुहम्मद अली जिन्ना का भक्त, भारतद्रोही तो हो सकता है, भारतभक्त नहीं, और भारतद्रोही की नागरिकता हमें समाप्त करनी होगी, उसे भारत छोड़ना होगा। जिनके लिए भारत एक धरती का टुकड़ा है, वे इसके प्राणों का स्पंदन नहीं सुन सकते, पर जिनके लिए भारत माता है—वे माँ के कष्टों की पीड़ा को अनुभव कर सकते हैं।

जिन नेताओं की राजनैतिक भूल से माँ के टुकड़े हुए, उनका अनुगमन माँ को हानि ही पहुँचाएगा, सशक्त नहीं बना सकता। कश्मीर, पूर्वांचल सभी कुछ कट रहे हैं। हिमाचल के अनेक भाग आज सुलग रहे हैं। क्या होगा परिणाम? कौन कह सकता है?.... इसलिए हमारा आग्रह है कि प्राण और आत्मा को जाग्रत कर भारत माँ की वन्दना करो!.....

वन्दना के रक्त कण में, एक शिर मेरा मिला लो।
(माघ सम्वत् २०३८ के जनज्ञान से उद्धृत)

धरती का वास्तविक संघर्ष तो “सत्य” और “असत्य” का है। “विद्या” और “अविद्या” का है और भी स्पष्ट कहें तो संघर्ष “शरीर” और “आत्मा” का है।
—पण्डिता राकेश रानी

हृदय मन्दिर के उद्गार

-दिव्या आर्य

जय मां भारती तेरी जय हो, सर्वदा हो, हर विध हो
पर कैसे हो यह मनोरथ पूर्ण....! कि हर हृदय में तेरा जय भाव हो,
शाब्दिक नहीं, आत्मिक हो, फिर व्यावहारिक और कार्यान्वित हो,
हर भारतवासी-भारतवंशी के हृदय में पूर्वजों का आदर-सम्मान हो,
चुकाने को रहे पितृ-ऋण हर दिल व्याकुल, हर हृदय मन्दिर में यही उद्गार हों!



सितम्बर माह का प्रारम्भ, और

कुछ सितमगों के सितम का भी मानो दौर आरम्भ...
कहीं शिक्षक दिवस का सम्मेलन तो कहीं हिन्दी का पखवाड़ा, जीवित पितृजनों की अवहेलना और श्राद्ध के नाम पर

उनकी आत्मा की शान्ति हेतु तर्पण और भोज!

ये कहाँ किस ओर बढ़ रहे हैं हम, हमारी मानसिकता और सोच? बाह्य आडम्बरों के दामन थाम कर किस भव सागर को तरेंगे या पूर्वजों को तारेंगे? जीवित माता-पिता का तिरस्कार, उनके विचारों की अवहेलना, संपत्ति का लालच और कहीं-कहीं तो उन्हें भोजन तक ढंग से उपलब्ध न कराना और मरणोपरान्त उनके नाम पर श्राद्ध अथवा श्रद्धा का आडम्बर!!

श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्॥

अर्थात् श्रद्धा से किए सेवारूपी कर्मों का नाम ही तो 'श्राद्ध' है। और.....

तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्॥

अर्थात् जिस-जिस कर्म से जीवित पितर (मातृ-पितृजन) प्रसन्न हों, आशीष दें वही तो सही मायनों में है 'तर्पण'।

और उनकी मृत्युपरान्त भी उनके संस्कारों-विचारों को हृदयंगम कर, आत्मसात कर उन्हें सर्वदा जीवित रखें अपने आचरण में! उनका नाम गुंजायमान कर सकें, ऐसे हों कर्म हमारे.....यही होगा 'श्राद्ध' एवं 'तर्पण'।

आवश्यक नहीं है कि सभी के हृदय में यही भाव हों, परन्तु समाज की सिकुड़ती सोच का दायरा, विकृत होते मनोभाव, कभी न समाप्त होने वाली भौतिकतावादी प्रतिस्पर्धा और ज़रा-ज़रा सी बात पर तुनक, तमंचे निकालने वाला युवा!....."वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव विस्मृत और 'मैं और मेरी सन्तानें' बस!..... इस "मैं" में 'हम भी बुजुर्ग होंगे' का भाव भूल जाते हैं और पैसे की चकाचौंध

में खुद को अमरत्व का भागी मान लेते हैं। यह कटु, अटल और अन्तिम सत्य है कि समय बीतता है....पतझड़ है तो बहार है और बहार है तो पतझड़ होगा ही। शरीर नश्वर है नष्ट होगा यानी 'पतझड़' और आत्मा नया शरीर धारण करेगी यानी 'बहार'! जन्म के साथ मृत्यु और मृत्यु के साथ जन्म तो निश्चित है ही!.....

परन्तु नहीं मरते हैं, अमरत्व को प्राप्त होते हैं, इसी मास जन्मीं हुतात्माओं जैसे जन-गुरुवर विरजानन्द (14 सितम्बर), जिन्होंने महर्षि दयानन्द जैसे अप्रतिम शिष्य दिए, भारतीय तिरंगे की डिज़ाइनकर्ता- मैडम भीका जी कामा (24 सितम्बर) और हर देशभक्त युवा की हर युग की प्रेरणा शहीद भगतसिंह (28 सितम्बर), जिन्होंने हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूल बलिदान का ही इतिहास रच दिया! जीना तो ऐसे ही जीवन जीने का, भारत माता की जय का भाव चरितार्थ करने के भाव का नाम है न!.....

इसी माह में, हिन्दी की जय बोलने वाले अथवा पखवाड़ा मनाने वाले या आयोजन करने वाले, कितने ऐसे होंगे जिन्होंने हिन्दी को सत्य ही अंगीकार किया होगा?? आजकल आपको अधिकतर के मुख से 'थैंक्यू' जैसे प्रचलित अंग्रेजी शब्द अनायास ही सुनने को मिल जाएंगे।

सामान्य बोलचाल में भी, अपने बच्चों के साथ भी अभिभावक अंग्रेजी में बातचीत करना ही पसन्द करते हैं बल्कि फर्फटेदार अंग्रेजी बोलने पर तो गौरवान्वित अनुभव करते हैं। फिर हम दोष देते हैं नई पीढ़ी को..कि सुनती नहीं हैं, संस्कार नहीं है, इत्यादि-इत्यादि!

बालपन के हृदय में हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान के जय भावों को, हिन्दी मनोभावों से उसकी जड़ों को खोखला किसने किया? किसी और ने नहीं, नई पीढ़ी में अपने संस्कारों, अपनी मातृभूमि के सम्मान, और अपनी संस्कृति की हीनता के भाव का आरोपण हमने किया। और बाकी अंग्रेजियत मनोभावों की खाद-वृष्टि से पालित-पोषित हृदय किसको किस ओर कितना ले जाएगा यह उसका भाग्य.....सोचिए!

●●●

आश्चर्य महान आश्चर्य
अगस्त का अंक अनेक अर्थ में बहुत
सुन्दर, सुरुचिपूर्ण और महत्वपूर्ण विषय-
वस्तु से पूरित रहा। हार्दिक धन्यवाद
आत्मिक शुभकामनाएं दिव्या आर्थिकों
प्राश्चर्य लो मर है कि आदरणीया
पण्डिताजी की स्वास्थ्य-चर्या और सेवा,
स्वयं की भी कई शारीरिक कठिनाइयों
का दमन, और उपचार आर्थिक
जटिलताएं और इन सब अस्वाभाविक
असामान्य परिस्थितियों में जनज्ञान
का नियमित उत्तम प्रकाशन??
दिव्या बहुत धन्य हो सचमुच
धन्य हो। अनेक लोगों के लिए
प्रेरणा हो।
6-8-2016 — जोगिन्द्र
गुडगांव

आश्चर्य महान आश्चर्य

अगस्त का अंक अनेक अर्थ में बहुत सुन्दर, सुरुचिपूर्ण और महत्वपूर्ण विषय-वस्तु से पूरित रहा। हार्दिक धन्यवाद, आत्मिक शुभकामनाएं दिव्या आर्थिकों! आश्चर्य तो यह है कि आदरणीया पण्डिता राकेशरानी जी की स्वास्थ्यचर्या और सेवा, स्वयं की भी कई शारीरिक कठिनाइयों का ध्यान और उपचार, आर्थिक जटिलताएं और इन सब अस्वाभाविक असामान्य परिस्थितियों में 'जनज्ञान' का नियमित उत्तम प्रकाशन??

दिव्या! तुम धन्य हो सचमुच धन्य हो। अनेक लोगों के लिए प्रेरणा हो।

—डॉ. ज्ञानचन्द्र, गुडगांव

रक्षासूत्र हेतु आभार

आदरणीया बहिन दिव्या जी,
सादर नमस्ते!

रक्षाबंधन पर आपका पत्र मिला तो मन का उत्साह दूना हो गया, मैं वेदों के प्रचार-प्रसार एवं आर्यजनों को आपकी (हमारी भी) संस्थान द्वारा उपलब्ध कराई जा रही राष्ट्रीय लेखन सामग्री हेतु, तुच्छ दान

धन राशि रु 2100/- भेज रहा हूं। उम्मीद है कि आप स्वीकार कर अनुग्रहीत करेंगे।

—नवकान्त शर्मा, ग्वालियर (म.प्र.)

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु

परम आदरणीया बहिन दिव्या जी, सादर नमस्ते!

सबसे पहले मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि पूज्या माताजी (पण्डिता राकेशरानी जी) को शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ मिले, व शीघ्र ही अस्पताल से छुट्टी होकर घर लौटें एवं पुनः स्वामी दयानन्द संस्थान का कार्य सम्भालने लगें, यह कार्य विगत कई वर्षों से निर्बाध सुचारू व सफलतम तरीके से उनके द्वारा वैदिक प्रचार-प्रसार "जनज्ञान" के माध्यम से बहुत अच्छी प्रकार से जन-जन तक पहुंचा रही हैं।

यह वेद और ईश्वर का कार्य कभी रुकने न पाए, हम सभी पाठकगण आपसे अर्थात् बहिन दिव्या जी से बड़ी आशाएं लेकर निश्चित है कि यह राष्ट्रीय स्वाभिमान जागरण का कार्य, कभी आप रुकने नहीं देंगीं। हम सभी पाठकों की ओर से आपको सदैव सहयोग होता रहेगा, तथा निरन्तर एक वर्ष से आप इस कार्य को भली भांति संचालित कर भी रही हो, तथा पूज्या माता जी की सेवा, देखभाल, आर्थिक व्यवस्था, आदि कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी माताजी के पद चिन्हों पर धैर्य व साहस के साथ आगे बढ़ रही हो! और इसी प्रकार स्वामी दयानन्द संस्थान का कार्य सदैव चलता रहे, बढ़ता रहे ऐसी मैं ईश्वर से कामना करता हूं। ईश्वर आपको साहस व शक्ति प्रदान करें। धन्यवाद!

पुनः ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आदरणीया माता जी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिले। जनज्ञान पत्रिका का मैं विगत कई वर्षों से आजीवन सदस्य हूं। हर अंक पढ़ने योग्य होता है समयानुसार राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक लेख अन्य विद्वानों के माध्यम से छपते ही रहते हैं हर अंक "जनज्ञान" वास्तव में मनुष्य को अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाता है।

परम आदरणीय बहिन जी आपके द्वारा रक्षासूत्र मेरे नाम से आपने भेजा है, उसके लिए मैं हृदय आपका धन्यवाद करता हूं, और बड़े ही गर्व से कल सुबह जन्माष्टमी के अवसर पर यज्ञ पर से उठने के साथ

आपका प्रेषित रक्षासूत्र अपनी कलाई पर बांधूंगा। मेरे समस्त परिवार की ओर से आपको ढेर सारी शुभकामनाएं तथा मेरी ओर से 100 रुपए की छोटी सी राशि भेज रहा हूँ, कृपया स्वीकार करें।

—डालुराम, (म.प्र.)

ईश्वर का आशीर्वाद है आपके साथ

दिव्या जी आर्य,
सादर नमस्ते!

ईश्वर का आशीर्वाद आपके साथ है, दीदी पण्डिता जी के कार्य को अपने हाथों सम्भाल रही हैं। कोई कमी खटकती नहीं है। **आखिर राकेश रानी की दिव्या रानी जो ठहरी।** 'जनज्ञान' का दीपावली विशेषांक अक्टूबर-नवम्बर 2015 दो अगस्त 2016 को मिला। पन्ना पलटते ही अस्वस्थ दीदी का चित्र देखकर मन बड़ा दुखी हुआ। अतिशीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं, साप्ताहिक सत्संग में भी प्रार्थना कर रहे हैं, उनसे मिलने की बड़ी लालसा है। **दूरभाष पर एक दो बार बात हुई और आशीर्वाद भी मिला। दीदी जी भी मुझे से मिलना चाहती थी, उनके दिल से निकली बात आशीर्वाद स्वरूप एक पत्र में हैं।** पत्र संलग्न हैं 10.11.2011 का!.....

तीन अगस्त 2016 के जून और जुलाई के अंक जनज्ञान के मिले। दीदी का स्वास्थ्य उतार-चढ़ाव में है यह जानकारी मिली। **डा. ज्ञानचन्द्र भाई ने फोन पर कहा था दीदी जी बीमार है। इतनी बीमार है 'जनज्ञान' द्वारा पता चला।** चाहते हुए भी कोई काम नहीं कर सकते। न हवा में उड़कर आ सकता हूँ न पानी में तैरकर! कारण वो ईश्वर के अधीन हैं। मेरे लिए मेरे जीवन की यात्रा में जबरदस्त हानि है जिसकी पूर्ति असम्भव है। **शायद अगले जन्मों में किसी रूप से दीदी की गोद मिल जाए।** उनका आशीर्वाद तो आरम्भ से ही मिलता आ रहा है और रुठने वाला नहीं है। आशीर्वाद के स्वर आकाश में गूँजते रहते हैं। कभी तो पकड़ में आ जाए और हम अपने कानों में उसका श्रवण कर लें।

श्रावण मास चल रहा है। यही आशा करते हैं। आपके मुस्कुराते चेहरे पर उदासी न आए और मां की सेवा में लगी रहें। ईश्वर सफलता देंगे।

मुझे इतनी आशा है कभी-न-कभी, कहीं न कहीं, किसी भेष में अवश्य मुझे मिल जाएंगी। अगले किसी भी जन्म में, ऐसी आशा है! आपको और परिवार को तथा 'जनज्ञान' परिवार को सादर शुभकामनाएं। ईश्वर के

दरबार में आशीर्वाद की कमी नहीं है। हिम्मत कभी न हारें, प्रभु को पुकारें, वही हमारा बेड़ा पार लगाएगा।

—सोनालाल नेमधारी (मोरिशस)

रक्षासूत्र प्राप्त

आदरणीया बहिन जी,
नमस्ते!

आपके द्वारा भेजा गया रक्षासूत्र प्राप्त हुआ। इसके लिए हम परिवार सहित आपके आभारी हैं। ईश्वर से आप के स्वास्थ्य की कामना सदा करते हैं। मैं आपको चैक संख्या 466857 दिनांक 17.8.2016 राशि 2100/- (दो हजार एक सौ रुपए) भेज रहा हूँ। कृपया मेरी ओर से यह छोटी सी भेंट स्वीकार करके मुझे कृतार्थ करें।

—जयकिशन, कोट पंचकूला

(पृष्ठ-6 का शेष)

मंत्र का अर्थ किसी से छिपा नहीं है। उसे कहने और समझने में भेद हो सकता है। असली सवाल दूसरा है। असत् से सत् की यात्रा का प्रारम्भ कैसे हो? यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि असत् क्या है? असत् अज्ञान है। साफ है कि राहुल गांधी को शिष्य भाव से प्रार्थना करनी चाहिए कि उनका अज्ञान दूर हो।

अज्ञानता अपने बारे में भी होती है और दूसरे के बारे में भी। उसका सम्बन्ध इतिहास से भी होता है। **भाजपा के केंद्रीय कार्यालय के भूमि पूजन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो तीर चला दिया, मानना पड़ेगा कि वह ठीक निशाने पर जा लगा है।** जो काम महात्मा गांधी नेहरू से नहीं करा सके, उसे नरेन्द्र मोदी ने एक वाक्-वाण ने अंजाम दे दिया है। उससे राहुल गांधी खुद को सवालियों के अथाह सागर के सामने खड़े पा रहे हैं।

हर महापुरुष ने उपनिषद के बोध से हमें अवगत कराया है। नरेन्द्र मोदी ने भी राहुल गांधी को वह बोध दे दिया है। अब वे अपने जीवन में उसे कैसे उतारे, यह समस्या होगी। इस पर उन्हें मेरी सलाह है कि वे वैदिक चिंतन के चक्कर में न पड़ें। उसमें पड़ेंगे, भारी भूल करेंगे।

शुरूआत के लिए ईसाई परंपरा अपनानी चाहिए। पहले पश्चाताप करें। फिर अपने को जानने का प्रयास करें। वहां से असत् का मोड़ आएगा और सत् की यात्रा शुरू हो सकती है। तभी उन्हें जीवन का अपना हेतु समझ में आ सकेगा।

—(यथावत 1 सितम्बर, 2016 से साभार) ●●●

ब्रह्मयज्ञ के विष में महर्षि मनु लिखते हैं—
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः।

अर्थात् विद्या पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ कहलाता है।

मनु का अनुसरण करते हुए महर्षि दयानन्द ने
“पञ्चमहायज्ञ-विधि” में सन्ध्या का वर्णन किया है।

ब्रह्मयज्ञ का दूसरा अङ्ग सन्ध्योपासना है।
अर्थात् रात और दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्याओं में
सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना
करनी चाहिए।

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि। (ऋग्वेद १।१।७)

अर्थ—हे (अग्नि) ईश्वर (दिवे दिवे)(दोषावस्तः)
सायं प्रातः (धिया) भक्ति से (नमः) नमस्कार (भरन्तः)
करते हुए (वयम्) हम (उप त्वा) आपके समीप,
आपकी शरण में (आ इमसि) आते हैं। वेदों का
अनुकरण करते हुए।

योगेश्वर श्री कृष्ण ईश्वर भक्त थे

कृष्ण ने ब्रह्म का ध्यान किया—

ततः शयन माविश्य प्रसुप्तो मधुसूदनः।
याममात्रार्थं शोषायां यामिन्यां प्रत्यबुध्यात्॥
स ध्यान पथमाविश्य सर्वज्ञानानि माधवः।
अवलोक्य ततः पश्चाद्ध्यौ ब्रह्मसनातनम्॥

(महा. शान्ति प. राजध. अ. ५३।१-२)

कृष्ण जी बिस्तरे पर सो गए, आधा प्रहर रात्रि
रहने पर जागे। पुनः सब ज्ञान और ध्यान के मार्ग-साधन
खोले, आसन जमाकर सनातन ब्रह्म का ध्यान किया।

कृष्ण ने ईश्वर की स्तुति की—

युगे युगे तु कृष्णेन तोषितो वै महेश्वर।
भक्त्या परमया चैव प्रीतश्चैव महात्मनः॥

(महा. अनुशासन प. अ. १४।१३)

कृष्ण के मुख से ईश्वर गुण वर्णन—

तस्याहमसुरघ्नस्य काश्चिद् भगवतो गुणान्।
भवतां कीर्तयिष्यामि व्रतेशाय यथा तथम्॥२४॥
यदवाप्तं च मे पूर्वं साम्बहेतोः सुदुष्करम्।
यथावद् भगवान् दृष्टो मया पूर्वं समाधिना॥२७॥

(महा. अनुशासन प. अ. १४)

कृष्ण जी कहते हैं कि मैं उस नाशक व्रतेश
भगवान् के गुण आप को सुनाता हूँ जिस ब्रह्म को मैंने
प्राप्त किया है और भगवान् को समाधि से देखा है।

कृष्ण द्वारा ईश्वर की स्तुति, गुण वर्णन किया
जाना एवं समाधि से साक्षात् किया जाना, इससे
विदित होता है कि कृष्ण जी ईश्वर नहीं थे, ईश्वर
का अवतार नहीं थे, यह सिद्ध होता है।

उपमन्यु से विधि सीखकर कृष्ण ने ईश्वर की
उपासना की—

एवं दृष्टो मया कृष्ण देवदेवः समाधिना।

अपि तावमत्राप्येवं दद्यात्स भगवाञ्छिवः॥

दर्शनं मुनिशार्दूल प्रसादं चापि शङ्करः॥३७०॥

षष्ठे मासि महादेवं द्रक्ष्यसे पुरुषोत्तम॥३७२॥

(महा., अनुशासन प. अ. १४)

कृष्ण जी से उपमन्यु ने कहा—‘हे कृष्ण! इस
प्रकार समाधि द्वारा परमदेव परमात्मा का साक्षात् किया।’
यह सुन कृष्ण जी बोले कि हे मुनि! मुझे भी वह शिव
शङ्कर भगवान् दर्शन और प्रसाद प्रदान करें। इस पर
उपमन्यु ने कहा—हे कृष्ण! छठे मास में महादेव के दर्शन
करोगे।

इस प्रकार उपमन्यु से ईश्वर की उपासना विधि
सीखकर परमेश्वर के दर्शन की कृष्णजी द्वारा इच्छा
करने और दर्शन करने की चर्चा से कृष्ण ईश्वर का
अवतार नहीं थे।

**कृष्ण ने उपमन्यु से किस प्रकार परमेश्वर
दर्शन की विधि सीखी—**

दिनेऽष्टमे तु विप्रेण दीक्षितोऽहं यथाविधि।
दण्डी मुण्डी कुशी चीरी घृतातणे मेखलीकृतः॥
मासमेकं फलहारो द्वितीये सलिलाशनः।
तृतीयं च चतुर्थं च पञ्चमं चानिलाशनः।
एकपादेन च तिष्ठश्च च उर्ध्वबाहुरतन्द्रि॥
तजः सूर्य सहस्रस्य अपश्यं दिवि भारत।
ईक्षितं च महादेवं न मे शक्तिरभूत तदा॥

(महा. अनुशासन प. १४।३८०-३२, ४०)

हे युधिष्ठिर! उपमन्यु ने आठवें दिन यथाविधि
दीक्षित किया।

मुझे दण्डी, मुण्डी कुशासनवाला, चीरवाला,
चौलवाला, घृत से चिकना मेखलावाला, पुनः एक
मास फलाहारी, दूसरे मास जलाहारी, तृतीय, चतुर्थ,
पांचवें मास पवनहारी बना एक पैर से खड़े हुए, ऊपर
भुजाएं किए हुए, आलस्य रहित हो, सहस्र सूर्यों के
तेजवाले महादेव को देखने में मेरी शक्ति उस समय न
हो सकी।

इस प्रकार कृष्ण द्वारा तपस्या और परमेश्वर दर्शन होने से कृष्ण जी स्वयं ईश्वर या ईश्वर का अवतार नहीं थे।

श्री कृष्ण ईश्वरोपासक थे

श्री कृष्ण जी के जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक रहा है और ईश्वरोपासना उनके जीवन का अभिन्न अंग थी। वैशम्पायन जी एक स्थान पर जनमेजय जी से कहते हैं कि भगवान् श्री कृष्ण आधा पहर रात बीतने पर शैया त्यागकर उठ बैठते थे और ध्यान-मार्ग में स्थित हो सत्य सनातन परमेश्वर का चिन्तन, स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना किया करते थे।

परमात्मा के ध्यान के बाद दैनिक शौचादि कर्म से निवृत्त होकर स्नान करते थे, और फिर जपने योग्य गायत्री मन्त्र का जप करके अग्निहोत्र किया करते थे। तत्पश्चात् चारों वेदों के विद्वानों को बुलाकर उनसे वेदमन्त्रों का पाठ एवं उपदेश करवाकर उन्हें गोदान किया करते थे। वे इतने अधिक आध्यात्मिक तथा प्रभु-भक्त थे कि यात्रा के समय में भी वे सन्ध्योपासना आदि करना नहीं भूलते थे। इसके उनके जीवन में कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक बार जब वे हस्तिनापुर जा रहे थे तो उन्होंने ऋषियों के आश्रम में विश्राम किया। अगले दिन प्रातःकाल का वर्णन इस प्रकार आता है—

कृत्वा पौर्वाहिकं कृत्यं स्नानः शुचिरलंकृतः

उपस्तये विवस्वतं पावकं च जनार्दनः।

अग्निं प्रदक्षिणं कृत्वा पश्यन् कल्याणमग्रतः॥

(महा. उद्यो. अ. ८३)

अर्थात् श्री कृष्ण जी ने दैनिक स्नानादि कार्यों को करके प्रातः कालीन सन्ध्यावन्दन तथा दैनिक अग्निहोत्र किया। उसके बाद आश्रम के ऋषियों से कल्याणप्रद उपदेश सुना।

अवतीर्णं रथात् तूर्णं, कृत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश च॥

(महा. उद्यो. ८५-२१)

श्री कृष्ण जिस समय वृकस्थल पर पहुंचे, तब सूर्य अस्त होने वाला था। उस समय उन्होंने रथ को रुकवाया और 'रथ से उतरकर शौच-स्नानादि करके सन्ध्या करने के लिए बैठ गए।' इसके अतिरिक्त जब वे विदुर जी के यहां ठहरे तो वहां भी प्रातःकाल ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर सन्ध्या तथा अग्निहोत्र किया। एक बार दुर्योधनादि जब उनसे मिलने आए, तो वे सन्ध्या ही कर रहे थे। वे ऐसे

आस्तिक थे कि युद्ध में भी वे सन्ध्या का त्याग नहीं करते थे—

ततः सन्ध्यामुपास्यैव वीरौ वीरावसादने।

कथयन्तौ रणे वृत्ते प्रयातौ रथमास्थितौ॥

(महा. द्रो. अ. ७२)

यहां उस समय का वर्णन है जब अर्जुन के साथ वे संसप्तकों से युद्ध कर रहे थे। उस समय भी उन दोनों ने परमात्मा की उपासना की।

ईश्वर के विषय में श्री कृष्ण जी कहते हैं—

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।

यो लोकत्रयमाविश्य विभर्त्यव्यय ईश्वरः॥

(गीता १५।१७)

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

(गीता १८।६१)

प्रकृति और जीवात्मा से भिन्न एक अन्य उत्तम पुरुष है जिसे ईश्वर कहा जाता है। वह अव्यय है, ईश्वर है। वह तीनों लोकों में प्रविष्ट होकर उनका भरण-पोषण करता है। हे अर्जुन! वह ईश्वर सब प्राणियों के हृदय-प्रदेश में बैठा हुआ है और वह उनको इस प्रकार घुमा रहा है, मानों वे किसी यन्त्र पर चढ़े हुए हैं।

—(योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र गौरव से साभार)

●●●

वेद प्रचार-रक्षाबन्धन एवं गौशाला में प्राप्त सहयोग राशि

हीरो मोटो कॉर्प. लि.—दिल्ली	51000 रुपए
श्री मांगीलाल चौधरी-पाली	2500 रुपए
(पौत्र प्रभांश चौधरी की स्मृति में गौशाला हेतु)	
श्री जयकिशन जी, पंचकूला	2100 रुपए
श्री नवकान्त शर्मा—ग्वालियर	2100 रुपए
श्री हरशराव गोयल—मेरठ	2100 रुपए
श्री प्रेम कान्ति अरोड़ा—चण्डीगढ़	1100 रुपए
श्री केवलकृष्ण, आर्यसमाज दीवान हाल	1100 रुपए
श्री मुरारी जी लोढा—महरानीबाग दिल्ली	1000 रुपए
श्री चन्द्रभान गुप्ता—दिल्ली	501 रुपए
श्री बाबूराम आर्य, आर्यसमाज—सीताराम बजार	500 रुपए
श्री डालू राम जी—मध्य प्रदेश	100 रुपए
श्री केवलकृष्ण आर्यसमाज—दीवान हाल	100 रुपए

—सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद



मेरी माता का जय गौरव



—पण्डित भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः)

मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।
मेरी सपनों की आशा है, युग फिर से शान्ति-सुधा पाए।
मेरी जननी वह संस्कृति है, जिसकी छाया में मानवता।
पलती रहती, बढ़ती रही, चिरता, रुचिता, मधु-प्राण लता।
जिसके चरणों पर झुक जाते, युग-मूर्ति स्वयं, युग मदमाते।
जिसकी आशा में बढ़ते हैं, सारे ही मानव इठलाते॥

वे पा न सके पर पार, इसी से कहता हूँ, यदि पा जाएँ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए॥
यह दानवता, यह भोगवाद, यह अर्थ, रूप की छलनाएँ।
यह घोर युद्ध के घन गर्जन, फैली ये क्रूर कुटिलताएँ॥
यह सर्वनाश की प्यास मधुर है मानव जिसको समझ रहा।
पर हाय अभागा जिस पीछे, है प्राणों से भी उलझ रहा॥

क्या रहने पाएँ किसी छोर यदि राह अभी भी पा जाएँ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए॥
मैं श्वास-श्वास में जीवन की, झंकृत वीणा को गा दूँगा।
जो रूठ चुके हैं भाव उन्हें संसृति में फिर से ला दूँगा॥
मैं कह दूँगा अभिशापों से, उस पार नहीं इस पार चलो।
मैं कह दूँगा वरदानों से, उस पार नहीं इस पार रहो॥

जो प्राणों लुटाए जगती ने, उनको पाकर वह मुस्काए।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।
फिर करवट ले, जागें जीवन की फुलझड़ियाँ।
फिर टूक-टूक हो बिखर जाएँ, ये क्रूर कुटिलता की लड़ियाँ॥
यह महानाश की आग बुझे, फिर शान्तिसुधायुत बरसाए।
यह सर्वनाश का राग बन्द हो, और हृदय-जग मुस्काए॥

यह नहीं कठिन, पर सब मिलकर, यदि शाश्वत गीत बजा पाएँ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए॥
मैं आज चला यह ध्येय लिए, तुम सुनो! सजग हो जग वालो।
यह लक्ष्य तुम्हारे सम्मुख है, तुम सोचो, समझो कुछ पा लो।
जो भी कण्टक बनकर आए, उसको ना जीता रहने दूँ।
जो मानवता का शत्रु कहो, उसकी क्या सीमा रहने दूँ।

पाखण्ड पाप औ' भेद-भाव, सब दूर करो, जो ज्वालाएँ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।
मैं आज अकेला चलता हूँ, जो बन सकता साथी आए।
है कौन विश्व में आज कहो, जो मानव दुःख समझे-गाए॥
इस गायन में है छिपा हुआ, स्वर रोदन का जगती-भर के।
उससे हिल जाती है करुणा, अब हिलें दुर्ग आडम्बर के॥

युग-युग का दारुण चीत्कार, जो धू-धू कर जलता जाए।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।

(5 अगस्त, 1952 “आर्य” साप्ताहिक से...)

॥ ओ३म् ॥

॥ जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं॥

“परमात्मा” की
दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद

सामवेद

यजुर्वेद

अथर्ववेद



चारों वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित २३X३६ सें. मी. साइज में
कुल पृष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दे। वजन प्रायः ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।)

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य - ४०००/- रुपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान!

कम से कम दस और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

‘जनज्ञान मासिक’ वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक ‘अभियान’ का सशक्त स्वर है।.....

- ★ यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का, सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- ★ यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का, तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- ★ ‘कृण्वन्तो विश्वमार्यम्’ के उद्घोष को गुँजाने का, हिन्दुत्व के विश्वबन्धुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- ★ यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाएं, अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन दें।
- ★ यही है परिस्थिति का आह्वान। घर-घर पहुँचे जनज्ञान।

सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

पांच वर्ष-900/-रु०, और आजीवन 3100/-रु० हैं।

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर “जनज्ञान मासिक” वेद मन्दिर, केशव नगर, दिल्ली-36 के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशि सीधे यूनियन बैंक करोलबाग नई दिल्ली-5 के खाता नं. 307902010056883 IFSC:UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

बृहद् विमान शास्त्र-विमान यंत्रों का संक्षिप्त विवरण

—कृपाल सिंह वर्मा

‘बृहद् विमान शास्त्र’ के पेज 22-23 पर विमान से अंगों का वर्णन है। इसमें ऋषि भारद्वाज का सूत्र है— अंगान्येक त्रिंशत्। अ.1 सू.2॥

विमान के अंग 31 होते हैं। इनका विस्तृत वर्णन ‘छायापुरुष’ नामक ग्रन्थ में है जो अब उपलब्ध नहीं है।

1. **विश्व क्रिया दर्पण यन्त्र** : इस प्रकार यन्त्र के द्वारा चालक अपने साथ सभी गतिविधियों को देख सकता है। जैसा यति बोधानन्द ने कहा है—

“प्रपन्चे प्राणिभि सर्वे यत्कर्मकृतः भवेत्”

तत्साक्षात् वीक्षणार्थं यद् यन्त्राणां स्थापितो भवेत्॥

शत्रु ने संहार के लिए कौन से यन्त्र पृथ्वी पर स्थापित किए हैं, उनको साक्षात् देखने के लिए विश्व क्रियादर्पण यन्त्र होता है।

2. **शक्ति आकर्षण दर्पण यन्त्र** : आकाश में स्थित जो विनाशकारी तीन शक्तियां हैं, उनको अपनी शक्ति से खींचकर नष्ट करता है। वात, सूर्य, किरण तथा अग्नि इन तीनों के संयोग से 122 प्रकार की विनाशकारी शक्तियां होती हैं।

3. **परिवेष क्रिया यन्त्र** :

विधायधीनतां सूर्यकिरणानां यथाविधि।

विमानकर्षणं रेखा मार्ग अतिक्रमणं बिना॥83॥

परिवेष क्रिया यन्त्र किरणों को अपने अधीन करके इनकी शक्ति से विमान का संचार करता है।

4. **अंग उपसंहार यन्त्र** : संचार काल में विमान अंगों के ऊपर उष्मा संयोग से भस्म होने के डर से अंग को निष्क्रिय करना, अंग उपसंहार यन्त्र का कार्य है।

5. **विस्तृतास्य क्रिया यन्त्र** : विमान अंगों को विस्तृत किया जाता है। भस्त्रिका नाल से विस्तृत होने से उनके मुख से वायु का संचार होता है।

6. **वैरुप्य दर्पण यन्त्र** : अपने विमान को रोकने को शत्रु विमान आ गए हों तो वैरुप्य दर्पण अपनी शक्ति से शत्रु विमान में स्थित मनुष्यों की स्मृति को नष्ट कर देता है।

7. **कुण्डिणी दर्पण यन्त्र** : किरण ज्योति के संसर्ग से सबकी बुद्धियों को विपर्यास हो जाता है। विद्युत तरंगों के मेल द्वारा विनाशकारी शक्तियों का शत्रु पर प्रहार करना।

8. **पिन्जुल दर्पण यन्त्र** : सूर्य किरणों के आपसी

संसर्ग से पिन्जुला शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जो नेत्रों की ज्योति को नष्ट कर करती है। इस यन्त्र द्वारा आँखों की रक्षा की जाती है।

9. **पंचवात स्कन्ध नाल** : पांच प्रकार की विनाशकारी शक्तियों से विमान की रक्षा करती है।

10. **गुहागर्भ आदर्श यन्त्र** : पृथ्वी के अन्दर गुफा आदि में छुपाए यन्त्रों का ज्ञान हो जाता है।

11. **तमो यन्त्र** : इस यन्त्र से दिन में भी कुछ दूर तक कुछ काल के लिए अंधेरा हो जाता है।

12. **पंचनाल यन्त्र** : पंचावत स्कन्धनाल यन्त्र विमान के पश्चिम केन्द्र में लगाया जाता है। यह वात शक्ति द्वारा विमान का संचालन करती है।

13. **रौद्री दर्पण यन्त्र** : रौद्री सूर्य किरणों के संयोग से मारिका नामक शक्ति उत्पन्न होती है। उस शक्ति के दर्शन मात्र से शत्रु विमान पिघल जाता है। अर्थात् “दर्शानादेव सर्वेषां द्रावणं येन जायते॥91॥”

14. **वात स्कन्ध नाल** : जब चतुर्थ कक्षा वाले मण्डल में विमान संचार करता है तब वायु वेग के कारण विमान की गति वक्र हो जाती है, उस वक्र गति के निवारण के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है—

“तदा वात यान गतिवगाद वायोः विशेषतः।

विमानस्य भवेत् वक्र गति तस्मात्! परस्परम्॥98॥”

15. **शब्द केन्द्र मुख यन्त्र** : अतितीक्ष्ण शब्दों से बहरापन हो जाता है। उसके निवारण के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है।

16. **शक्ति यन्त्र** : यह यन्त्र विमान को शक्ति प्रदान करता है।

17. **द्वादश विद्युत यन्त्र** : आकाश के 22वें केन्द्रमुख स्थान में जब विमान संचार करता है तब अजगरा नाम की शक्ति विमान का स्तम्भन करती है। इससे निवारण के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है।

18. **प्राण कुण्डलि यन्त्र** : धूम, विद्युत तथा वात शक्ति के संचालन के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है।

“धूम विद्युत वात मार्ग सन्धि यत् व्योम यानके।
तत् प्राण कुण्डली स्थानं मित्याहु शास्त्रं वित्तमा॥84॥”

19. **शक्ति उद्गम यन्त्र** : वायु-मण्डल के 137वें केन्द्र रेखा मार्ग में रूई जैसी वाष्प के कारण अतिशीत, अतिवेग से वायुयान की शक्ति का हरण कर

लेती है। अतिशीत के कारण वायुयान का इंजन बन्द हो जाता है। इस समस्या के निवारण के लिए शक्ति उद्गम यन्त्र लगाया जाता है।

20. **वक्र प्रसारण यन्त्र** : विमान मार्ग में शत्रु द्वारा फेंके गए यन्त्र से बचने के लिए विमान को तिरछा चलाने के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है।

21. **शक्ति पन्जर यन्त्र** : विद्युत शक्ति को विमान के प्रत्येक यन्त्र तक पहुंचाने के लिए तारों का जाल बिछाया जाता है। In modern Science it is called **Electric Circuit**.

22. **शिरः की यन्त्र** : मेघ विद्युत के निवारण के लिए लगाया जाता है।

23. **शब्द आकर्षण यन्त्र** : दूरस्थ वार्ता को सुनने के लिए विमान के पश्चिम भाग में लगाया जाता है।

24. **रूप आकर्षण यन्त्र** : दूरस्थ वस्तु को देखने के लिए।

25. **दिशाम्पति यन्त्र** : इस यन्त्र से द्वार पर विमान की दिशा का ज्ञान होता है।

26. **पट प्रसारण यन्त्र** : दिशा बदलने के पटों को फैलाया जाता है जो विमान के पीछे खड़ा होता है।

27. **पट्टिका भ्रुक यन्त्र** : ग्रहों में संचार मार्गों में ग्रहों के परस्पर एक रेखा प्रवेश से ज्वाला मुख विष शक्ति के नाशार्थ यह यन्त्र लगाया जाता है।

28. **सूर्य शक्ति आकर्षण का पंजर** : Solar Energy के लिए विमान के ऊपर लगाया जाता है।

29. **धूम प्रसारण यन्त्र** : तीन मुखवाले, पांच गर्भ कोष वाले, वात चक्रों से युक्त, धूम करने वाले मार्ग से संयुक्त पांच द्रव Acid से युक्त धूम प्रसारण यन्त्र होता है।

30. **स्तम्भन यन्त्र** : विमान को आकाश में थामने का यन्त्र। वायु प्रवाहों के संघर्ष में विमान को अविचलित रखने के लिए यह यन्त्र लगाया जाता है।

31. **वैश्वानर नाल यन्त्र** : विमान की नाभि में लगाया जाता है। सम्पूर्ण विमान में ऊष्मा का नियन्त्रण करता है। अग्नि होतार्थ तथा पाकार्थ लगाया जाता है।

(253, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ)

● ● ●

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम दस घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नाम:.....

पूरा पता.....

पिनकोड मोबाईल

ई-मेल..... व्यवसाय

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो).....

एक प्रति-18 रुपए,

पांच वर्ष-900 रुपए, आजीवन-3100 रुपए, संरक्षक सदस्य-11000 रुपए

गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द दण्डी

—प्रस्तुति: दिव्या आर्य

पंचनद प्रान्त का जिला करतारपुर। समीपस्थ ग्राम गंगापुर में संवत् 1854 में पं. नारायणदत्त के कुलवंश के रूप में जन्मे बालक ब्रजलाल। 5 वर्ष की आयु में शीतला रोग का प्रबल प्रहार बालक का जीवन तो न ले सका किन्तु चक्षु-दृष्टि सदा के लिए ले गया। अभी ब्रजलाल 11 ही वर्ष के थे। एक और वज्रपात हुआ और वह था उनके कृपालु माता-पिता का निधन। नेत्रहीन बालक अनाथ भी हो गया। किन्तु भाग्य चक्र ने इतने पर ही बस न की।

अनुज नेत्रहीन अग्रज के लिए भी भार बन गया और फिर आरम्भ हुई उपेक्षा, तदुपरान्त उत्पीड़न। परिणामतः ब्रजलाल गंगापुर को त्याग कर सीधे गंगा की लोल लहरों के तट पर अवस्थित ऋषिकेश जा पहुँचा और फिर वहाँ उसने एक वर्ष तक गंगा जल में बैठ कर गायत्री जप करते हुए प्रचण्ड तपस्या की। एक दिन उसे प्रेरणा हुई। “आगे बढ़ो” और ब्रजलाल से विरजानन्द दण्डी बने वीरव्रती ने कनखल की राह ली। यहाँ स्वामी पूर्णानन्द से व्याकरण का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर आप तीर्थाटन को चल पड़े।

एक दिन सोरों में विरजानन्द के सुमधुर कण्ठ से प्रवाहित स्तोत्र की मधुर ध्वनि ने अलवर नरेश श्री विनय सिंह का मन मोह लिया। नरेश के प्रबल आग्रह से स्वामी जी अलवर चले गए और राजगुरु बन गए।

किन्तु प्रभु ने उनसे तो और भी महत्वपूर्ण कार्य लेना था। उन्हें तो एक ऐसा शिष्य तैयार करना था जो उनकी दिव्य-दृष्टि को अग-जग में जगमग कर सके!!.....फलतः एक दिन आप वहाँ से विदा लेकर पुनः सोरों आ गये। सोरों से भरतपुर और फिर वहाँ से मथुरा और अन्ततः मथुरा ही उनका निवास स्थान बन गया।

संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित और श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में उनकी कीर्ति-कौमुदी चतुर्दिक व्याप्त हो उठी। उनका निवास स्थान ही पाठशाला बन गया। तीव्र एवं अद्भुत स्मरण-शक्ति के धनी स्वामी विरजानन्द की विद्वता की धाक से काशी

की पण्डित-मण्डली भी प्रभावित थी।

एक दिन और भी क्रान्तिकारी घटना घटी जब स्वामी जी ने अपने पड़ोसी एक दक्षिणी पण्डित से पाणिनि ऋषि कृत मूल अष्टाध्यायी का पाठ सुना। सुनते ही वह उन्हें स्मरण हो गया तथा व्याकरण की इस आर्य पद्धति पर उनकी सुदृढ़ आस्था जम गयी और फिर वही पद्धति उनके द्वारा अपने शिष्यों को दी जाने वाली शिक्षा का आधार बन गयी।

दो महापुरुषों की भेंट—और फिर आर्य जाति के इतिहास की वह स्वर्णिम घड़ी भी आ गई जब 80 वर्षीय स्वामी विरजानन्द की सेवा में उपस्थित हुआ एक 30 वर्षीय गृह त्यागी वीतराग युवक। वह थे—देव दयानन्द!!...

योग्य गुरु को सुयोग्य शिष्य मिल गया। दयानन्द ने नितान्त श्रद्धा भावना सहित गुरु सेवा की और उनसे आर्ष ग्रन्थों का सत्य ज्ञान प्राप्त किया। और.....

अन्ततः शिक्षा दीक्षा पूर्ण कर गुरु दक्षिणा स्वरूप महर्षि दयानन्द ने स्वामी विरजानन्द जी द्वारा दिए गए इस आदेश के पालन का वचन दे दिया “आजन्म आर्ष ग्रन्थों का प्रचार और अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करते हुए सत्य वैदिक धर्म की स्थापनार्थ प्राणों की बाजी लगा कर भी सक्रिय रहूंगा।”.....

योग्य शिष्य ने गुरुदेव को दिए गए इस वचन को मनसा-वाचा-कर्मणा पूर्ण भी किया। स्वामी विरजानन्द दयानन्द की सत्य निष्ठा के सम्बन्ध में पूर्णतः आश्वस्त हो 82 वर्ष की आयु में सम्वत् 1925, आश्विन वदी त्रयोदश सोमवार को अपनी नश्वरकाया को त्याग कर अमरत्व प्राप्त कर गए। और.....

जब देव दयानन्द को यह दुखद समाचार मिला तो उनके श्रीमुख से सहसा ही निकल पड़ा—

“आज व्याकरण का सूर्यास्त हो गया।”

❖❖❖

शहीद भगतसिंह का पिता जी के नाम पत्र

(यज्ञोपवीत के समय की प्रतिज्ञा पूरी कर रहूँ) - प्रस्तुति: दिव्या आर्य

1923 में भगतसिंह, नेशनल कॉलेज, लाहौर के विद्यार्थी थे। जन-जागरण के लिए ड्रामा-क्लब में भी भाग लेते थे। क्रान्तिकारी अध्यापकों और साथियों से नाता जुड़ गया था। भारत को आज़ादी कैसे मिले, इस बारे में लम्बा-चौड़ा अध्ययन और बहसें जारी थीं।

घर में दादी जी ने अपने पोते की शादी की बात चलायी। उनके सामने अपना तर्क न चलते देख भगतसिंह ने पिता जी के नाम यह पत्र लिखा.....

और कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी के पास पहुंचकर 'प्रताप' में काम शुरू कर दिया। वहीं बी.के. दत्त, शिव वर्मा, विजयकुमार सिन्हा जैसे क्रान्तिकारी साथियों से मुलाकात हुई। उनका कानपुर पहुंचना क्रान्ति के रास्ते पर एक बड़ा कदम बना।

पूज्य पिता जी,
नमस्ते!

मेरी ज़िन्दगी मकसदे-आला यानी आज़ादी-ए-हिन्द के असूल के लिए वक्फ हो चुकी है। इसलिए मेरी ज़िन्दगी में आराम और दुनियावी खाहशात बायसे कशिश नहीं हैं।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था, तो बापू जी मेरे यज्ञोपवीत के वक्त एलान किया था कि मुझे खिदमते-वतन के लिए वक्फ दिया गया है। लिहाज़ा मैं उसक वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ।

उम्मीद है आप मुझे माफ़ फ़रमाएंगे।

आपका ताबेदार
भगतसिंह

—(भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज से साभार) ●●●

स्व. भगतसिंह की दृष्टि में आर्यसमाज

वास्तव में आर्यसमाज पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध एक राष्ट्रवादी पुनर्जागरण है। यह इस समाज के संस्थापक दयानन्द के आधिकारिक ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश में अपने अनुयायियों का आह्वान करता है कि वे वेदों की ओर लौटें और आर्यों के काल्पनिक स्वर्णिम अतीत में स्वर्णिम भविष्य की तलाश करें।

सत्यार्थ प्रकाश गैर-हिन्दू शासन के विरुद्ध दलीलें भी देता है, और कुछ वर्ष पहले, इस समाज के एक अग्रणी मुखपत्र ने तो दयानन्द को ही स्वराज के सिद्धान्त का असली प्रवर्तक होने का दावा भी किया।

लेकिन 1907 में जब कुछ शरारती लोगों ने आर्य समाज के विरुद्ध अफवाहें फैलाना शुरू किया, तब इस समाज ने अपने पुराने धर्म सिद्धान्त को दुहराते हुए इस

—(शहीदे आजम की जेल नोटबुक से साभार) ●●●

आशय का एक प्रस्ताव प्रकाशित करने की बुद्धिमता दिखाई कि इस संगठन का किसी भी किस्म के राजनीतिक निकाय या किसी भी किस्म के राजनीतिक आन्दोलन से कोई सम्बन्ध नहीं है। अब यदि एक निकाय के रूप में समाज द्वारा चरमपन्थी राजनीति से सम्बन्ध-विच्छेद के इस दावे को मान भी लिया जाए, तब भी कट्टर हिन्दुओं के लिए यह बात गौरतलब होनी ही चाहिए कि भले ही, आर्यसमाज में पंजाब की हिन्दू आबादी के 5 प्रतिशत से अधिक लोग शामिल नहीं हैं, फिर भी 1907 से लेकर आज तक हिन्दुओं की एक बड़ी आबादी जो राजद्रोह और दूसरे राजनीतिक अभियोगों के तहत दण्डित होती रही है, वह इस समाज की ही सदस्य रही है।

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें।

—सम्पादक

बलवन्त सिंह के छद्म नाम से लिखा गया भगतसिंह का यह लेख कलकत्ता से प्रकाशित साप्ताहिक 'मतवाला' (वर्ष: 2, अंक सं. 13-14) के दो अंकों में छपा था। इन अंकों की तारीखें क्रमशः 15 नवम्बर, 1924 एवं 22 नवम्बर, 1924 थीं।

“वसुधैव कुटुम्बकम्!” जिस कवि सम्राट की यह अमूल्य कल्पना है, जिस विश्वप्रेम के अनुभवी का यह हृदयोद्गार है, उसकी महत्ता का वर्णन करना मनुष्य-शक्ति से सर्वथा बाहर है।

“विश्वबन्धुता!” इसका अर्थ मैं तो समस्त संसार में समानता (World wide Equality in the true sense) के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता।

कैसा उच्च है यह विचार! सभी अपने हों! कोई भी पराया न हो। कैसा सुखमय होगा वह समय, जब संसार से परायापन सर्वथा नष्ट हो जाएगा; जिस दिन यह सिद्धान्त समस्त संसार में व्यावहारिक रूप से परिणत होगा, उस दिन संसार को उन्नति के शिखर पर कह सकेंगे। जिस दिन प्रत्येक मनुष्य इस भाव को हृदयंगम कर लेगा, उस दिन-संसार कैसा होगा? जरा कल्पना करो तो!.....

उस दिन इतनी शक्ति होगी कि ‘शान्ति शान्ति’ की पुकार भी शान्ति भंग न कर सकेगी। उस दिन भूख लगने पर रोटी के लिए किसी को भी चिल्ल-पों मचाने की आवश्यकता नहीं हुआ करेगी। व्यापार उस दिन उन्नति के शिखर पर होगा, परन्तु फ्रांस और जर्मनी में व्यापार के नाम पर घोर युद्ध न हुआ करेगा। उस दिन अमेरिका और जापान दोनों होंगे, परन्तु उनमें पूर्वी और पश्चिमीपन न होगा। काले-गोरे उस दिन भी होंगे परन्तु अमेरिकावासी वहाँ से काले निवासी (Red Indians) को जीते-जी जला न सकेंगे। शान्ति होगी परन्तु पीनपकोड की आवश्यकता न होगी!.....

अंग्रेज़ भी होंगे और भारतवासी भी, परन्तु उस समय उनमें गुलाम और शासक का भाव न होगा! उस दिन महात्मा टालस्टाय के Resist not the evil (बुराइयों का प्रतिकार मत करो) वाले सिद्धान्त की उच्च ध्वनि न लगाने पर भी संसार में बुराइयाँ नजर न आएंगी। उस समय होगी पूर्ण स्वतन्त्रता! कैसा होगा वह समय? जरा कल्पना करो!

वर्तमान दशा को देखकर कौन कह सकता है कि ऐसा समय भी आ सकता है, जिस समय किसी के भय से नहीं, परन्तु हृदय की प्रेरणा से ही मनुष्य पाप-कर्म नहीं करेंगे। यदि उस दिन भी हमें किसी कल्पित स्वर्ग की लिप्सा होगी तो हम कह देंगे कि स्वर्ग कोई वस्तु है ही नहीं! क्या वह समय आ जा सकता है!

यह है एक समस्या-एक बड़ी समस्या है। इसका उत्तर देना कोई सुगम कार्य नहीं है। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या लोग उस समय को लाना चाहता हैं?

वे लोग जो ‘विश्वबन्धुता’ (Universal brotherhood या Cosmopolitanism) का घोर नाद किया करते हैं; क्या वास्तव में उसे लाने के इच्छुक हैं? ‘हां’ कह देने से ही काम नहीं चलेगा। कांग्रेस का प्रस्ताव नहीं है। प्रश्न गम्भीरतापूर्वक विचार करने योग्य है। क्या लोग उसके लिए बलिदान देने को तैयार हैं?..... उस कल्पित भविष्य के लिए हमें घोर वर्तमान देना होगा। उस कल्पित शान्ति के लिए हमें अशान्ति फैलानी होगी। उस हवाई किले के लिए हमें सर्वस्व देना होगा। उस शान्तिपूर्ण राज्य की स्थापना के लिए हमें घोर अराजकता फैलानी होगी। उस अत्याचार रहित संचार को अपनी ओर खींचने के लिए अत्याचार करने होंगे। उस सुखमय जीवन के लिए-नहीं, नहीं, उसकी आशा-मात्र के लिए मर मिटना होगा। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं?

हमें प्रचार करना होगा समता-समानता का। अत्याचार करना होगा। उन पर जो उससे इन्कारी हों। अराजकता फैलानी होगी उन राज्य-साम्राज्यों के स्थान पर जो शक्तिमद से अन्धे होकर करोड़ों की पीड़ा का कारण हो रहे हैं। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं?....

हमें समस्त संसार को उस सिद्धान्त के स्वागत के लिए तैयार करना होगा। उस आशामयी खेती के लिए हमें खेतों में से सब कुछ उखाड़ फेंकना होगा। काटेदार झाड़ियों को उखाड़कर ज्वाला की शान्ति के लिए मटियामेट कर देना होगा। रोड़ा, कंकड़ पीस डालना होगा?

हमें घोर परिश्रम करना होगा। गिरे हुएओं का उत्थान करना होगा। ‘बस्ती’ वालों को उन्नति का मार्ग दिखाना होगा। मिथ्या शक्तिवादियों को घसीटकर अपने साथ खड़े होने को विवश करना होगा। अहंकारियों का अहंकार तोड़ उन्हें नम्रता प्रदान करनी होगी। निर्बलों को बल, पराधीनों को स्वाधीनता, अशिक्षितों को शिक्षा, निराशावादियों को आशा की आभा, भूखों को रोटी, बेघरों को घर, नास्तिकों को विश्वास, अन्धविश्वासियों को विचार-स्वतन्त्रता

देनी होगी। क्या लोग इतना काम करेंगे?? ऐ विश्वबन्धुता विश्वबन्धुता चिल्लाने वालों!.....क्या तुम उसके लिए तैयार हो?

यदि नहीं, तो आज से इस ढोंग को छोड़ दो। हमें उस विश्वप्रेम की देवी के चरणों पर तुम्हारा भी बलिदान देना होगा, क्योंकि तुम मिथ्यावादी हो। अगर तैयार हो तो आ जाओ कर्मक्षेत्र में अभी परीक्षा हो जाएगी। घर में बैठे हुए, कौनों में दुबके हुए कर्मक्षेत्र के भयंकर दृश्य की कल्पना-मात्र से कांपते हुए, सत्यप्रकाश से 'बाज' रहने के लिए इस महान सिद्धान्त की आड़ मत लो। यदि सचमुच उस कल्पित समय को लाने की चेष्टा है, तो आओ!....

पहला काम पतित भारत का उत्थान करना होगा। गुलामियों की जंजीरों को काटना होगा। अत्याचार का सर्वनाश करना होगा। पराधीनता को मिट्टी में मिला देना होगा क्योंकि यह अपनी कमजोरी के कारण उस मनुष्य जाति को, जिसकी सृष्टि परमपिता ने अपने ही अनुरूप की थी, न्यायपथ से भ्रष्ट करने का प्रलोभन हो रहा है।

यदि उपरोक्त कथन की सत्यता को मानते हुए भी तुम जेल के डर से या फांसी के डर से इस मार्ग में आने से झिझकते हो तो आज से इस ढोंग को छोड़ दो।

अगर इस भय से कि क्रान्ति के पीछे घोर अराजकता फैल जाएगी या घोर रक्तपात होगा, एकदम अशान्ति होगी-तुम इस मार्ग में नहीं आते तो भी तुम भीरु हो, कायर हो, बुज्जिल हो, इस आडम्बर को छोड़ दो।

अशान्ति फैलती है तो फैलने दो, परतन्त्रता भी तो न होगी। अराजकता फैलती है तो फैलने दो, पराधीनता का भी तो सर्वनाश हो जाएगा। आहा! उस कशमकश में कमजोर पिस जाएंगे। रोज-रोज का रोना बन्द हो जाएगा। निर्बल न रहेंगे, बलवानों में मैत्री होगी। बलिष्ठ लोगों में घनिष्ठता होगी। उनमें प्रेम होगा, संसार में विश्वप्रेम का प्रचार हो सकेगा।

हां! हां!! निर्बलों को एकबारगी पिस जाना होगा। वे समस्त संसार के अपराधी हैं। उन्होंने ही घोर अशान्ति फैला रखी है। सब बलवान बनें, नहीं तो उस चक्की में पिसकर मलीदा हो जाएंगे।

आए! कौन माता का लाल सच्चे हृदय से विश्वबन्धुता का इच्छुक है। कौन है समस्त संसार के लिए अपना सुख बलिदान करने वाला?

कोई गुलाम जाति इस उच्चतम सिद्धान्त का नाम तक लेने की अधिकारिणी नहीं है। एक गुलाम मनुष्य के मुख से निकलकर इसका महत्व ही जाता

रहता है। एक अपमानित मनुष्य, पद-दलित मनुष्य, पैरों तले रौंदे जाने वाला मनुष्य यदि कहे-मैं विश्वबन्धुता का अनुगामी हूं, Universal brotherhood का पक्षपाती हूं, इसलिए इन अत्याचारों का प्रतिकार नहीं करता-तो उसका कथन क्या मूल्य रख सकता है? कौन सुनेगा उसके इस कायरतापूर्ण वाक्य को?

हां-तुममे शक्ति हो, तुममे बल हो, चाहो तो बड़े-बड़ों को पैरों तले रौंद सको, एक इशारे से बड़े-बड़े अभिमानियों को मिट्टी में मिला सको, तख्तों-ताज वालों को खाक में सुला सको, उनको धूल में मिला सको, और फिर तुम यह वाक्य कहते हुए कि 'हम विश्वप्रेमी हैं' ऐसा न करो, तो तुम्हारी बात वज्रनदार होगी-फिर तुम्हारा एक-एक वाक्य प्रभावशाली होगा। फिर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भी महत्वपूर्ण हो जाएगा।....

आज तुम गुलाम हो, पराधीन हो, परतन्त्र हो, बन्दी हो, तुम्हारी यही बात आज ढोंग प्रतीत होती है, एक आडम्बर दीख पड़ता है। बकवास मालूम देती है। क्या तुम उसका प्रचार करना चाहते हो? अगर हां, तो उसका अनुसरण करना होगा, जो कहा था, "He who loveth Humanity loveth God- " "God is love and love is God"- जो राजद्रोह के अपराध में फांसी चढ़ा, उसकी तरह वीरतापूर्वक विश्वप्रेम का प्रचार करने को तैयार हो?

जिस दिन तुम सच्चे प्रचारक बनोगे इस अद्वितीय सिद्धान्त के, उस दिन तुम्हें मां के सच्चे सुपुत्र गुरु गोविन्द सिंह की तरह कर्मक्षेत्र में उतरना पड़ेगा। उस विश्वप्रेम के सच्चे अनुगामी-सच्चे पक्षपाती की तरह-सब सबूत हैं एक पिता के, कहने वाले उस महापुरुष की तरह, अपने चारों-आंखों के तारों, लख्ते-जिगरों को जाति के भेंट कर माता के पूछने पर सरलता से उत्तर देने वाले की तरह तुम्हें धैर्य रखना होगा। क्या तुम अपने प्रिय से प्रिय को-जिसकी स्मृति-मात्र से हृदय धड़कने लगता हो, जिसे तुम हर समय अपने हृदय में छिपाए रखने के इच्छुक हो-को अपनी आंखों के सामने बलिवेदी पर चढ़ता देख, अकथनीय कष्ट सहता देख धैर्य रख सकोगे? क्या उसके सामने ही तुम जीते-जी अग्नि-चिता पर प्रसन्नतापूर्वक चढ़ सकोगे; और हंसते हुए संसार की ओर करुणाभरी दृष्टि से देखते हुए विदा हो सकोगे?

यदि हां, तो आओ परीक्षा हो जाएगी, समय आ

गया है। यदि हृदय में कुछ भी झिझक है तो खुदा के वास्ते इस आडम्बर को छोड़ दो।

जब तक 'काला-गोरा', 'सभ्य-असभ्य', 'शासक-शासित', 'धनी-निर्धन', 'छूत-अछूत' आदि शब्दों का प्रयोग होता है तब तक कहां विश्वबन्धुता और विश्वप्रेम? यह उपदेश स्वतन्त्र जातियाँ कर सकती हैं। भारत जैसी गुलाम जाति इसका नाम नहीं ले सकती।

फिर उसका प्रचार कैसे होगा? तुम्हें शक्ति एकत्र करनी होगी। शक्ति एकत्र करने के लिए अपनी एकत्रित शक्ति खर्च कर देनी पड़ेगी। राणाप्रताप की तरह आयु पर्यन्त ठोकें खानी होंगी, तब कहीं उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकोगे।

देखते नहीं विश्वबन्धुता का सच्चा प्रचारक था मेजिनी जो बीस वर्ष स्वयं ही एक जगह बन्द रहता है। लेनिन था उसका पक्षपाती-कितना रुधिर उन्होंने बहा दिया था। आदर्शवादी ब्रूटस था विश्वप्रेमी-जिसने अपनी जन्मभूमि के लिए अपने परमप्रिय 'सीज़र' को अपने हाथों क़तल कर डाला था और उसके पीछे स्वयं भी आत्महत्या कर ली थी। सानन्द युद्धों में प्रवीण रहने वाला गैरीबाल्डी था, जिसे विश्वप्रेमी होने का श्रेय प्राप्त हो सकता है।

विश्वप्रेमी वह वीर है जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते-वही वीर सावरकर! विश्वप्रेम की तरंग में आकर घास पर चलते-चलते रुक जाते कि कोमल घास पैरों तले मसली जाएगी।

75 दिन अनशन करके स्वर्गधाम को सिधारने वाला वीर मैकस्वेनी इस मार्ग का पथिक होने का श्रेय प्राप्त कर सकता है जो कहता था—"It is the love of the country that inspires us and not the hate of the enemy and the desire for full satisfaction for the past".

विश्वप्रेम की देवी का उपासक था 'गीता रहस्य' का लेखक पूज्य लोकमान्य तिलक! और देखोगे? वह सूखा सुकड़ा-सा 'लंगोटबन्द' जो सज़ा का हुक्म सुनाए जाने पर स्वर्गीय हंसी के साथ कह सकता था-मुझे जो दण्ड दिया गया वह अत्यन्त हलका है और मेरे साथ जैसा विनम्र व्यवहार किया गया है उससे अधिक की आशा मैं नहीं कर सकता, जिसके मर्मस्पर्शी कथन का तुम्हारे पत्थर के हृदय पर कुछ प्रभाव नहीं होना-महात्मा है इस सिद्धान्त का पक्षपाती।

अरे! रावण और बाली को मार गिराने वाले रामचन्द्र ने अपने विश्वप्रेम का परिचय दिया था,

भीलनी के जूटे-कूटे बेरों का खाकर। चचेरे भाइयों में घोर युद्ध करवा देने वाले, संसार से अन्याय को सर्वथा उठा देने वाले कृष्ण ने परिचय दिया अपने विश्वप्रेम का-सुदामा के कच्चे चावलों को फांक जाने में।

तुम भी विश्वप्रेम का दम भरते हो! पहिले पैरों पर खड़ा होना सीखो। स्वतन्त्र जातियों में अभिमान के साथ सिर ऊंचा करके खड़े होने के योग्य बनो। जब तक तुम्हारे साथ कामागाटामारू जहाज़ कैसे दुर्व्यवहार होते रहेंगे, जब तक डैम काला मैन कहलाओगे, तब तक तुम्हारे देश में जलियाँवाले बाग़ जैसे भीषण हत्याकाण्ड होते रहेंगे, जब तक वीरांगनाओं का अपमान होगा और तुम्हारी ओर से कोई प्रतिकार न होगा; तब तक तुम्हारा यह ढोंग कुछ मानी नहीं रखता। कैसी शान्ति, कैसा सुख और कैसा विश्वप्रेम?

यदि वास्तव में चाहते हो कि संसारव्यापी सुख-शान्ति और विश्वप्रेम का प्रचार करो तो पहिले अपमानों का प्रतिकार करना सीखो। मां के बन्धन काटने के लिए कट मरो। बन्दी मां को स्वतन्त्र करने के लिए आजन्म कालेपानी में ठोकें खाने को तैयार हो जाओ। सिसकती मां को जीवित रखने के लिए मरने को तत्पर हो जाओ। तब हमारा देश स्वतन्त्र होगा। हम बलवान होंगे। हम छाती ठोक कर विश्वप्रेम का प्रचार कर सकेंगे। संसार को शान्ति-पथ पर चलने को बाध्य कर सकेंगे।.....

-(भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज से साभार) ●●●

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

अपने तथा अपने मित्र परिवारों

में पहुँचाएं। बढ़िया कागज पर

लागत मूल्य- 4000 रु.

श्रीमती भीका जी कामा

—डॉ. सहदेव वर्मा



भारत में ऐसी अनेक

वीर महिलाएँ

इसी युग में उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने अपना समस्त जीवन देश की स्वतन्त्रता के लिए अर्पित कर अपने पावन कर्तव्य का पालन करते हुए स्वर्गारोहण किया। ऐसी

बलिदानी बालाओं में भीका जी कामा का नाम सर्वोपरि है।

इनका जन्म पारसी-समाज के एक सम्पन्न परिवार में 24 सितम्बर, 1861 को मुम्बई में हुआ था। भीका जी कामा के पिता का नाम सोहराब जी पटेल तथा माता का नाम जीजाबाई था। इनके पिता का मुम्बई में हीरे-जवाहरात का व्यवसाय था। समाज में उनकी प्रतिष्ठा तो थी ही, व्यापार में भी ईमानदारी का सिक्का चलता था।

जिस समय भीका जी का जन्म हुआ उस समय समाज में लड़कियों की उच्च शिक्षा का प्रायः अभाव ही था, परन्तु सोहराब जी पटेल ने रुढ़ियों को तोड़कर भीका जी को उच्च शिक्षा दिलाई। भीका जी जैसे-तैसे बड़ी होती गईं वैसे-वैसे देश में होने वाली सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों में रुचि लेने लगीं।

भीका जी का विवाह अगस्त 1885 में मुम्बई के बैरिस्टर के. आर. रुस्तम जी कामा से सम्पन्न हुआ। सन् 1857 की क्रान्ति के दर्द भरे फसानों को सुनकर इनकी भावनाएँ क्रान्तिकारियों के प्रति संवेदनशील हो उठती थीं। वे किसी भी रूप में उनकी सहायता करने के लिए तैयार रहती थीं। परन्तु इनके पति अंग्रेजी शासन के समर्थक थे। इसलिए उन्हें भीका जी की ये बातें पसन्द नहीं थीं।

सन् 1896 में मुम्बई में भयानक महामारी 'प्लेग' की बीमारी फैल गई। भीका जी घर से निकलकर गरीबों तथा असहायों की सेवा और सहायता में जुट गईं। बाद में वे स्वयं भी इस रोग से ग्रस्त होकर इलाज करवाने से ठीक तो हो गईं, लेकिन उन्हें आराम करने और आगे के लिए पूर्ण चिकित्सा के लिए डॉक्टरों ने यूरोप जाने की सलाह दी। 1902 ई. में वें इसी सिलसिले में लन्दन चली गईं। वहाँ जाकर उनका परिचय दादाभाई

नौरोजी से हुआ, उन्होंने स्वस्थ होने पर भी भीकाजी कामा को वहीं रहकर सार्वजनिक रूप से कार्य करने की सलाह दी। आगे चलकर यह सलाह उनके जीवन में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

लन्दन में उनका सम्पर्क वीर सावरकर और श्याम जी कृष्ण वर्मा से हुआ। ध्यान रहे कि श्याम जी महर्षि दयानन्द के योग्य शिष्य थे। ऋषि ने ही उन्हें विदेश जाकर वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का परामर्श दिया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा अत्यन्त मेधावी तथा संस्कृत-अंग्रेजी के उद्भट विद्वान थे।

लन्दन जाकर श्याम जी ने एक विशाल भवन खरीदा, जिसका नाम 'इण्डिया हाउस' रखा। यही बाद में भारत-भवन नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस भवन का एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि भारत से लन्दन (इंग्लैण्ड) जाने वाले शिक्षार्थियों को वहाँ रहने के लिए स्थान मिल जाता था, परन्तु बाद में तो वहाँ प्रायः देशभक्त-क्रान्तिकारी ही ठहरने लगे। जिनमें वीर सावरकर, लाला हरदयाल, ए.आर. राणा, मदनलाल दींगरा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

लन्दन जाकर भीका जी कामा श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा अन्य भारतीय क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आईं। स्वतन्त्रता के प्रति तो भीका जी पहले ही समर्पित थीं, परन्तु वहाँ देशभक्ति का रंग और गाढ़ा हो गया। लन्दन में गुप्तचर विभाग इन भारतीय देश भक्तों को सन्देह की दृष्टि से देखते हुए इन लोगों को निरन्तर परेशान करता था, इस कारण अनेक क्रान्तिकारी इंग्लैण्ड छोड़कर फ्रांस चले गए। इसी बीच भीका, जी ने फ्रांस के अतिरिक्त जर्मनी, अमेरिका आदि कई देशों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के साथ-साथ वहाँ के महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तियों और नेताओं के साथ सम्पर्क भी साधा क्योंकि उनके मन में भारतीय स्वतन्त्रता की भावनाएँ हिलोरें ले रही थीं, अतः विदेश से सम्पर्क साधना आवश्यक समझती थीं। उनकी इन यात्राओं तथा भारत की स्वतन्त्रता के प्रति दौड़ धूप करते हुए इनके परिश्रम और साहस को देखकर, अमेरिका की यात्रा के समय न्यूयार्क जाने पर वहाँ के एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र ने इनका सम्मान

करते हुए (इन्हें) “जॉन ऑफ आर्क” की महत्वपूर्ण उपाधि से विभूषित किया था—उस समय की दृष्टि से परतन्त्र भारत की एक महिला को इस गौरवपूर्ण सम्मान से अलंकृत करना अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना ही कही जायेगी।

अनेक देशों का भ्रमण करने तथा पर्याप्त अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने फ्रांस की राजधानी ‘पेरिस’ को अपना स्थायी मुकाम बनाया। वहाँ रहते हुए ये भारत की स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करती रहीं। जैसे ही समय मिलता ये किसी भी जुगत से भारतीय क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र-शस्त्र भेजने का जुगाड़ करती रहीं।

अत्यन्त धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद इस साहसी महिला ने आदर्श और दृढ़ संकल्प के बल पर पूर्णतः निरापद और सुखी जीवन-युक्त वातावरण को तिलांजलि देकर शक्तिशाली तथा चरमोत्कर्ष पर पहुँचे ब्रिटेन साम्राज्य के विरुद्ध अपने क्रान्तिकारी कार्यों के उपजे खतरों तथा कठिनाइयों का निभर्यतापूर्वक डटकर मुकाबला किया। सिद्धान्त रूप से भीका जी अहिंसा में विश्वास करती थीं, लेकिन उन्होंने यथा समय हिंसा का जोरदार समर्थन भी किया था।

भीका जी कामा ने 1905 में अपने निकट सहयोगियों विनायक दामोदर सावरकर तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ मिलकर भारतीय ध्वज का पहला डिजाइन तैयार किया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक कार्य मानना चाहिए। इसमें तीन रंगों का उपयोग किया था, हरा, पीला और लाल। उस समय इन रंगों के द्वारा विभिन्न धर्मों और संस्कृति को समेटने का प्रयास किया गया था। ऊपर हरा रंग था जिसमें आठ गुलाब के फूल अंकित किए गए थे। यह इस्लाम का द्योतक था, पीला रंग बीच में था, जिसने हिन्दुत्व की भावना प्रदर्शित की गई थी, इसी बीच के भाग में देवनागरी लिपि में—“वन्दे मातरम्”—लिखा गया था। नीचे ‘लाल’ रंग से बौद्धमत का प्रतिनिधित्व किया गया था। इसी लाल रंग में बायीं ओर चाँद तथा दायीं ओर सूर्य का चिह्न बनाया गया था।

अगस्त 1907 ई. में जर्मनी के स्टूटगार्ट नगर में ‘इन्टर नेशनल सोशलिस्ट कांफ्रेंस’ का आयोजन किया गया था, जिसमें अनेक देशों के नेता तथा कार्यकर्ता भाग लेने वाले थे। जब इस कांफ्रेंस की भनक पड़ी तो उन्हें

भारतीय स्वतन्त्रता का पक्ष प्रस्तुत करने का यह स्वर्णिम अवसर प्रतीत हुआ। परन्तु जब तक कोई अपना राष्ट्रीय ध्वज न हो तो इतने विशाल सम्मेलन में अपनी पहचान और प्रतिनिधित्व कैसे हो? इसी की पूर्ति के लिए प्रथम बार विदेश में “तिरंगे” के इस ध्वज की उपयोगिता सिद्ध हुई। फिर तो कई बार इस ध्वज में डिजाइन आदि में कई परिवर्तन हुए इसका इतिहास अलग है।

इसी ध्वज को उस परिस्थिति में फहराकर भीका जी कामा ने इस सम्मेलन में भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने की जोरदार अपील की थी। कई देशों से सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों ने देखा कि एक भारतीय महिला साड़ी पहने हुए बड़े ही आत्मविश्वास के साथ अपनी भावनाओं को प्रकट कर रही हैं। उन्होंने उस सम्मेलन में कहा—“भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। इससे महान देश भारत के हितों को भारी क्षति पहुँच रही है”

उन्होंने वहाँ एकत्र लोगों से भारत को दासता से मुक्त कराने में सहयोग की भी अपील की। इसी अपील में उन्होंने भारतीयों का आह्वान करते हुए कहा—“प्यारे भारतीयों आगे बढ़ो, हम भारतीय हैं और भारत भारतीयों का है।”

वैसे तो भीका जी कामा यूरोप तथा अमेरिका में काफी प्रसिद्धि पा चुकी थीं, परन्तु इस “इन्टर नेशनल सोशलिस्ट कांफ्रेंस” के बाद तो वो जन-जन के मन में स्थान पा गईं। पाठकों की जानकारी के लिए यह भी बता दें कि जर्मनी में फहराया गया यह (तिरंगा) ध्वज पुणे की ‘मराठा एवं केसरी लाइब्रेरी’ में रखा हुआ है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सम्मेलन में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग करते हुए एक प्रस्ताव भी पेश किया गया था।

जर्मनी की इस घटना से दो बातें सिद्ध होती हैं, एक तो यह कि विदेश में भारतीय ध्वज फहराने का यह प्रथम अवसर था। दूसरी यह कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तो सन् 1930 में लाहौर में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पारित किया था, किन्तु जर्मनी की उक्त कांग्रेस में (अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांफ्रेंस) ऐसा ही प्रस्ताव 22 अगस्त, 1907 में प्रस्तुत हुआ था।

चाहे जो हो, परन्तु यह तो मानना पड़ेगा कि इस भारतीय वीर महिला ने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए विदेशों में रहकर जो अभूतपूर्व, अनुपम कार्य किया है उसकी मिसाल ढूँढे भी नहीं मिलेगी।

सन् 1908 में तत्कालीन पंजाब सरकार ने लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिंह को देश निर्वासन का दण्ड दे कर बर्मा भेज दिया, इस समाचार से

पेरिस में बैठी मैडम कामा विचलित हो उठीं। उन्होंने उस सरकार के विरोध में भारत तथा विदेशों में रहने वाले देशवासियों के नाम एक भावुक किन्तु जोश भरी अपील जारी की, उससे न केवल भारत में ही हलचल मची वरन् ब्रिटिश सरकार भी एकबारगी दहल उठी। इस अपील में मैडम कामा ने अंग्रेजी सरकार के खिलाफ अत्याचार सम्बन्धी ऐसे गम्भीर आरोप लगाये कि ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में भी उसकी गूँज सुनाई दी। यह कोई साधारण कार्य न था। उस समय समस्त विश्व में ब्रिटेन का दबदबा था, उसके विरोध में कोई भी गम्भीर कदम उठाना शेर की माँद में प्रवेश करना था।

भीका जी कामा पर इंग्लैण्ड में जाने पर तो पहले ही प्रतिबन्ध लग चुका था। वे भारतीय क्रान्तिकारी विचारों को देश-विदेश में फैलाने के विषय में चिन्तनशील थीं। अतः 1909 में उन्होंने एक साप्ताहिक पत्र अंग्रेजी में निकालने की योजना बनाई जिसका नाम रखा “वन्दे मातरम्”। उसके सम्पादक का काम श्याम जी कृष्ण वर्मा की सलाह से लाला हरदयाल को सौंपने का निश्चय किया गया, किन्तु वे तो लन्दन में ब्रिटिश सरकार की ज्यादतियों का शिकार हो रहे थे। मैडम कामा का निमन्त्रण पाकर उन्होंने राहत की साँस ली। “अन्धा क्या चाहे दो आँखें”। यह वैसे भी हरदयाल जी की रुचि का कार्य था। इसलिए वे किसी प्रकार लन्दन छोड़ पेरिस पहुँच गये। ‘वन्दे मातरम्’ में ऐसे आग उगलने वाले लेख होते थे। जिनसे रग-रग में जोश और रोमांच भर जाता था। इससे ब्रिटिश सरकार आग बबूला हो उठी। ब्रिटेन सरकार आग बबूला हो उठी। ब्रिटेन सरकार ने फ्रांस सरकार से मांग की कि वह मैडम कामा को फ्रांस से निकालकर ब्रिटिश सरकार को सौंप दे। परन्तु फ्रेन्च सरकार ने माँग अस्वीकार कर दी। रुष्ट होकर ब्रिटिश सरकार ने इन पर भारत में जाने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया।

जब प्रथम महायुद्ध (1914) में शुरू हुआ तो मैडम कामा ने भारतीय सैनिकों को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काने की कोशिश की। परन्तु इस कार्य से फ्रेंच सरकार भी प्रभावित होती थी अतः सरकार ने इन्हें नजरबन्द कर दिया। परन्तु 1919 में महायुद्ध की समाप्ति पर यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

उनके सहयोगी उन्हें ‘भारतीय क्रान्ति की माता’ मानते थे जबकि अंग्रेज उन्हें कुख्यात महिला, खतरनाक क्रान्तिकारी, अराजकतावादी नेता, ब्रिटिश विरोधी तथा षड्यन्त्रकारी नारी कहते थे। विदेशों में वे ‘भारतीय राष्ट्रीयता की महान पुजारिन’ नाम से विख्यात थीं। फ्रांसिसी समाचार पत्रों में उनका चित्र ‘जॉन ऑफ

आर्क’ के साथ छपा था। निश्चय ही श्रीमती कामा का यूरोप तथा अमेरिका के राष्ट्रीय एवं लोकतांत्रिक समाज में एक विशिष्ट स्थान था।

श्रीमती कामा का उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरुद्ध विश्व जनमत जाग्रत करना था विदेशी शासन से मुक्ति के लिए भारत की इच्छा को दावे के साथ प्रस्तुत करना था। भारत की स्वाधीनता के लिए लड़ते हुए उन्होंने लम्बी अवधि तक निर्वासित जीवन बिताकर अपार मुसीबतों का सामना किया, किन्तु कभी हार नहीं मानी।

जीवन भर असुविधापूर्ण वातावरण तथा छत्तीस वर्ष तक निर्वासन की स्थिति में रहते हुए भी वे कभी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुईं। एकाकी जीवन, गहन परिश्रम, अभाव, असुविधा, भागदौड़ में जिन्दगी कैसे बिताई, उनके सिवा कौन जान सकता है? ब्रिटिश सरकार का दबाव भी विभिन्न रूपों में बढ़ रहा था। फ्रेंच सरकार ब्रिटेन से मैत्री सम्बन्ध बिगाड़ना नहीं चाहती थी। मैडम कामा जी की आयु भी सत्तर से ऊपर हो चुकी थी। “व्यक्ति चाहे कितना ही साधन सम्पन्न क्यों न हो, उसके कार्य करने की क्षमता की भी एक सीमा होती है। फिर जो व्यक्ति निरन्तर अभाव और फरारी का जीवन बिता रहा हो, वह कब तक और कैसे जीवन की गति को निरन्तर प्राणवान बनाये रख सकता है?”

इन्हीं सब कारणों से श्रीमती कामा असाध्य रोग की शिकार हो गई जब बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया तो भारतीय जनता और नेताओं के लिए चिन्ता का विषय हो गया। देश में उनके प्रतिबन्ध के विरोध में भारी आन्दोलन के लक्षण हो गए। अन्त में सरकार ने उनपर से भारत प्रवेश पर लगा प्रतिबन्ध हटा लिया।

सन् 1935 में ये बीमारी की स्थिति में ही भारत आईं। यहाँ अत्यन्त उत्साह से उनका भावपूर्ण स्वागत किया गया। परन्तु दीपक का तेल लगभग समाप्त हो चुका था। भला सूखी बाती कब तक टिमटिमाती? ... 13 अगस्त, 1936 को उस जुझारू बहादुर भारतीय नारी का निधन हो गया। इस प्रकार भारतीय क्रान्ति के नभ मण्डल का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र अस्त हो गया और छोड़ गया अपनी अविस्मरणीय झिलमिलाट। भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के इतिहास में भीका जी कामा का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उस त्यागमयी देवी को यह देश कभी भी न भुला सकेगा। हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

“हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
तब कहीं चमन में होता है दीदा-वर पैदा।”

—24-4 बिशन सरूप कालोनी, पानीपत

‘क’ से कबूतर को फुर्र करने की चाल

—डॉ. रमेशचन्द्र नागपाल

भारत एक बहुभाषी देश है। अतः भाषा का विषय हमारे देश के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि इसके लिए संविधान में उपबन्ध किया गया है। अनुच्छेद 343 द्वारा देवनागरी लिपि में हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक क्षेत्रीय भाषाओं को राज्य की भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है। इन भाषाओं का उल्लेख संविधान की आठवीं सूची में किया गया है।

सम्पूर्ण भारत संघ की राजभाषा को राष्ट्रभाषा कहा जा सकता है। अनुच्छेद 351 के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास के लिए भारतीय संघ (केंद्रीय शासन) को तीन कर्तव्यों के निर्वाह का आदेश दिया गया है। ये कर्तव्य हैं—

पहला: हिन्दी भाषा के प्रचारक को प्रोन्नति देना इसका तात्पर्य है कि यह प्रयास करना कि अधिकाधिक लोगों की सम्वाद की भाषा हिन्दी हो तथा वे देवनागरी लिपि में हिन्दी पढ़-लिख सकें, कार्यालयों में कार्य हिन्दी में किया जाए और भारत में सभी छात्रों को हिन्दी का प्रारम्भिक ज्ञान तो अवश्य कराया जाए।

दूसरा: हिन्दी का विकास करना—इसकी यह दिशा होगी कि हिन्दी भारत की संस्कृति के सभी तत्वों को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन सके। भारत एक विशाल देश है, यहाँ पर अनेक जीवनशैलियाँ अर्थात् संस्कृतियाँ हैं। कुछ देशीय हैं कुछ विदेशी हैं। इससे भारत की संस्कृति एक रंगी या एक रूपी नहीं है बल्कि अनेक रंगों और रूपों की मिश्रित या सामासिक संस्कृति है। इस सामासिक संस्कृति को हिन्दी के माध्यम से अनेक विधाओं में अभिव्यक्ति दी जा सकती है।

तीसरा: हिन्दी भाषा की समृद्धि सुनिश्चित करना—इसके लिए हिन्दुस्थानी के रूप में शैली तथा पदों को हिन्दी में आत्मसात किया जाना चाहिए। हिन्दी के शब्द भण्डार को धनी बनाने के लिए जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द लिए जा सकते हैं। अन्य भाषाओं में विदेशी भाषाएँ भी हो सकती हैं।

अन्य भाषाओं का सम्बल लेने पर एक प्रतिबन्ध भी बताया गया जो सदैव ध्यान में रखना आवश्यक

है। प्रतिबन्ध यह है कि इससे हिन्दी की अपनी प्रकृति या विशिष्टता में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।

उदाहरण के लिए, **मामला (उर्दू) शब्द का बहुवचन मामले (मामलों) बनाया जाए, मामलात नहीं एवं चैनल (अंग्रेजी) शब्द का बहुवचन चैनलों बनाया जाए, चैनल्स नहीं।**

अपनी ही राष्ट्रभाषा में कार्य करना प्रत्येक देश के लिए सम्मान एवं अस्मिता की बात होती है। अतः हिन्दी के प्रसार, विकास एवं समृद्धि के जो कर्तव्य भारत के केन्द्रीय शासन को संविधान द्वारा दिए गए हैं उनका निर्वाह पवित्र कर्तव्य भाव से किया जाना चाहिए। इस विषय के विभिन्न आयाम हैं। यहाँ हम केवल एक ही आयाम—मीडिया पर चर्चा करने वाले हैं। देखने वाले हैं कि मीडिया में इन कर्तव्यों के निर्वाह की स्थिति क्या है—

मीडिया पर छाए अंग्रेजी शब्द (क)

प्रयोग में अंग्रेजी शब्द बहिर्गर्त हिन्दी शब्द

सुप्रीम कोर्ट	सर्वोच्च न्यायालय
हाई कोर्ट	उच्च न्यायालय
चीफ जस्टिस	मुख्य न्यायाधीश
कोल्ड ड्रिक्स	शीतल पेय
प्राइवेट	व्यक्तिगत
सर्वे	सर्वेक्षण/निरीक्षण
हेडलाइन्स	शीर्ष समाचार
सस्पेंड	निलम्बित
ट्रैफिक	यातायात
बॉक्स आफिस	टिकट घर
बार कौंसिल	अधिवक्ता परिषद्
वेलफेयर	कल्याण
एडवेंचर	साहसिक कार्य/साहस
सुपरिटेण्डेंट	निरीक्षक
ट्रांसफर	स्थानान्तरण
परफेक्शन	पूर्णता
म्युजिकल इन्स्ट्रूमेंट	संगीत वाद्य
क्वालिफाई	योग्य (पात्र) होना
एंकाउन्टर	मुठभेड़
हाई अलर्ट	पूर्ण सतर्कता

आज मीडिया में हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू की खिचड़ी परोसने का यह औचित्य बताया जाता है कि यह हिन्दुस्तानी भाषा है। यह तर्क पूर्णतः निर्मूल है। यह आधिकारिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि भारत की राज भाषा हिन्दी है, हिन्दुस्थानी नहीं।

अपने संविधान की आठवीं सूची में इस समय बाईस भाषाओं का उल्लेख है। उनमें हिन्दुस्थानी का नाम भी नहीं। यह तर्क भी दिया जा सकता है कि केवल हिन्दी शब्दों का प्रयोग करने से मीडिया की भाषा क्लिष्ट हो जाएगा। यह तर्क पूर्णतः मिथ्या है। कोई शब्द भले ही पहली बार प्रयोग करने पर वह सरल हो जाता है।

आज मुख्यधारा के कहे जाने वाले समाचार पत्रों के शीर्षक देखिए। उनमें हिन्दी कम, अंग्रेजी ज्यादा दिखाई देती है। दस शब्दों के शीर्षक में 5-6 शब्द अंग्रेजी के लिखकर वे क्या संदेश देना चाहते हैं?

ऐसा प्रतीत होता है कि मीडिया में हिन्दी के प्रयोग की न्यूनता के मूल में एक सुविचारित षड्यन्त्र है। यदि अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्द श्रोताओं के कानों में बारम्बार डाले जाएंगे, तो वे उन्हीं शब्दों का व्यवहार करने लग जाएंगे। हिन्दी भाषा अप्रचलित और विलुप्त हो जाएगी।

हिन्दी भाषा पर अतिक्रमण का प्रभाव यह होगा कि जनमानस में यह संदेश जाएगा कि हिन्दी उन विचारों को अभिव्यक्त करने में अक्षम है जिनके लिए अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों की शरण ली जा रही है। यह तो हिन्दी का घोर अपमान है। हिन्दी का शब्द कोष उर्दू से कई गुणा धनी है। जहाँ तक अंग्रेजी की बात है, तो केवल उन यन्त्रों के लिए, जिनका आविष्कार अंग्रेजों द्वारा किया गया है, हिन्दी भाषा में शब्द नहीं हैं।

यह स्वाभाविक है क्योंकि आविष्कारक अपने यन्त्र का नाम तो उसी भाषा में देगा जिसका उसको ज्ञान है, तथापि उनके यन्त्रों के लिए हिन्दी में सम्यक् शब्दों का निर्माण हो गया है। अनेक यन्त्रों के अंग्रेजी नामों को हिन्दी में आत्मसात कर लिया गया है। जैसे ट्रेन, साईकिल, आटो, कार, मोबाईल, पेट्रोल, डीजल इत्यादि। अंग्रेजी भाषा की भी ऐसी ही स्थिति है। उसमें भी अनेक हिन्दी शब्दों को आत्मसात किया जा रहा है। उदाहरणतः आसन् साड़ी, कुर्ता, घेराव आदि।

लेकिन जहाँ तक मानवीय भावनाओं और चिन्तन का प्रश्न है, दोनों भाषाएं आत्मसम्पन्न मिलेंगी। कोई भी उन्नीस नहीं की जा सकती है। अतः अंग्रेजी का ऐसे विषयों में भी प्रयोग अनावश्यक है। अंग्रेजी भाषा के

जिन शब्दों का मीडिया में धड़ल्ले से प्रयोग होता है, किसी भी अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष में उन सबके लिए सरल-सुबोध और कर्णप्रिय हिन्दी शब्द मिल जाएंगे। (देखें, बाक्स 'क')

वर्तमान स्थिति यह है कि इस समय टेलीविजन पर विभिन्न चैनलों द्वारा हिन्दी भाषा की घोर उपेक्षा की जा रही है। मीडिया पर लगातार 'आज तक', 'सहारा समय', 'जनमत', 'इण्डिया टी.वी.', 'चैनल 7', 'ई.टी.वी. न्यूज' जैसे चैनलों के जो शब्द सर्वसाधारण में प्रचलित हैं, उनका प्रयोग तो भूले भटके ही होता है, उनके स्थान पर अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का ही प्रयोग किया जा रहा है।

यह स्वीकार किया जा सकता है कि अंग्रेजी एवं उर्दू के कुछ शब्द हिन्दी में आत्मसात हो चुके हैं। उनका प्रयोग प्रसंगवश अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः उनके प्रयोग पर आपत्ति करना उचित नहीं।

परन्तु.....जितनी अधिक संख्या में तथा जितने विचित्र रूप में उन भाषाओं के अगणित शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा के कार्यक्रमों में हो रहा है उससे यह अनायास अनुभूति होती है कि यह प्रयोग इस विचार से नहीं किया जा रहा कि उनकी आवश्यकता अधिक प्रभाव के लिए है बल्कि इस मनोभाव से किया जा रहा है कि अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का अधिक काधिक प्रयोग करके हिन्दी की अस्मिता को दुर्बल किया जाए।.....

मीडिया में हिन्दी भाषा कार्यक्रमों में हिन्दी की दशा के उपर्युक्त तथ्यात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मीडिया अपने भाषा सम्बन्धी कर्तव्यों से पूर्णतः विमुख है। ऐसा प्रतीत होता है कि मीडिया में हिन्दी के प्रयोग की न्यूनता के मूल में एक सुविचारित षड्यन्त्र है। यदि अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्द श्रोताओं के कानों में बारम्बार डाले जाएंगे, तो वे उन्हीं शब्दों का व्यवहार करने लग जाएंगे। फलतः शनैः शनैः हिन्दी भाषा अप्रचलित और विलुप्त हो जाएगी।

सन्देह होता है कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि हिन्दी कार्यक्रम देने वालों को यह अनौपचारिक परन्तु आधिकारिक निर्देश है कि हिन्दी के कार्यक्रमों में अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करने का प्रयास करें। यह निर्देश उन पर दबाव का काम करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उर्दू भाषा का शिक्षण और प्रशिक्षण भी दिया जाता है, क्योंकि उर्दू शब्दों के उच्चारण में नुक्ते का बड़ा महत्त्व है। उससे शब्दों का अर्थ भेद हो जाता है।

उदाहरण के लिए जलील और जलील शब्दों में अन्तर। सामान्यतः हिन्दी भाषी लोग नुक्ते की त्रुटि

मीडिया पर छाए उर्दू शब्द (ख)

प्रयोग में उर्दू शब्द	बहिर्गत हिन्दी शब्द	प्रयोग में उर्दू शब्द	बहिर्गत हिन्दी शब्द
शुक्रिया	धन्यवाद	कलमकार	लेखक
सौ फीसदी	शत-प्रतिशत	किताब	पुस्तक
तबाह	नष्ट	नजरिया	दृष्टिकोण
शख्स	व्यक्ति	हक	अधिकार
खबर	समाचार	मकसद	उद्देश्य
मशहूर	प्रसिद्ध	शामिल	सम्मिलित
आखिरी	अन्तिम	सुबह-सवेरे	प्रातः काल
ज्यादती	अति		

कर जाते हैं, परन्तु मीडिया में उर्दू बोलने वालों का तखल्लुस (उच्चारण) अधिकांशतः शुद्ध होता है

जो शब्द पर्दे पर लिखकर आते हैं, उनमें भी नुक्ते की बिन्दी उचित स्थान पर रहती है। इतनी त्रुटिहीनता शिक्षण-प्रशिक्षण के अभाव में हो ही नहीं सकती। (देखें, बॉक्स 'ख')

मीडिया में इस प्रकार से हिन्दी भाषा की अवमानना का जो खुला खेल चल रहा है, इसमें बहुत हद तक दोष हिन्दी भाषा के अध्यापकों का है। कहीं पर भी सामूहिक रूप से उन्होंने इस समस्या को नहीं उठाया। यदि वे एक बार भी किसी भी नगर में सामूहिक प्रदर्शन कर दें तो संचार साधन अपनी त्रुटि को सुधारने में कोई विलम्ब नहीं करेंगे। सम्भव है कि वे इसके लिए उनका आभार भी मानें कि उनके ऊपर जो प्रच्छन्न दबाव है, जिसे वे पसन्द नहीं करते, उससे उनको मुक्ति दिला दी गई।

हमारा विरोध अंग्रेजी और उर्दू से लेशमात्र भी नहीं है। उन भाषाओं के अपने चैनल हैं। उनमें पर्याप्त कार्यक्रम दिए जाते हैं। विरोध तो केवल हिन्दी विरोध का है।.....



जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें



जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883

IFSC:UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

(बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।)

विज्ञापन व्यवस्थापक- जनज्ञान-मासिक

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम, केशव नगर (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36

राष्ट्रभाषा हिन्दी की समृद्धि एवं विकसित स्वरूप

—डॉ. गोपाल राम वर्मा

आज हम 21वीं सदी के पूर्वाह्न में जी रहे हैं, भारत विकासशील देश से विकसित देशों की श्रेणी में अपना कदम बढ़ा रहा है। ऐसे में हमें बड़ा गर्व होता है कि हिन्दी हमारी मातृभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा भी है। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार किसी राष्ट्र की सम्प्रभुता एवं स्वाभिमान का प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीय चिह्न होता है, ठीक उसी प्रकार उस राष्ट्र की संस्कृति एवं भाषा भी उसके आत्म-गौरव एवं अस्मिता का प्रतीक होती है, हां यह सत्य है कि हिन्दी भाषा ने यह गौरव हासिल किया है।

अगर मैं भारतीय पृष्ठभूमि पर नज़र डालूँ तो भारत बहुभाषीय राष्ट्र है। इतने बड़े विस्तृत भू-भाग वाले राष्ट्र में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी, कच्छ से ब्रह्मपुत्र तक अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से भारत एक ईकाई है, विभिन्नता में एकता की दुर्बलता न होकर शक्ति है, क्योंकि यहां पर अनेक भाषाओं का संगम है। उस संगम में हिन्दी भाषा का अपना अलग महत्व एवं विशेषताएं हैं, क्योंकि ऐसा मानना तर्क संगत है। एक समय के उपरान्त हिन्दी भाषा में साहित्यिक रचनाएं लिखी जाने लगी, वे सभी रचनाएं ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली, खड़ी बोली आदि बोलियों में लिखी गई थी, परन्तु ये बोलियां हिन्दी भाषा के क्षेत्रीय रूप हैं।

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द सिन्धु से मानी जाती है 'सिन्धु' शब्द सिन्धु नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास के भू-भाग को सिन्धु कहा जाने लगा, जिसका स्पष्ट एवं शुद्ध रूप आज भी कालान्तर में देखने को मिलता है। सिन्धु शब्द 'ईरान' में जाकर हिन्दू या फिर हिन्द हो गया।

ईरानी भाषा में इसका अर्थ हुआ 'सिन्ध प्रदेश' कुछ समय के बाद ईरानी लोग भारत के अनेक भू-भागों से परिचित हो गए और उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन एवं विस्तार हो गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत के लिए वाचक हो गया। इस शब्द में ईरानी का 'इक' प्रत्यय लगने से हिन्दी का परिवर्तन रूप है, इसका मूल अर्थ है हिन्दी का। अगर व्याकरणिक दृष्टि से इस शब्द का अवलोकन करें तो, यह शब्द विशेषण है, परन्तु भाषा के अर्थ में यह शब्द संज्ञा हो गया, जिसका अपना अलग अस्तित्व एवं स्वरूप है।

हिन्दी भाषा के उद्भव से लेकर आज तक हिन्दी

हमें कई रूपों में देखने को मिलती है— पुरानी हिन्दी, ठेठ हिन्दी, आधुनिक हिन्दी, मानक हिन्दी, राजभाषा हिन्दी, सम्पर्क भाषा हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, व्यवहार मूलक हिन्दी आदि। इस तरह से हिन्दी के कई पृथक रूप भी मिलते हैं और विभिन्न बोलियां भी देखी जा सकती हैं।.....स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी ने देश के भविष्य के लिए, देश की एकता और बन्धुत्व के लिए हिन्दी को ही राष्ट्र की सम्पर्क भाषा माना।

हिन्दी गद्य साहित्य के प्रसिद्ध लेखक भारतेन्दु जी ने सूत्र रूप कहा—“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।” गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपने एक निबन्ध में लिखा है—“जिस हिन्दी भाषा के खेत में ऐसी सुनहरी फसल फैली है, वह भाषा भले ही कुछ दिनों यो ही पड़े रहे, तो भी उसकी स्वाभाविक उर्वरता नहीं मर सकती, वहीं फिर खेती के सुदिन आएंगे और पौष मास में नवान्न उत्सव होगा।” नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने यह घोषणा की थी कि “हिन्दी के विरोध का कोई भी आन्दोलन राष्ट्र प्रगति में बाधक है।” हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का प्रत्येक भाषण हिन्दी में ही होता था और वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपना भाषण हिन्दी में ही देते हैं। इस प्रकार की अभिव्यक्ति हिन्दी भाषा का स्वर्णिम विकसित स्वरूप प्रदान करती है।

हिन्दी में कई और नवीन विद्याओं का समावेश हो गया है, जो पत्रकारिता एवं टेलीविजन के क्षेत्र में बहुआयामी रूप में फैलता जा रहा है और आज के नवयुवक-युवतियों को नए रोजगार के संसाधन उपलब्ध करा रही है। हिन्दी भाषा आज न केवल राष्ट्रीय स्तर की भाषा है, बल्कि यह भाषा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बोली समझी पढ़ी-लिखी एवं अध्ययन अध्यापन कराए जाने वाली भाषा बन गई है।

नेपाल, फीजी, श्रीलंका, मॉरिशस, वेस्टइंडीज, सूरीनाम, चीन, पाकिस्तान, जापान, बांग्लादेश, अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, स्विटजरलैंड, इटली आदि खाड़ी देशों सहित विश्व के अनेकानेक देशों में हिन्दी का सम्मान, अध्ययन अध्यापन कराने की स्थिति के अवलोकन से प्रत्येक भारतीय के मन में हिन्दी भाषा के प्रति यही विश्वास और बोध स्थापित होता है कि हिन्दी भाषा में उनका भविष्य उज्ज्वल और समृद्धि है। ●●●

हिन्दुस्थान लाखों वर्षों से सांस्कृतिक इकाई रहा है और संस्कृत भाषा विश्व भाषा के नाते भू-मण्डल में व्याप्त रही है। परिस्थितियों के परिवर्तन के फलस्वरूप अतीत काल से हिन्दी देश के सभी सम्प्रदायों और वर्गों की भाषा बनी हुई है। वर्तमान भारत, म्यांमार (ब्रह्मदेश), पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, अफगानिस्तान आदि के लोगों ने हिन्दी के विकास में अपना योगदान दिया है।

विशाल भूभाग की भाषा होने तथा साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से देश में हिन्दी को विशिष्ट स्थान मिला है। विश्व की भाषाओं के इतिहास में यह असाधारण उदाहरण है कि आधुनिक हिन्दी ने खड़ी बोली के रूप में अपने जन्म काल से अन्तर-प्रांतीय भाषा के नाते देश और समाज की सेवा की। सन् 1857 के राजनीतिक आन्दोलन के संचालन में हिन्दी ने जनमाध्यम की भूमिका निभाई और इस प्रकार उसने सभी साहित्येतर क्षेत्रों में भी प्रवेश किया। प्राचीन काल से ही मध्य देश की भाषाएं सार्वदेशिक सम्पर्क भाषाओं के रूप में (पहले संस्कृत और बाद में पाली, प्राकृत और अपभ्रंश) काम करती रही हैं। इनसे विकसित हिन्दी को भी वे सारे गुण, लक्षण, प्रवृत्तियां व सामर्थ्य विरासत में प्राप्त हुए हैं।

अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हमें हिन्दी में कुछ विलक्षणताएं दृष्टिगोचर होती हैं जो उसे भारतीय भाषाओं में समन्वय करने की भूमिका निभाने में सार्थकता प्रदान करती है। इन विलक्षणताओं को मोटे रूप से दो विभागों में विभाजित करके अध्ययन प्रस्तुत कर सकते हैं।

1. हिन्दी का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और
2. भाषिक परिवेश

भाषिक परिवेश की पांच विलक्षणताएं मिलती हैं जैसे—

- क. अन्तर जनपदीय परिवेश का वैशिष्ट्य
- ख. हिन्दी-उर्दू की साहित्यिक शैलियों का सह-अस्तित्व
- ग. दूसरी भाषाओं के संपर्क में प्रभाव ग्रहण करने की विशेषता
- घ. सामाजिक स्तर पर परिवर्तन के साथ रूप परिवर्तन-शीलता
- ङ. निजी व्यवहार क्षेत्र से बाहर की प्रसरण-शीलता।

हिन्दी क्यों?

कई सौ वर्षों पहले महाराष्ट्र के संत एकनाथ और रामदेव ने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी साहित्य में अपना योगदान दिया था। इसी प्रकार हिन्दी के कवियों और लेखकों ने सदा ही अन्य भाषा-भाषी संतों, महात्माओं और विद्वानों की अर्चना की है। हिन्दी के प्रसिद्ध संत कवि कबीर ने “प्रणवै नामा तत्त्व रस अमृत पीजै” कहकर संत नामदेव की पूजा की थी।

हिन्दी के महाकवि भूषण ने ओरछा (बुन्देलखण्ड) से आकर महाराष्ट्र के हमारे राष्ट्रीय नेता छत्रपति शिवाजी का जिस रूप में यशोगान दिया था और उनके कार्यों में सक्रिय योगदान दिया था, वह इतिहास के पन्नों में अमिट गाथा है।

पंडित बाबराव विष्णु पराडकर, पं. माधव सप्रे, लक्ष्मण नारायण गर्दे और रामचन्द्र रघुनाथ खाडिलकर हिन्दी के उच्च कोटि के पत्रकार और गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे हिन्दी के श्रेष्ठ कवि हुए हैं जिनकी मातृभाषा मराठी थी। इन्होंने हिन्दी के माध्यम से विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर के कर्णधार श्री अनन्त गोपाल शोवडे और श्री प्रभाकर माचवे आदि विद्वानों की हिन्दी सेवा के कारण हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका स्थान बेजोड़ रहेगा।

बिहार में श्री भूदेव मुखर्जी और पंजाब में श्री नवीनचन्द्र राय ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार के लिए अमिट कार्य किया था। विशाल भारत के संपादक स्वर्गीय रामानन्द चटर्जी की सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। प्रयाग के इंडियन प्रैस के स्वामी स्वर्गीय चिन्तामणी घोष ने हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका ‘सरस्वती’ का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। किन्तु घाटे में होते हुए भी राष्ट्र भाषा की सेवा से प्रेरित होकर उनके उत्तराधिकारी प्रायः सत्तर साल तक इस पत्रिका का प्रकाशन करते रहे। हिन्दी के श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में ‘सरस्वती’ सबसे महत्त्वपूर्ण पत्रिका है और इसने हिन्दी के इतिहास का निर्माण किया है। हिन्दी साहित्य का ‘द्विवेदी-युग’ ‘सरस्वती’ का युग रहा है जिसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी प्रतिभा से सजाया तथा संवारा।

जस्टिस शारदा चरण मित्र ने ‘एकलिपि विस्तार परिषद्’ का गठन करके और ‘देवनागर’ पत्र प्रकाशित करके हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा की। स्वर्गीय अमृतलाल

चक्रवर्ती प्रायः पचास वर्षों तक हिन्दी पत्रकारिता में छाए रहे। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने संत कबीर के एक सौ पदों/सबदों का अंग्रेजी में अनुवाद करके और शांति निकेतन के आचार्य क्षितिज मोहन ने संत कवियों के बारे में अनुसंधान करके हिन्दी को नूतन आयाम प्रदान किए और शोध का मार्ग खोला। वस्तुतः हिन्दी के संत साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव क्षितिज बाबू ने रखी थी और आज भी शांति निकेतन में उस परम्परा का निर्वाह हो रहा है।

तमिलभाषी स्वर्गीय डा. रांगेय राघव हिन्दी के यशस्वी निबंधकार और उपन्यासकार थे। अल्पायु में सरस्वती के इस वरद पुत्र और हिन्दी सेवी को हिन्दी ने खोया किन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका उल्लेखनीय स्थान बन गया। तेलुगुभाषी हिन्दी कवियों में श्री बाल कृष्ण राव का नाम उल्लेखनीय है। हिन्दी के 'तार-सप्तक' का हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्या स्थान है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। इनके अतिरिक्त श्री रमेश आरिगपूडी, बाल शौरि रेड्डी और डॉ. पांडुरंग राव आदि की हिन्दी सेवा भी उल्लेखनीय है। पंजाबी निबंधकारों ने और पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने हिन्दी के कथा लेखकों में उच्च स्थान प्राप्त किया है।

इन सभी लेखकों ने हिन्दी को सार्वदेशिक रूप प्रदान किया है और यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी किसी प्रदेश तक सीमित नहीं है, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में समूचे भारत का प्रतीक है।

भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद का कार्य अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की अपेक्षा स्तुत्य और अधिक सरल भी है। सभी भारतीय भाषाएं वर्णमाला, संरचना और साहित्य के दृष्टिकोण से एक-दूसरे के अत्यन्त निकट है।

भारत की जनता में भावात्मक एकता जगाने की अनिवार्यता को महसूस करते हुए दक्षिण में हिन्दी भाषा के प्रचार की आवश्यकता भी महसूस की गई तथा तत्परता से इस कार्य की रूपरेखा बनाई गई। दक्षिण में हिन्दी प्रचार की गतिविधियों के परिणामस्वरूप हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव एवं कालान्तर में विकास भी संभव हो पाया।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती ने अपनी तमिल पत्रिका 'इण्डिया' के माध्यम से तमिल भाषियों से अपील की थी कि वे राष्ट्रीयता के हित में हिन्दी सीखें। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने अपनी पत्रिका में हिन्दी की सामग्री के प्रकाशन के लिए कुछ पृष्ठ सुरक्षित रखना सुनिश्चित किया था। महाकवि भारती ने अपने तमिल पत्र के माध्यम से हिन्दी भाषायी प्रेम एवं हिन्दी पत्रकारिता की नींव डाली थी।

सनातन धर्मियों के समक्ष उपस्थित खतरे को दूर करने, धर्म प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से सन् 1931 में श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र कटक के प्रयासों से मासिक हिन्दी पत्रिका 'भाग्योदय' के प्रकाशन से आन्ध्र प्रान्त से आरम्भिक दिनों में प्रकाशित हिन्दी की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाएं धार्मिक-राष्ट्रीय चेतना के परिणामस्वरूप ही प्रकाशित हुई थी। आर्य समाजी हिन्दी पत्रकारिता का उद्देश्य भी राष्ट्रीय चेतना का प्रसारण ही रहा है।

हिन्दी प्रचार की गतिविधियों में संलग्न मलयालम भाषी हिन्दी प्रेमी एवं हिन्दी प्रचार आन्दोलन के कर्मठ कार्यकर्ता श्री नीलकण्ठ नायर के प्रयासों से प्रकाशित 'हिन्दी मित्र' से केरल की हिन्दी पत्रकारिता का उदय माना जा सकता है। 'हिन्दी मित्र' के प्रकाशन के बाद ही केरल से अन्य हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। हिन्दी प्रचार संबंधी राष्ट्रीय महत्व के कार्य में हाथ बंटाने के उद्देश्य से केरल की मलयालम पत्रिका ने भी साप्ताहिक हिन्दी परिशिष्ट प्रकाशित करके सद्भावना दर्शायी थी। कर्नाटक में भले ही हिन्दी प्रचार आन्दोलन का सूत्रपात स्वाधीनता पूर्व युग में ही हुआ था, किन्तु हिन्दी में कोई पत्र-पत्रिकाएं उक्त अवधि में वहां से प्रकाशित नहीं हो पाई।

भारतीय साहित्य की अवधारणा को परिपुष्ट करने में सुते भाषा के रूप में हिन्दी जो भूमिका निभा रही है उसका संकेत हम पहले भी दे चुके हैं। भारतीय अस्मिता एवं भारतीय साहित्यात्मकता के एक सबल प्रमाण के रूप में गुरुग्रंथ साहब का उल्लेख आवश्यक है। इस ग्रंथ के संबंध में शीतांशु कहते हैं कि पहले मानक पथ और बाद में सिख धर्म के संस्थापक ने विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्यकारों को एकसूत्र में बांधने का अत्यन्त उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ एकता में विविधता का भी सार्थक प्रयत्न है।

हिन्दी कैसे?

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी की आवश्यकता तो निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाती है किन्तु आगे इसका क्या प्रतिफल हुआ है, और कैसे हुआ है, यह जानना भी महत्वपूर्ण होगा।

1. लगभग 22 देशों में 80 करोड़ से अधिक लोगों के लिए हिन्दी सीखने की व्यवस्था है।
2. विदेशों में लगभग 144 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। लगभग दो करोड़ लोग हिन्दी को समर्थन दे रहे हैं।
3. जहां अंग्रेजी के मूल शब्द 10 हजार हैं वहीं हिन्दी के मूल शब्द 7.50 लाख से अधिक हैं।

(शेष पृष्ठ-41 पर)



Muskan Dental Care

An ISO 9001 : 2008 Certified Clinic



Dental Implants

BEFORE

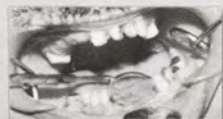
AFTER



Fixed Teeth Replacement

BEFORE

AFTER



Dr. Manoj Bisla
B.D.S.(M.D.U.)

Dr. Kajal Bisla
B.D.S.(PUNE)

11/26, West Patel Nagar, New Delhi-8

Phone : 011-25882653, 42467322,

Mobile: 9818822991

Email : muskandentalcare@yahoo.com



Dental Treatment

- ☐ Fixed Teeth Replacement
- ☐ Root Canal Treatment
- ☐ Gum Treatment
- ☐ Braces
- ☐ Cosmetic Smile Design
- ☐ Impacted Tooth Removal
- ☐ Dental Implant
- ☐ Denture
- ☐ Kids Dentistry
- ☐ Dental Jewellery

समय के प्रवाह ने हमें कहां से कहां पहुंचा दिया। स्वराज्य मिला, पर हमने परतन्त्रता का पल्ला नहीं छोड़ा, आत्मा हनन की राह पर बढ़ते हमारे चरण किस मंजिल पर ले जाकर पटकेंगे हमें यह कौन जानता है? किसे ज्ञात है कि हमारी आंखें, हमारा भविष्य अपनी आंखों से क्या देख रहा है? कहीं सब कुछ बुझ तो नहीं जाएगा? जलते प्रश्न पर चुभता लेख प्रसिद्ध लेखक और कवि की लेखनी से प्रस्तुत है। - सम्पादक

एक बार मुझ पर और मेरी पत्नी पर यह भार आया कि हम लोग अपने जिले के एक प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सैनिक की युवा पुत्री के लिए लड़का देखें। लड़के वालों के आने पर मैं समझ नहीं पाया कि बात कहां से और कैसे शुरू की जाए। उधर लड़के का भाई और मामा परेशान कि किसी ओर से बात का सिलसिला ही शुरू नहीं हो रहा है। वातावरण में चुप्पी और घुटन थी। तभी मैंने देखा कि महिलाओं में कुछ खुसुर पुसुर शुरू हो गई है। शायद बतियाने लगीं थीं। लड़के के पिता ज्यादा बूढ़े नहीं, पर रिटायर्ड जिन्दगी गुजार रहे हैं। लड़के का बड़ा भाई हैदराबाद में कहीं नौकर है और छुट्टियों में 'राजू' और राजू की मां को लेकर अपने परिवार में आया है। मुझे कुछ नहीं सूझा तो मैंने 'राजू' को पुकारा। बस पुकारने भर की देर थी, 'राजू' खुल गया।

बीस मिनट में 'राजू' मेरा पक्का दोस्त बन गया। उसकी बातचीत और उत्तरों ने सबको मुग्ध कर लिया। मैंने महसूस किया कि 'राजू' की मां, पिता, चाचा, दादा और सभी परिजन 'राजू' से अपने आप को गौरवान्वित समझते हैं। बूढ़े दादा ने कहा- "साहब! राजू बड़ा नटखट है और चलते रास्ते लोगों से दोस्ती कर लेना इसका विशेष गुण है! 'राजू' ने दोनों समूहों के बीच आना जाना शुरू कर दिया और मेरी पत्नी और मेरे बेटों से भी वह तत्काल घुल मिल गया।

समय काटने के लिए और बच्चा कहीं ऊब न जाए, इसलिए मैंने 'राजू' से कुछ विशेष सवाल पूछने शुरू किए। चार बरस के 'राजू' ने कुछ सवालों के उत्तर ठीक-ठीक अंग्रेजी में दिए और कुछ के आसान हिन्दी में। तोतली बोली निहाल हो उठता है। मैंने पूछा- 'बेटे? तुम्हारा नाम क्या है?'

'माई नेम इज 'राजू' जैन-एक्चुअली आई एम राजीव जैन, बट मम्मा एण्ड पापा काल मी 'राजू'-स्वीट 'राजू'-आई एम आनली 'राजू' यू आलसो काल मी 'राजू' काल अंकल-स्वीट 'राजू' थैंक यू! (मेरा नाम राजू जैन है। वास्तव में मेरा नाम राजीव जैन है पर मां

और पिताजी मुझे 'राजू'-प्यारे 'राजू' पुकारते हैं। मैं केवल 'राजू' हूँ। आप भी मुझे 'राजू' ही कहिए। कहिए न चाचा, प्यारे 'राजू'। धन्यवाद!)

मैं तन्मय हो गया। मैंने दूसरा सवाल किया-तुम कहां पढ़ते हो? उत्तर था मैं लिटिल फ्लावर स्कूल में पढ़ता हूँ। क्या पढ़ते हो? - बस पढ़ता हूँ।

मैंने लड़के के पिता से इस स्कूल का परिचय पूछा तो मुझे बताया गया कि यह एक पब्लिक स्कूल है और बढ़िया स्तर की पढ़ाई वहां होती है।

तुम्हें भाई साहब पढ़ाते हैं या बहन जी?'

'हमें टीचर पढ़ाती है। अंकल तुम इतना भी नहीं जानते। हाऊ फनी यू आर!'

हम सब हंसने लगे। मैंने कहा- 'यार राजू! तुम पक्के शैतान हो।'

'पापा! मैं नाटी हूँ। शैतान नहीं हूँ। है न?' राजू ने अपने पिता से पूछा और मेरी गोद से उछल कर वह अपनी मां के पास भाग गया। उधर शायद 'लड़की' देखी-परखी जा रही थी, सो एक ही मिनट में 'राजू' वापस मेरे घुटनों में आकर फंस गया। उसने मेरा कालर पकड़ा, मेरा गाल थपथपाया और करीब-करीब मेरी नाक पर मुंह लगा कर मुझे से पूछा 'अंकल! आर यू ए मिनिस्टर? व्हाट इज ए मिनिस्टर। शो मी।' (चाचा! क्या तुम मन्त्री हो? मन्त्री क्या होता है। मुझे बताओ।)

मैंने उसके दादा से निवेदन किया कि वे राजू को इसका उत्तर दे देने की कृपा करें। दादा ने राजू को समझा दिया कि वे उसे घर पर सब बता देंगे। तभी मेरा 'मनोवैज्ञानिक' और कवि जाग पड़ा। मैंने हाल की दीवारों पर नजर दौड़ाई और विशाल तैल चित्रों में मेरी नजर सरदार पटेल के चित्र पर अटक गई। मैंने राजू का मुंह फोटो की तरफ किया और पूछा-

'बेटे! इस आदमी को जानते हो? बताओ यह कौन है?'

राजू ने इस चित्र को आंख गड़ा कर देखा और हवा में हाथ लहरा कर कहा, 'कोई बड़ा आदमी है।' राजू के दादा, पिता, लड़का, (चाचा) और कुछ दूर बैठी मां और बड़ी चाची सब मेरे सवालों से आकर्षित हुए।

उन्हें लगा कि मैं शायद 'राजू' की परीक्षा ले रहा हूँ। लड़का फेल न हो जाए, सो 'राजू' के दादा ने कुछ समझाना चाहा। मैंने उनसे प्रार्थना की कि यह हमारा निजी मामला है, उसमें दखल न दें। बात मजाक में धुल कर फिर शुरू हो गई। 'अच्छा बेटे! बताओ वह उधर वाली तस्वीर किसकी है?' इस बार मैंने लालबहादुर शास्त्री की तस्वीर की ओर इशारा किया।

'आई डोण्ट नो (मैं नहीं जानता) कोई बड़ा आदमी होगा।' मुझे लगा बड़ी तस्वीर को लड़का 'बड़े आदमी' की तस्वीर मानता है।

डा. राधाकृष्णन की तस्वीर पर 'राजू' का ध्यान आकर्षित करते हुए मैंने पूछा, राजू! इसे तो तुम पहचानते ही हो। बताओ, यह कौन है?

'देखते नहीं हो अंकल! यह तो पगड़ी वाला है। तुम्हीं बताओ न यह कौन है?'—राजू बोला।

अब तक 'राजू' के परिजनों के चहरे पीले पड़ने लग गए थे। जो लड़का लड़की देखने आया था, वह बुझा-बुझा जा रहा था। मेरी दिलचस्पी 'राजू' में गहरी हो गई। जवाहरलाल नेहरू की तस्वीर पर मैंने उंगली उठाकर राजू से कहा—'देखो दोस्त! यह तस्वीर तुम्हारे स्कूल में भी लगी है, बताओ यह कौन आदमी है?'

शायद बिजली की रोशनी उस तस्वीर पर ऐसे कोण से पड़ रही थी कि 'राजू' उस जगह से उन फोटो को देख नहीं पा रहा था। फ्रेम दिखाई दे रहा था। उसने मुझे झकझोर कर किलकारी मारते हुए कहा—'दैट्स आनलीफ्रेम अंकल! यू आर लूजिंग योर आईज।' (वह केवल फ्रेम है, चाचा! तुम अपनी आंखों का इलाज कराओ)।

एक ठहाका सारे हाल में गूँज गया। 'राजू' हंसते-हंसते दोहरा हो रहा था।

राजू के बाप ने दीवार पर अगला चित्र देखा। महात्मा जी का आदम कद आइल पेटिंग। उसकी सांस में सांस आई कि लड़का अब की बार ठीक-ठीक उत्तर दे देगा। यहीं सब गड़बड़ हो गई। मैंने संकेत करके पूछा—'बोलो राजू! यह किस की तस्वीर है।' सारे हाल में सन्नाटा खिंच गया। राजू ने सर से पांव तक फोटो को देखा। दो तीन बार। और छूटते ही पटाखा फोड़ा—'आई नो (मैं जानता हूँ) यह एक बेवकूफ आदमी है। ठीक है न अंकल!'

सुनते ही मेरा पी.ए. और बैरा हाल के बाहर हो गए। लड़के, लड़के के भाई, बूढ़े दादा, मां, चाची और सबके चेहरे देखने के काबिल हो गए। 'राजू' एक पल को चुप हुआ और फिर मुझसे लिपट गया। 'दादा' के गले में काटे अटक गए। वे कुछ बोलना चाहते थे, मैंने टोक दिया—'राजू' को प्यार करते हुए कहा—'हां

बेटा! यह आदमी इस देश और शताब्दी का सबसे बड़ा 'बेवकूफ' था। थैंक यू 'राजू'!

लगे हाथ मैंने राजू को इन्दिरा जी की तस्वीर दिखाई और पूछा, 'बेटा! पहचानो यह कौन औरत है?'

राजू ने एक पल भी विराम नहीं लगाया और चट से उत्तर दिया—'एक दीवानी औरत है।'

मेरी आंखों में आंसू निकल आए। मैंने 'राजू' को बार-बार चूमा। 'हां बेटा! यह वाकई में 'दीवानी' औरत है। इसकी दीवानगी तुम्हें, तुम्हारे, बाप, तुम्हारे बाप के बाप और तुम्हारे बच्चों तक को मुबारक हो।'

'राजू' के दादा, मां, बाप, चाची और लड़के (चाचा) की हालत कही नहीं जा सकती थी। दादा ने इतना कहा—बच्चा है साहब! आप इसकी बात का बुरा मत मानना!

मैंने आनन-फानन राजू को उठाया और अपनी गाड़ी में बैठाकर पास ही हिन्दी साहित्य के कार्यालय की राह पकड़ी। 'राजू' के मुझे पूरा सहयोग दिया। उसने वहीं रात पौने ग्यारह बजे मुझ से चाय मंगवा कर पी। ग्यारह बजे मैं वापस उसे रैजिडेंसी ले आया और बच्चा अपने परिवार में जा बैठा।

ऐसे करोड़ों 'राजू' देश में हमारे राष्ट्र पुरुषों, संस्कृति, इतिहास और अतीत से योजना-बद्ध तरीके से काटे जा रहे हैं। वस्तुतः वे अपने भविष्य से काटे जा रहे हैं। 'राजू' का स्कूल, उसका पाठ्यक्रम, उसकी टीचर, हमें सबको बदलना होगा। उसके मां-बाप की मनोवृत्ति 'राजू' से उनका शैक्षणिक और संस्कारगत अलगाव सब कुछ बदलना होगा। उन संस्थाओं को बदलना होगा जो देश में ऐसे 'राजू' ढाल रही हैं। यदि नहीं तो लोग फिर सरकारों को बदल डालेंगे। पीढ़ियों को भटकाया जा सकता है, धोखा नहीं दिया जा सकता। स्कूल चाहे जिसका हो, उसमें भारतीयता है या नहीं, यह हमें देखना होगा।

वास्तव में उस दिन मैंने, 'राजू' की नहीं, 'राजू' ने मेरी परीक्षा ली, और मैं उस परीक्षा में 'फेल' हो गया।

पता नहीं उस लड़के-लड़की ने एक-दूसरे को पसन्द किया या नहीं पर मुझे स्वयं से नफरत हो आई। हम अपनी पीढ़ियों के प्रति कितने उदासीन हैं?

जब-जब यह घटना मुझे याद आती है, मैं रोमाञ्चित होकर अश्रुमय हो जाता हूँ। 'राजू' ने सच कहा था—'अंकल! यू आर लूजिंग योर आईज।' (चाचा! तुम अपनी आंखों का इलाज कराओ) बार-बार मुझे रुलाई आती है। मैं भरपूर आवाज से कहा हूँ—नहीं बेटा 'राजू'! नहीं—हमारी आंखें तो तुम हो, इस देश के बच्चे हमारी ज्योति हैं। हमें अपना इलाज कराना है, जरूर, पर तुम्हारे इलाज का क्या मतलब!!..... ●●●

तथाकथित गुमनामी बाबा के बक्सों को खोलने के बाद जो सामान निकला है उससे एक बार फिर नेताजी का विवाद गरमा गया है। जबकि डीएनए रिपोर्ट के बाद ही गुमनामी बाबा के विवाद का पटापेक्ष हो जाना चाहिए था। लेकिन हस्तलिपि और दांतों के परीक्षण-परिणाम के बाद मुखर्जी आयोग द्वारा बाबा को नेताजी मानने से इनकार करने के बावजूद यह विवाद समझ से परे है।

पिछले दिनों फैजाबाद के जिला कोषागार में रखे गुमनामी बाबा उर्फ भगवान जी के 32 छोटे-बड़े बक्सों को खोलने पर जो महत्वपूर्ण सामान निकला, उनसे एक बार फिर यह मुद्दा गरमा गया है कि क्या भगवान जी वास्तव में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महानतम नायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ही थे?

इसी नगर में स्थित राम भवन में 16 सितम्बर, 1985 को बाबा का निधन हो गया था। उसके पश्चात् दो वर्षों तक उत्तर भारत की कई पत्र-पत्रिकाओं में ऐसे लेख प्रकाशित हुए थे। जिनमें इस सामान के आधार पर बाबा को नेताजी साबित करने का प्रयास किया गया था।

भगवान जी की मृत्यु के बाद नेताजी की भतीजी ललिता बोस फैजाबाद आई थीं और राम भवन में रखे सामान के संरक्षण की उत्तर प्रदेश सरकार से मांग की थी, किन्तु सरकार पर अपनी मांग का कोई प्रभाव न होता देख उन्होंने 1986 में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच में एक याचिका दायर की थी जिसमें गुमनामी बाबा के बारे में समुचित जांच कराए जाने और उनके सामान की सूची बनाकर उसे राम भवन से कोषागार में स्थानान्तरित कर दिया था। यह सामान दूसरी बार तब चर्चा में आया जब 2001 में नेताजी के लापता होने की जांच कर रहे मुखर्जी आयोग ने इसे देखा था।

लगभग 27 सालों के बाद ललिता बोस की याचिका पर फैसला सुनाते हुए उच्च न्यायालय ने अपने 31 जनवरी, 2013 के आदेश में उत्तर प्रदेश सरकार से भगवान जी की वस्तुओं को फैजाबाद/अयोध्या में संरक्षित करने के लिए जांच कराने के आदेश भी दिए। इसी के अन्तर्गत जुलाई 2015 में प्रदेश सरकार ने बाबा का सामान फैजाबाद के रामकथा संग्रहालय में स्थानान्तरित करने की घोषणा की। गत 27 फरवरी को गुमनामी बाबा के बक्सों को पुनः खोला गया। उनकी वस्तुओं की फोटोग्राफी-वीडियोग्राफी कराई गई। सामान के कैमिकल ट्रीटमेंट के बाद चयनित वस्तुओं को रामकथा संग्रहालय की गैलरी में संरक्षित-प्रदर्शित किया जाएगा।

इस बीच यूपी सरकार ने 5 अप्रैल को गुमनामी बाबा की सच्चाई जानने के लिए एक जांच आयोग

गठित करने की भी घोषणा कर दी। शीघ्र ही उच्च न्यायालय के किसी सेवानिवृत्त न्यायधीश की अध्यक्षता में एक सदस्यीय जांच आयोग गठित कर दिया जाएगा।

गुमनामी बाबा के सामान में गोल फ्रेम के चश्मे, गोल घड़ी, दूरबीन, तीन विदेशी लाइटर, अमेरिका निर्मित पेन, टाइपराइटर, तांबे का कमंडल, आजाद हिन्द फौज की वर्दी, नेताजी व उनके परिजनों के चित्र, दैनिक उपभोग की कई वस्तुओं के अलावा काफी साहित्य भी मौजूद है जो अंग्रेजी, बांग्ला और हिन्दी भाषाओं में है। पुस्तकों में 'द लास्ट डेज ऑफ ब्रिटिश राज' (ल्योनार्ड मोसले), 'हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया' के तीन खंड (आरसी मजूमदार), 'द स्पीचेज ऑफ चार्ल्स डिकेंस' (और एच शेफर्ड), बांग्ला भाषा में अथर्ववेद संहिता (दुर्गादास लाहिड़ी), हिन्दी में उमर खय्याम की रूबाइयां (हरिवंश राय बच्चन), जेल में 30 वर्ष (तैलोक्यनाथ चक्रवर्ती) आदि हैं।

आज भगवान जी को कुछ लोग नेताजी मानते हैं तो बड़ी संख्या में लोग उन्हें नेताजी मानने को तैयार नहीं हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उन्हें नेताजी द्वारा निर्देशित महत्वपूर्ण व्यक्ति मानते हैं, तो कुछ का यह भी अनुमान है कि उन्हें नेहरू सरकार और इंटेलीजेंस ब्यूरो ने ही तैयार किया था। इस अंतिम श्रेणी के व्यक्तियों में कोलकाता के शोधकर्ता चंद नाथ मलिक का नाम उल्लेखनीय है। उनका मत है कि स्टालिन के शासन काल में कुछ नेताओं के इशारे पर नेताजी की रूस में हत्या कर दी गई थी जिस पर पर्दा डालने के लिए गुमनामी बाबा का ड्रामा बड़ी सफाई के साथ रचा गया और जानबूझकर ऐसा सामान छोड़ा गया जिससे लोगों को उनके नेताजी होने का विश्वास हो जाए। भाजपा नेता डा. सुब्रमण्यम स्वामी का भी यही मानना है कि गुमनामी बाबा इंटेलीजेंस ब्यूरो की एक "ट्रिक" थे।

वास्तव में बाबा के सामान में ऐसा कुछ भी नहीं जिससे यह प्रमाणित हो जाए कि वे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस थे। यह सर्वविदित है कि नेताजी गोल फ्रेम का चश्मा और गोल घड़ी पहनते थे। बाबा के सामान में ऐसे चश्मे और घड़ी का मिलना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं

है। गोल आकार में ये वस्तुएं भारत में सर्वत्र उपलब्ध हैं और कोई भी इनका प्रयोग कर सकता है। आजाद हिन्द फौज की वर्दी तो क्या; दुनिया की किसी भी फौज की वर्दी भारत में बनवाई जा सकती है। भगवान जी के सामान में मिली अंतरराष्ट्रीय राजनीति, युद्धनीति, धर्म और इतिहास संबंधी पुस्तकों से सिर्फ उनकी रुचि का पता चलता है। उनकी ये किताबें उनके नेताजी होने का प्रमाण नहीं है।

भगवान जी को नेता बताने वालों का एक तर्क यह भी है कि वह 23 जनवरी को अपना जन्मदिन मनाते थे और 23 जनवरी को नेताजी का भी जन्मदिन है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि सीतापुर (उत्तरप्रदेश) के मुजहैना नामक स्थान पर एक साधु रहते हैं, जिनका नाम 'संत सम्राट योगी परमहंस' हैं। उनके कई भक्त उन्हें नेताजी सुभाष मानते हैं। उनकी भी जन्म तिथि 23 जनवरी, 1897 बताते हैं जो सुभाष चन्द्र बोस की जन्म तिथि है। तो क्या इस आधार पर संत सम्राट को भी नेताजी मान लिया जाए?

गुमनामी बाबा के समर्थक एक और तर्क बहुत मजबूती के साथ देते हैं, वह यह कि बाबा के पास नेताजी के पुराने साथी आते थे। वे उनमें से डॉ. पवित्र मोहन राय का नाम विशेष रूप से लेते हैं, जो आजाद हिंद फौज के खुफिया विभाग में अधिकारी थे। मुजहैना के संत सम्राट को भी नेताजी के साथ और आजाद हिंद फौज के कर्नल अमर बहादुर सिंह सुभाष चन्द्र बोस बताते हैं, तो क्या उन्हें भी नेताजी मान लिया जाना चाहिए? कल अगर संत सम्राट के निवास से भी प्रतिष्ठित लेखकों की पुस्तकें, गोल चश्मा, गोल घड़ी, नेताजी के परिजनों के चित्र, हाथ से बने नक्शे आदि निकल आए, तो क्या उन्हें भी सुभाष चन्द्र बोस माना जाएगा, भले ही गुमनामी बाबा की तरह उनकी हस्तलिपि और डीएनए का नेताजी से मिलान न हो? इस बिन्दु पर आकर भगवान जी समर्थकों का यह भी तर्क होता है कि संत सम्राट की शक्ल नेताजी से नहीं मिलती है और ऐसा वह इसलिए कह पाते हैं क्योंकि संत सम्राट की तस्वीर उपलब्ध है। यही गुमनामी बाबा के समर्थकों ने एक बड़ा चतुराई भरा खेल खेला है।

गुमनामी बाबा नेताजी नहीं थे:

मुखर्जी आयोग

राम भवन में पाए गए गुमनामी बाबा के 9 में से 5 दांतों को आयोग ने (नेताजी के पितृ पक्ष की ओर से दो वंशजों, और मातृ पक्ष की ओर से तीन

वंशजों के एकत्रित रक्त के नमूने के साथ) यह पता लगाने के लिए ये दांत किसके थे, डीएनए प्रोफाइलिंग परीक्षण के लिए कोलकाता की केन्द्रीय अपराध विज्ञान प्रयोगशाला को भेजा था। वहां से प्राप्त रिपोर्ट में कहा गया था, 'दांत एक ही वृद्ध पुरुष व्यक्ति (कथित गुमनामी बाबा) के हैं। दांत का अलग-अलग स्रोत नेता सुभाष चंद्र बोस की न तो मातृ पक्ष की ओर न ही पितृ पक्ष की डीएनए वंशावली से संबंधित हैं, इसलिए वे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नहीं हो सकते।' इसीलिए आयोग ने गुमनामी बाबा को नेताजी मानने से इनकार कर दिया था। इस डीएनए रिपोर्ट के बाद ही गुमनामी बाबा के विवाद का पटापेक्ष हो जाना चाहिए था। लेकिन हस्तलिपि और दांतों के परीक्षण-परिणाम बाबा को नेताजी मानने वालों के मत के अनुरूप नहीं थे, इसलिए उन्होंने इन परीक्षणों को ही गलत करार दे दिया।.....

भगवान जी की कोई फोटो न होने के कारण सीधे-सीधे सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर ही दाढ़ी-मूढ़े लगवाकर उन्होंने एक एक कम्प्यूटरीकृत तस्वीर बनवा ली है और लोगों को बता रहे हैं कि भगवान जी ऐसे ही दिखते थे। वस्तुतः यह तस्वीर एक बड़ा 'फ्राड' है जिसके जरिए दुनिया को गुमराह किया जा रहा है। यहां यह जिक्र करना भी जरूरी है कि डॉ. पवित्र मोहन राय ने कभी भी यह नहीं कहा था कि गुमनामी बाबा नेता जी सुभाष चन्द्र बोस थे। इसके विपरीत डॉ. राय ने तो यह भी बताया था कि उन्होंने कभी गुमनामी बाबा की शक्ल तक नहीं देखी थी।

गुमनामी बाबा के समर्थक प्रायः एक तर्क भी देते हैं कि नेताजी की सहकर्मी रही लीला राय ने बाबा को नेता जी माना था। इस संबंध में नेता के प्रपौत्र सूर्य कुमार बोस का कहना कि 'लीला राय की ऐसी कल्पना स्वीकार्य नहीं है। गुमनामी बाबा की जो कहानी गढ़ी गई है वह जल्द महत्वहीन हो जाएगी।' सुभाष चन्द्र बोस के एक अन्य प्रपौत्र चंद्र कुमार बोस भी मानते हैं कि गुमनामी बाबा के नेता जी होने का निर्णायक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

मुखर्जी जांच आयोग ने भी पिछले दशक में गुमनामी बाबा के नेताजी होने के दावे की जांच की थी। आयोग ने ऐसा दावा करने वाले सभी गवाहों के बयान को खारिज कर दिया था। जस्टिस मुखर्जी ने भगवान जी के सामान में मिली कुछ पुस्तकों और पत्रिकाओं पर बाबा की हस्तलिपि नहीं माना, जबकि एक ने माना। आयोग से बहुमत को स्वीकार कर लिया।

(शेष पृष्ठ-41 पर)

कई शताब्दियों तक सभ्यता की दृष्टि से अपने से हीन जातियों द्वारा शासित रहने के बाद 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो हमारा सारा ध्यान अपनी शक्ति और सभ्यता को फिर दृढ़ करने में लगना चाहिए था। लेकिन दुर्भाग्य से पिछले सात दशकों में हमारी राजनीति कम्युनलिज्म बनाम सेक्युलरिज्म के नारे में फंसी रही है। ये दोनों शब्द भारतीय परिस्थितियों में कितने कृत्रिम हैं इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि किसी भारतीय भाषा में उनका कोई समानार्थी शब्द नहीं है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में उनके समानार्थी के रूप में जिन दो शब्दों का उपयोग किया जाता है वे इन दोनों संज्ञाओं का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अनुपयुक्त हैं। संप्रदाय हमारे यहां अच्छे अर्थ में ही ग्रहण किया जाता है, इसलिए सांप्रदायिकता को निषेधात्मक संज्ञा के रूप में उपयोग करना किसी तरह सही नहीं है। इसी तरह धर्म-निरपेक्षता कोई सार्थक प्रत्यय हो ही नहीं सकता। क्योंकि हम मानते हैं कि इस सृष्टि में धर्म निरपेक्ष कुछ है ही नहीं।

हम नारा वास्तव में मुसलमानों के आधार पर भारतीय राजनीति को विभाजित करने के लिए लगाया जाता रहा है। यह ध्यान रखना चाहिए कि इस नारे के जनक मुस्लिम नेता नहीं है। भारतीय राजनीति को मुसलमानों के आधार पर विभाजित करने की कुटिल नीति अंग्रेजों का आविष्कार थी। वे 1857 के विद्रोह से विचलित थे और ऐसे किसी विद्रोह की आगे सम्भावना को समाप्त करने की कूटनीति के एक उपाय के तौर पर मुसलमानों को मोहरा बनाने का निर्णय लिया गया था। हम सभी जानते हैं कि ब्रिटिश शासन 'बांटों और राज करो' की राजनीति पर ही आश्रित था। भारत के हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य बढ़ाने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए, इस पर उन्होंने काफी विचार किया था। उनकी इस नीति का पहला बड़ा प्रयोग बंगाल का विभाजन था।

उस समय तक अंग्रेजी शिक्षा ने एक दिग्भ्रमित नया वर्ग पैदा नहीं किया था। इसलिए बंग-भंग के विरोध में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा हुआ। वह 1857 के बाद की सबसे बड़ी घटना थी जिसने ब्रिटिश शासन को हतप्रभ कर दिया था। बंग-भंग आन्दोलन की असफलता से निराश ब्रिटिश शासन ने 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना करवाई। अंग्रेजों के पीठ थपथपाते रहने के बावजूद मुस्लिम लीग को कोई राजनीतिक सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के इस प्रचार के बाद कि ब्रिटिश

शासन की समाप्ति के बाद कांग्रेसी शासन हिन्दू शासन होगा और उसमें मुसलमान पूरी तरह असुरक्षित हो जाएंगे, अन्तिम दिनों में मोहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम लीग को विभाजक शक्ति बना पाए और भारत का विभाजन करवाने में सफल हुए।.....

भारतीय समाज को विभाजित करने वाली शक्ति के रूप में मुसलमानों को इतने प्रभावी ढंग से अंग्रेज कैसे इस्तेमाल कर पाए? यह समझने के लिए हमें उस समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर एक सरसरी दृष्टि डाल लेनी पड़ेगी। 19वीं शताब्दी के अन्त में यूरोप में आधुनिक राज्यतंत्र ने स्वरूप लेना आरम्भ किया था। इस राज्यतंत्र का आधार केवल सेना और राजकुल नहीं थे। इस राजतंत्र का विस्तार एक बड़ी नौकरशाही और शिक्षा तंत्र को माध्यम बनाकर हो रहा था। इसलिए 20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में ब्रिटिश शासकों को अधिक साधन उपलब्ध थे, जिनके द्वारा वे मुसलमानों को हिन्दुओं की प्रतिद्वन्द्वी शक्ति के रूप में खड़ा करके भारतीय समाज को विभाजित कर सकते थे।

अंग्रेजों ने अपने कूटनीतिक तंत्र का और शिक्षा तंत्र का भरपूर उपयोग करते हुए हिन्दुओं और मुसलमानों में अनेक मनगढ़ंत धारणाएं भर दीं।

हिन्दुओं में, उन्होंने यह धारणा डाली कि वे हजार वर्ष से विदेशी शक्तियों द्वारा शासित होते रहे हैं। उन्हें विदेशी शक्तियों के हाथ निरन्तर पराजय ही झेलनी पड़ी है। वे अपने दर्शन में अवश्य कुछ श्रेष्ठ उपलब्धियां प्राप्त कर पाए होंगे। लेकिन उनके सामाजिक संगठन और ज्ञानात्मक आधार में कोई कमी है, जिसके कारण वे परास्त होते रहे।

हिन्दुओं की पराजय का कारण उनकी जड़ता थी, जबकि पहले मुस्लिम विजेता और फिर नए यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान के प्रतिनिधि अंग्रेज गतिशील थे और अपने ज्ञान-विज्ञान की नई उपलब्धियों के सहारे सामरिक रूप से अधिक समर्थ हो रहे थे।

मुसलमानों को, उन्होंने यह समझाया कि वे मुगलों जैसे वैभवशाली राज्य के उत्तराधिकारी हैं। वे वीरता में हिन्दुओं से ऊंचे हैं और अपनी उसी आक्रमकता के बल पर वे हिन्दुओं के अधिसंख्य होने के बावजूद उन्हें झुका सकते हैं। अगर वे एकजुट, सतर्क और आक्रामक नहीं हुए तो उन्हें कांग्रेस के हिन्दू शासन में रहना पड़ेगा और हिन्दू उनसे अपनी पिछली पराजयों का बदला लेंगे।

यह धारणाएं कितनी मनगढ़ंत थीं इसे इतिहास की

सामान्य जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी समझ सकता है। इस्लाम के सारे आवेश और युद्धोन्माद के बावजूद अरब भारत को नहीं जीत पाए थे, जबकि उन्होंने स्पेन और दक्षिणी फ्रांस से लगाकर ईरान तक तथा उत्तरी अफ्रीका से लगाकर मध्य एशिया तक के बड़े भू-भाग को आसानी से जीत लिया था। वही अरब दसवीं शताब्दियों के अन्त में सेल्जुक तुर्कों से हार गए। सेल्जुक तुर्कों के शासन में इस्लाम की शक्ति का प्रतीक खलीफा बगदाद में नाममात्र की शक्ति होकर रह गया था।

1258 में बगदाद को ध्वस्त करते हुए मंगोली ने खलीफा की हत्या करके खिलाफत समाप्त कर दी। यूरोप से चीन तक अपनी विजय का डंका बजाने वाले मंगोलों की अपनी कोई ऊंची सभ्यता नहीं थी। वे खानाबदोश कबीले थे और उनकी समरनीति मंगोलिया की चरागाहों में सहज उपलब्ध दस लाख पुष्ट घोड़े और चीन से प्राप्त गोला बारूद के ज्ञान पर आधारित थी जिससे युद्धों के दौरान उन्होंने आरम्भिक तोपें विकसित कर ली थीं। तुर्कों का उस्मानी साम्राज्य इसी मंगोल अभियान के बाद सम्भव हुआ था।

मध्य एशिया से निकले तुर्कों ने अरबों पर शासन करने के लिए इस्लाम स्वीकार किया था। इस्लाम का उपयोग उन्होंने अपने सैनिकों में युद्धोन्माद पैदा करने और शासकों में निर्ममता पैदा करने के लिए किया। इन तुर्कों को अरबों को जीतने के बाद ही भारत में सफलता मिली। 1350 से लगाकर 1700 तक लगभग साढ़े तीन सौ साल वे भारत में विजेताओं की तरह रहे।

18वीं शताब्दी मराठाओं की शताब्दी थी और मराठाओं के उदय ने हिन्दुओं की पिछली पराजय को ग्लानि समाप्त कर दी थी। इतिहास में स्थापित सभ्यताएं अपने से हीन सभ्यता वाले आक्रान्ताओं से पराजित होती रही हैं। भारत में अंग्रेजों की जीत भी किसी उन्नत सभ्यता की कम उन्नत सभ्यता पर जीत नहीं थी, (जैसा कि अंग्रेजी शिक्षा ने हमारे पढ़े-लिखे लोगों को सिखा पड़ा दिया है।)

16वीं शताब्दी में जब यूरोपीय शक्तियां अपने विश्व अभियान पर निकलीं, यूरोप संसार की सबसे पिछड़ी सभ्यता था। आज वे जिस वैज्ञानिक प्रगति को अपनी सभ्यता की श्रेष्ठता का आधार बताते हैं वह बीसवीं सदी की देन हैं। 1880 तक यूरोपीय जीवन में आधुनिक विज्ञान की कोई भूमिका नहीं थी।

19वीं और 20वीं सदी में एक और धारा मुसलमानों को प्रभावित कर रही थी। यूरोप के उथार से मुसलमानों की राजनीतिक शक्ति पर जो दबाव बना था उससे मुसलमानों में एक अन्तर्मुखता पैदा हुई और उससे इस्लामी पुनरुत्थानवादी शक्तियां पैदा हुईं।

अरबों में वहाबी आन्दोलन तो 18वीं शताब्दी में ही स्वरूप ले चुका था। 19वीं शताब्दी में सैयद जमाल अल दीन ने इस्लामी आन्दोलन की वकालत की। भारत में 1866 में दारुल उलूम की स्थापना हुई। मिस्र में सैयद कुतुब ने इसी तरह की बातें कहीं। यह सब यूरोपीय शक्तियों के वर्चस्व के विरोध में मुसलमानों का आह्वान कर रहे थे। भारत में दारुल उलूम की भूमिका ब्रिटिश शासन विरोधी थी। लेकिन मुसलमानों को कट्टरता से इस्लाम की ओर मोड़ते हुए उसने उन्हें हिन्दुओं से दूर रहने के लिए भी प्रेरित किया। खिलाफत आन्दोलन के मोहम्मद अली और शौकत अली दारुल उलूम और अंग्रेजी शिक्षा दोनों की देन थे। मोहम्मद अली की शिक्षा दारुल उलूम के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और फिर ऑक्सफोर्ड में हुई थी। इन्हीं अली भाईयों ने विच्छेद होने पर महात्मा गांधी से कहा था कि इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार एक पवित्र विधर्मी से एक दुष्ट मुसलमान श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वह अल्लाह में ईमान रखता है।

अंग्रेजों ने केवल राजनीतिक तौर पर ही मुसलमानों को बढ़ावा नहीं दिया। उन्हीं के शासन में धर्मांतरण को खूब बढ़ावा दिया गया। जो मुसलमान अंग्रेजों के शासन के आरम्भ में भारत की आबादी का 10-12 प्रतिशत से अधिक नहीं थे, वे अंग्रेजों के शासन के अन्त तक भारत की कुल जनसंख्या का 25 प्रतिशत हो गए। विशेषकर सीमान्त क्षेत्रों में मुसलमानों को खूब बढ़ावा दिया गया।

सभी हिन्दू-मुस्लिम संघर्षों में ब्रिटिश शासन मुसलमानों के साथ खड़ा दिखता था। इसलिए मुसलमानों ने हर दंगे में हिन्दुओं पर अकथनीय अत्याचार किए। यहां तक कि गांधीजी को भी मुस्लिम बर्बरता से दुखी होकर कहना पड़ा कि हिन्दू अपनी रक्षा के लिए हथियार उठाएं, मैं उन्हें कायरता से मरने की सलाह नहीं दूंगा। मुसलमानों की पीठ पर अंग्रेजों का हाथ होने ने हिन्दुओं में निराशा पनपनी स्वाभाविक थी। इस निराशा से ही हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि संगठन निकले।

अंग्रेजों की फैलाई यह धारणा कि हिन्दू कायर हैं, मुसलमानों का सामना नहीं कर सकते, उनके शासन की विदाई के समय ही गलत सिद्ध हो गई। विभाजन के समय हुए दंगों ने एक समान हिंसा और निर्ममता बरती।

विभाजन के बाद भारत को सहज ही अपने सभ्यता के अनुरूप अपने सामाजिक और राजनीतिक जीवन को पुनर्गठित करने में समर्थ होना चाहिए था। लेकिन गांधी जी को किनारे करके कांग्रेस के नेताओं ने दिल्ली की सत्ता पाने की उतावली में अंग्रेजों के सत्ता प्रतिष्ठान को

ज्यों का त्यों बनाए रखा। इस प्रतिष्ठान के माध्यम से अंग्रेजों के राजनैतिक पूर्वाग्रह भी उत्तराधिकार में मिले। इसी उत्तराधिकार में सेक्युलरिज्म मिला।

इस सेक्युलरिज्म का एकमात्र उद्देश्य मुसलमानों का राजनैतिक उपयोग है। यह स्मरण रखना चाहिए कि यह सारी सेक्युलर जमात हिन्दू हैं। वह अंग्रेजों की फैलाई इस धारणा से जन्मी है कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास एक पराजय गाथा है और हिन्दू समाज एक प्रतिगामी समाज है। हिन्दू धर्म की मान्यताएं अतार्किक हैं। इस हीन ग्रन्थि से सेक्युलरिज्म पैदा हुआ है और सेक्युलर लोगों का उद्देश्य भारतीय समाज की सभ्यता दृष्टि को विस्मृत करवाना है।

अंग्रेजों की तरह वे भी मुसलमानों को भड़काने और उन्हें बृहत भारतीय समाज में रचने-पचने न देने के अभियान में लगे रहे हैं। उन्होंने मुस्लिम समाज का कोई भला नहीं किया। मुसलमानों के राजनैतिक उपयोग के लिए उन्हें हिन्दुओं से अलग करना और पिछड़ा रखना आवश्यक है। यही कारण है कि तथाकथित सेक्युलर दलों की सरकारों में मुसलमानों की शिक्षा और राज्यतन्त्र में भागीदारी घटती ही रही है। जब तक कांग्रेस सरकारें रहीं उनके द्वारा हिन्दू-मुस्लिम दंगे करवाए जाते रहे। कांग्रेस के सत्ता से हटने के बाद उनमें काफी कमी आई है।

अंग्रेजों की विदाई के बाद हिन्दू संगठनों में यह विश्वास आना चाहिए था कि अब भारतीय समाज अपनी सभ्यता के अनुरूप अपना भौतिक ताना-बाना खड़ा कर सकता है लेकिन उनपर भी अंग्रेजों की शिक्षा का यह प्रभाव बना रहा कि मुस्लिम काल उत्पीड़न का काल था।

असल में सभी विदेशी शासन उत्पीड़न का ही काल होते हैं। उस पुरानी स्मृति को मुसलमानों से सहकार में बाधक नहीं बनने देना चाहिए था। भारतीय मुसलमानों को भारतीय सभ्यता के प्रवाह में सम्मिलित करने का आत्मविश्वास भारत के हिन्दू नेताओं में होना चाहिए था।

यह जानते हुए भी कि देश के 14 प्रतिशत मुसलमानों को अलग-थलग रखकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता, उन्हें जानने-समझने, उनमें सुरक्षा की भावना दृढ़ करने और धार्मिक मान्यताओं के स्तर पर उनसे सम्पर्क-संवाद बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। हिन्दू संगठनों की इस निष्क्रियता ने सेक्युलर षड्यन्त्र को सफल होने दिया है। वे भी इस विभाजक राजनीति के कम उत्तरदायी नहीं हैं। लेकिन अब भी समय है और दोनों समुदायों के बीच समरसता पैदा करने की कोशिश होनी चाहिए।

❖❖❖

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:

सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका रित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्चा में ले जाकर ईसाई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। मानवता की रक्षा हेतु हिन्दुत्व की रक्षा करनी आवश्यक है।

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक
अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
मन्त्री

वीरेश कुमार त्यागी
कार्यालय मन्त्री

आश्चर्य है कि तारिक फतेह अभी भी जिन्दा हैं। इस्लामी कट्टरवादियों ने उनके विरुद्ध मौत का फतवा क्रियान्वित नहीं किया। तारिक फतेह पाकिस्तान के लाहौर में पले-बढ़े हैं और कनाडा में बस गए हैं। वे पिछले वर्ष भारत आए, कई संगोष्ठियों में उनके भाषण हुए। वे इस्लामी आतंकवाद की जड़ इस्लाम की विचारधारा को बताते हैं। उसी ने भारत का विभाजन कराया जो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण था, उसे समाप्त होना ही चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत के सेकुलर कायर हैं। जो इस आतंकवाद की जड़ को टटोलने के बजाए शान्तिकामी निर्दोष हिन्दुओं को गाली दे रहे हैं। वे इस्लामी कट्टरवाद पर मौन साध लेते हैं। पर इस कट्टर पाठ का शिकार बने हिन्दुओं की कराह को हिन्दू कट्टरवाद कहकर गालियां देने लगते हैं।

तारिक फतेह ने कहा कि भारतीय मुसलमानों को समझना चाहिए कि उनके पूर्वज हिन्दू थे, उन्हें भारत विभाजन की समाप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए। एक मुस्लिम विचारक तारिक फतेह की इन स्पष्टोक्तियों का स्वागत करने के बजाय एक टेलीविजन चैनल पर 'मिल्ली गजट' के सम्पादक इस्लाम खान ने उन्हें इस्लाम को गाली देने के लिए हिन्दुओं और अमरीका का एजेंट करार दिया और सेकुलरवादियों ने चुप्पी साध रखी है।

जागरण फोरम में बोलते हुए तारिक फतेह ने पूछा कि भारत के सेकुलर बार-बार मुस्लिम तुष्टीकरण की बात क्यों करते हैं? ये उस समय कुछ क्यों नहीं बोले जब सऊदी अरब के शेखों ने मुसलमानों के सबसे बड़े मजहबी स्थल मक्का मदीना पर कब्जा कर लिया। उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद के घर को बर्बाद कर दिया। तब किसी ने कुछ नहीं कहा, कोई आवाज नहीं उठी। तारिक ने कहा कि आज दुनिया भर में आतंक के नाम पर जो कुछ दिख रहा है उसकी जननी सऊदी और पाकिस्तान ही है। भारत का बंटवारा सबसे बड़ी दुर्घटना है। उसे मिटाए बिना शान्ति नहीं होगी।

भारतीय मुसलमानों को स्वीकार करना होगा कि उनके पूर्वज हिन्दू थे। मैं सुन्नी हूँ। मेरी बीबी पंजाबी है। इतनी विविधता और समग्रता भारत में ही हो सकती है।

तारिक के अनुसार भारत विभाजन की जड़ें इस्लामी विचारधारा में हैं। उस विचारधारा को पूरी तरह समझे और जाने बिना इस्लाम के चरित्र को नहीं

समझा जा सकता। भारत विभाजन की कारण-मीमांसा करते हुए तारिक फतेह ने कहा कि आजादी के पहले जब इस देश में चुनाव हुए तो मुम्बई से लेकर पटना तक मुसलमानों ने बड़ी तादाद में मुस्लिम लीग को वोट दिया, जबकि आज जहां पाकिस्तान है उस इलाके में किसी ने मुस्लिम लीग को वोट नहीं दिया, किन्तु दुर्भाग्य देखिए कि आज वहां पाकिस्तान बन गया है। जहां कल तक पंजाबी और सिंधी का बोलबाला था, वहां उर्दू थोप दी गई है, उर्दू का वहां से कोई ताल्लुक नहीं है।.....

तारिक ने आगे कहा कि पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में हिन्दुस्तानियों को न केवल जानना चाहिए, बल्कि देखल भी देना चाहिए। मुझे समझ में नहीं आता कि भारत इस बारे में क्यों कुछ नहीं बोलता। उन्होंने कहा कि जब मैं अपनी बात कहता हूँ तो मुझे 'इंडियन एजेंट' कहा जाता है। सच यह है कि दुनियाभर में आतंक के नाम पर जो कुछ हो रहा है उसकी जननी सऊदी अरब और पाकिस्तान ही है। 9/11 के हमले के सूत्रधार पायलट सऊदी अरब के थे। लादेन वहीं था, बाद में लादेन और उमर को पाकिस्तान ने ही शरण दी।

तारिक ने रहस्योद्घाटन किया कि दुनिया भर में अलहुदा नाम का संगठन कट्टर आतंकवाद की तालीम दे रहा है। पूरी दुनिया में इसके चालीस हजार केन्द्र फैले हुए हैं। अमरीका के कैलीफोर्निया शहर में गोलीबारी करने वाली पाकिस्तानी महिला ने इसी संगठन में तालीम ली थी। भारतीय सेकुलरों को फटकारते हुए तारिक ने कहा कि असहिष्णुता की बात करने वाले लोग तब कहां थे जब कश्मीर से कश्मीर के हिन्दुओं को बेघर कर दिया और वे अपने ही देश में शरणार्थी हो गए। मुट्ठी भर पाकिस्तानी कश्मीर में खुला तांडव कर रहे हैं और हम चुपचाप बैठे हैं।

संक्षेप में, तारिक फतेह ने भारतीय मुसलमानों को अपने हिन्दू मूल को पहचानकर विभाजन को समाप्त करके अखण्ड भारत के लिए आन्दोलन करने का आह्वान किया। ऐसी भाषा बोलने वाले तारिक फतेह अकेले मुसलमान नहीं हैं। भारतीय मुसलमानों के थोक वोट बटोरने के लिए तथाकथित सेकुलर पार्टियां मुसलमानों के उदार व राष्ट्रवादी स्वर की उपेक्षा कर कट्टरवादी नेतृत्व को ही गले लगा रही हैं और मुस्लिम समाज को उनकी शरण लेने के लिए मजबूर कर रही हैं।

समय की मांग है कि इन सुधारवादी राष्ट्रभक्त मुस्लिम तत्वों को राजनीतिक मान्यता देकर एकजुट किया जाए और इस्लामी विचारधारा के वास्तविक चरित्र को सामने लाया जाए। वैसे तो यह कहा जा रहा है कि इस्लाम के भीतर भी विश्व बंधुत्व और शान्ति की धारा विद्यमान है। मध्यकालीन सूफी आन्दोलन इसका उदाहरण है।

किन्तु यहां हमें गांधी जी के उस कथन को स्मरण रखना चाहिए जो उन्होंने खिलाफत आन्दोलन के बाद हुए हिन्दुओं के नरसंहार पर डॉ. भगवान दास को लिखा था। श्रेष्ठ दार्शनिक भगवानदास ने उनसे पूछा था कि हमें बताया जाता है कि हिन्दुओं और मुसलमानों की धर्मनियों में एक ही पूर्वजों का रक्त बह रहा है,

किन्तु दोनों का आचरण इतना भिन्न क्यों है? जहां हिन्दुओं का सहज झुकाव अहिंसा और शान्ति की ओर है, तो मुस्लिम समाज सहज ही हिंसा का मार्ग अपना लेता है। इस पर गांधी जी का उत्तर था कि इसका कारण दोनों की विचारधाराओं और इतिहास यात्रा में खोजना होगा। स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या के बाद गांधी जी ने कहा था कि मैं जानता हूँ कि मुस्लिम हाथ एकदम तमंचे या छुरी पर चला जाता है।

भारतीय मुसलमानों की वर्तमान पीढ़ी को शान्ति के हित में इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए और अपनी हिन्दू जड़ों से जुड़ना चाहिए।

—(पाञ्चजन्य से साभार) ●●●

(पृष्ठ-31 का शेष)

4. 1999 की एक गणना के अनुसार चीनी भाषा के जानने वालों की संख्या 1060 मिलियन (106 करोड़) थी जबकि हिन्दी भाषा के जानने वाले 1103 मिलियन (110 करोड़) हैं।
5. यदि वाणिज्य की सृष्टि से देखें तो भारत में एक अरब का तथा उर्दू लिखी जानने वाली हिन्दी को जोड़ें तो कुल मिलाकर हिन्दी उपभोक्ता दो अरब से अधिक होंगे।
6. विगत एक भाषाई गणना के अनुसार भारत में 67,22,41,910 (सहस्र करोड़ बाईस लाख इकतालीस हजार नौ सौ दस) लोग हिन्दी बोलते हैं। भारत में वर्तमान में कुल आबादी का 75.3 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं।
7. अरब राष्ट्रों में सबसे अमीर कतर में अरबी भाषा के बाद हिन्दी सबसे लोकप्रिय है। हिन्दी उनकी दूसरी भाषा है।
8. दोहा में 7.50 लाख की आबादी में 25 प्रतिशत संख्या भारतीयों की है जो अपनी हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं।

(पृष्ठ-36 का शेष)

अब नया आयोग गुमनामी बाबा के बारे में जांच करेगा। यद्यपि डीएनए जांच के लिए विशेषज्ञ का चयन आयोग को करना होगा, तथापि आयोग को बाबा समर्थकों के प्रतिनिधियों से भी ऐसे विशेषज्ञों को नामित करने के लिए कहना चाहिए, जो मानवीय अवशेष का सही ढंग से परीक्षण कर सकें और जिनकी रिपोर्ट इन समर्थकों के लिए तो विश्वसनीय हो ही; अन्य सभी पक्षों के लिए स्वीकार्य हो। केवल इसी तरह इस विवाद का सदा के लिए अंत किया जा सकता है। ●●●

राष्ट्रभाषा का इतिहास जानने के जिज्ञासुओं के मन में यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न हो सकता है कि उस समय अहिन्दी भाषी नेताओं ने राष्ट्रभाषा के लिए स्व-भाषाओं के नाम प्रस्तावित न करके हिन्दी का नाम क्यों प्रस्तावित किया?.... यह निर्विवाद है कि भारत की सभी भाषाएं अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण, संपन्न तथा समृद्ध हैं। पर व्याप्ति की दृष्टि से हिन्दी सर्वाधिक व्याप्त भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन महोदय ने अपने 'भाषा-सर्वेक्षण' में ठीक ही कहा है कि 'हिन्दी का विकास प्रारम्भ से ही अंतरभाषा के रूप में हुआ है।' यह भाषा सदियों से समस्त भारत में थोड़ी-बहुत समझी तथा बोली जाती रही है।

सार्वदेशिक व्याप्ति के कारणों पर दृष्टिपात करें तो परिवार, समाज, व्यापार व लोक-व्यवहार का पक्ष इतना मजबूत था कि हिन्दी के अलावा दूसरी किसी भाषा की व्याप्ति गौण थी। लोक-व्यवहार, संस्कार-संस्कृति, धार्मिक, राजनीतिक व व्यापारिक-व्यवहार की आदान-प्रदान की भाषा हिन्दी ही थी। दूसरी भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात् करके उसे व्यावहारिक बना देने की व्याप्ति में हिन्दी सक्षम थी।

—(सांस्कृतिक घेष से साभार) ●●●

महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन धरती को यदि कुछ है तो इस 'आत्मा' की सत्यता का प्रबल उद्घोष। धर्म और शान्ति जिसे भी इष्ट है, उसे अपने जीवन का आधार चिन्तन बदलना होगा। सत्य को सत्य जान उसे पहचानना होगा और राज्य, धन विज्ञान, शरीर सभी को 'आत्मा' का साधन बनाना होगा।

—पण्डिता राकेश रानी

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहशाह

—महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

गतांक से आगे....

पहले मलेरकोटला जो लुधियाना से 27 मील की दूरी पर एक मुस्लिम रियासत थी, वहां पर मुसलमान लोग मेथी का काम करते थे। मेथी के पत्ते की कुदरती खुशबू किसी भी सब्जी के जायके को कई गुना बढ़ा देती है और मेथी के परांठे भी लोग बड़े शौक से खाते हैं। मेथी की इन सारी खासियतों को देखते हुए ही हमने इसे अपने एक प्रोडक्ट के रूप में मार्केट में उतारने का फैसला लिया था। आज कोई 50 साल से ज्यादा हो गए होंगे हमें इसे अपने एक प्रोडक्ट के रूप में मार्केट में पेश करते हुए।

उन दिनों जब हमने मेथी के कारोबार का विचार बना लिया, तो माल लाने के लिए हम मलेरकोटला पहुंचे, वहां से हम दो-तीन बोरी मेथी लेकर आए। उन दिनों मेथी का भाव 15 रुपए मन था। मार्केट में हमारे इस प्रोडक्ट को लोग हाथों-हाथ लपक लें, इसके लिए एक-एक छटांक के खूबसूरत डिजाइन वाले मेथी के पैकेट तैयार किए गए। इस तरह हमारे पास चार किस्म के पैकेट तैयार हो गए।

खजूर रोड पर कृष्णा गली में हमारा मसालों का काम शुरू हो गया, तो उसके साथ ही 150 गज के प्लॉट के एक हिस्से में हमने एक छोटा-सा लकड़ी का खोखा भी तैयार कर लिया और उसे ऑफिस के रूप में इस्तेमाल करने लगे। चूँकि हम लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन थे और हमारे घर में दूध-दही, मक्खन आदि का पूरा इंतजाम होता था, इसलिए जब यहां हमारी गाड़ी धीरे-धीरे अपनी रफ्तार पकड़ने लगी, तो खाने-पीने का जो हमारा पुराना शौक था, उसका भी ख्याल करना पड़ा। हमने पांच सौ रुपए में एक भैंस खरीद ली। उसी प्लॉट में एक हिस्से में भैंस रखने का भी इंतजाम कर दिया गया और शुद्ध दूध, मक्खन, दूध की लस्सी आदि खाने-पीने की हमारी

पसंदीदा चीजें आसानी से मिलने लगीं।

दिल्ली हमारे लिए नई जगह थी, नया महौल था और भले ही हमें मसालों का कारोबार करते लंबा वक्त गुजर चुका था, मगर यहां के लिए कारोबार भी एक तरह से नया ही था। इसलिए उन दिनों बड़ी कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। दुकान तो हमारी चल ही रही थी, 'देगी मिर्च' और 'पाल दी हल्दी' के पैकेट भी तैयार हो गए थे। फिर लोगों के बीच अपने प्रोडक्ट को मशहूर करने के लिए हमने 'प्रताप' अखबार के मुख्य पृष्ठ पर विज्ञापन देना शुरू कर दिया। उन दिनों हमारे मसालों के विज्ञापन का मजमून था—'महाशियां

दी हट्टी उर्फ सियालकोट देगी मिर्च वाले।'

जब हमारा विज्ञापन छपना शुरू हो गया, तो जो दुकानदार बंटवारे से पहले पंजाब और पाकिस्तान के शहरों में 'देगी मिर्च' मांगते थे, उनके खत आने शुरू हो गए और इसके बाद हमने अपनी 'देगी मिर्च' का काम शुरू कर दिया। कई दुकानदार खुली 'देगी मिर्च' मंगाने लगे, तो कई खूबसूरत पैकेटों में बंद 'देगी मिर्च' के आर्डर भेजने लगे।

हमारे पास खुली 'देगी मिर्च' का सबसे पहला आर्डर उड़ीसा के कटक से कुमार ब्रदर्स का आया, मालिक का नाम मोहन लाल था। वे लोग

पाकिस्तान के मुलतान से आए थे। 'देगी मिर्च' तैयार करने के लिए उन दिनों पटना से मिर्च आती थी, जिसका रंग बड़ा चटख होता था। हम उस मिर्च की डंडी उतारने के बाद सुखाकर, फिर मशीन में उसकी पिसाई करते और इसके बाद उसमें थोड़ा तेल मिलाकर 'देगी मिर्च' तैयार की जाती।

सन् 1947 से 1949 तक साबूत लाल मिर्च का भाव 27 रुपए मन, साबूत हल्दी का 9-10 रुपए मन, धनिया का 10-11 रुपए मन और काली मिर्च का 16 से 20 रुपए मन तक था।

—क्रमशः...





गतांक से आगे....

इसके प्रयोगशाला में की गई जांचों के असामान्य नतीजों पर ध्यान देकर उनमें सुधार लाना भी बहुत आवश्यक होता है।

कुपोषण (मैलन्यूट्रिशन)

की रोकथाम—कुपोषण (मैलन्यूट्रिशन) की रोकथाम के लिए बहुत से उपाय उपलब्ध हैं लेकिन वृद्ध व्यक्तियों में इन उपायों को अमल में लाने की क्षमता सीमित होती है क्योंकि उनकी शारीरिक क्षमता और आर्थिक क्षमता सीमित होती हैं। इस व्यथा की रोकथाम के लिए इसे उत्पन्न करने वाले सभी कारणों और इनकी सहायक स्थितियों (रिस्क फैक्टर्स) का पता लगाकर उन्हें दूर करने के लिए हर संभव उपाय करना आवश्यक होता है जिसके लिए वृद्ध व्यक्ति प्रायः असमर्थ होते हैं और इस काम में उन्हें सहायता की आवश्यकता होती है।

संबंधित व्यक्तियों को अपने आहार में आवश्यक मात्रा में स्वास्थ्यवर्धक भोज्य पदार्थों को सम्मिलित करना आवश्यक होता है। इसकी व्यवस्था करने में पोषणविद (न्यूट्रिशनिस्ट), आहारविद (डायाटिशियन) और सम्बन्धित चिकित्सक के परामर्श की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही संवेदशील (वलनरेबुल) व्यक्तियों, विशेषकर वृद्ध व्यक्तियों को नियमित समय पर अपना कार्य परीक्षण (फीजीकल एक्जामिनेशन) करवाते रहने की आवश्यकता होती है और इस परीक्षण में पायी गई कमियों को तुरंत दूर करना आवश्यक होता है।

वृद्धावस्था में अनेक व्यक्तियों को अकेले रहने की विवशता होती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए कुछ प्रबंध अलग से करने की आवश्यकता हो गई है। उनके लिए उनकी देखरेख की व्यवस्था करने के लिए नए-नए तरीके अपनाने की आवश्यकता हो गई है। इसलिए उनके लिए सामूहिक वृद्धाश्रम और परिचर्यागृह (नर्सिंग गृह) के निर्माण की आवश्यकता हो गयी है जहां पर उन्हें अकेलेपन की विवशता नहीं होगी क्योंकि वहां पर उनके हम उम्र साथी और दोस्त मिल जाएंगे और उनके स्वास्थ्यवर्धन की व्यवस्था भी उपलब्ध होगी।

लेकिन.....यह व्यवस्था खर्चीली होगी जिसमें वृद्धव्यक्तियों की आर्थिक क्षमता आड़े आएगी। इसके लिए प्रशासन की सहायता की आवश्यकता

—डॉ. फणिभूषण दास

होगी। और स्वास्थ्य बीमा कम्पनियों को भी इस काम के लिए आगे आना होगा।

वृद्धावस्था और गिरने की दुर्घटना—वृद्धावस्था में सामान्यतः स्वास्थ्य की विभिन्न समस्याएं तो अक्सर उत्पन्न हो जाती है जिनसे होने वाली कठिनाइयों और परेशानियों से ग्रसित वृद्ध व्यक्तियों को जूझना पड़ता है। वृद्धावस्था में बढ़ती आयु के साथ प्राकृतिक रूप से शरीर में कई परिवर्तन हो जाते हैं जिनमें बढ़ती आयु के साथ वृद्धि भी होती जाती है।

इन परिवर्तनों में धूमिल दृष्टि/आंखों की रोशनी में कमी (ब्लर्ड वीजन), श्रवण शक्ति में ह्रास, मांसपेशियों की शक्ति में ह्रास, शारीरिक असंतुलन (इम्बैलेंस) और प्रतिवर्तों की क्रिया में ह्रास (स्लैगिश रिलैक्सेज) मुख्य हैं और इन सबों की स्थिति युवा व्यक्तियों में मौजूद इनकी स्थिति जैसी नहीं रह जाती।

उपरोक्त परिवर्तित स्थितियों में शारीरिक असंतुलन (इम्बैलेंस) बहुत महत्वपूर्ण होता है। मधुमेह (डायाबिटीज), हृदय रोग (हार्ट डिजीजेज), असामान्य रक्त संचरण (डिफीसियेंट ब्लड सर्कुलेशन), अवटु (थायरॉइड) ग्रंथि के रोग और तंत्रिका प्रणाली (नर्वस-सिस्टम) के रोग सामान्यतः शारीरिक असंतुलन (इम्बैलेंस) का कारण बनते हैं। इन सबों के अतिरिक्त, वृद्ध व्यक्तियों में मौजूद रोगों के उपचार में सामान्य रूप से व्यवहृत औषधियों के सेवन से अनेक अनचाहे/अप्रत्याशित इतर प्रभाव (अनवांटेड साइड इफेक्ट्स) उत्पन्न हो जाते हैं। जिसमें सर में चक्कर/घुमनी (डिजीनेश) और शारीरिक असंतुलन (इम्बैलेंस) मुख्य होते हैं जो ग्रसित व्यक्तियों में गिरने का कारण बनते हैं।

65 वर्ष की आयु या इससे भी अधिक आयु के व्यक्तियों में गिरने की दुर्घटना उनके जीवन में बहुत सी कठिनाईयां और परेशानियां उत्पन्न कर देती हैं जो प्राणघातक भी हो सकती हैं। बढ़ती आयु के साथ गिरने की दुर्घटना का आघटन (इन्सीडेंस) भी बढ़ता जाता है। आज वर्तमान समाज में नई स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसके चलते अनेक वृद्ध व्यक्तियों को घर में अकेले रहने की विवशता हो जाती है। क्योंकि आज के वातावरण में परिवार के युवा सदस्यों को नौकरी या व्यवसाय के लिए घर छोड़ कर दूर के स्थानों में जाकर रहना पड़ता है जिसके फलस्वरूप

—क्रमशः...

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल 2016

दिनांक 20, 21 तथा 22 अक्टूबर 2016

12 जुलाई 2016

सम्माननीय आर्यबन्धुओ !

सादर नमस्ते । आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 20, 21 तथा 22 अक्टूबर 2016 को नेपाल की राजधानी काठमांडू में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि भी नेपाल पहुँचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु भारी संख्या में आर्यजनों के पहुँचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, नेपाल द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

जैसी कि आप सभी जानते हैं कि नेपाल एक विकासशील सम्पन्न देश नहीं है। पिछले भयानक भूकम्प ने वहाँ की स्थिति और भी खराब कर दी है। इसके बाद भी नेपाल की आर्य प्रतिनिधि सभा ने काठमांडू में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का जो उत्साह दिखलाया है वह आप सबके सहयोग से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकेगा।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर नेपाल के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए नेपाल के रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है —

यात्रा नं. 1

(केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु)

(A) हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (4 रात 5 दिन) 19 अक्टूबर से 23 अक्टूबर 2016 तक
दिल्ली से 19.10.16 को वापसी काठमांडू से 23.10.16 को

यात्रा व्यय

यात्रा व्यय	₹ 35,000/-	प्रति व्यक्ति	5 सितारा होटल के लिये
" "	₹ 27,000/-	" "	3 " " " "
" "	₹ 22,000/-	" "	अतिथि भवनों के लिये

यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के नाम बैंक ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:

श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

नोट: काठमांडू का भ्रमण कार्यक्रम 19 अथवा 23 अक्टूबर को रखा जायेगा।

यात्रा नं. 1

(B) वाराणसी तथा गोरखपुर से वातानुकूलित (5 रात 6 दिन) 19 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2016 तक
2X2 बसों द्वारा प्रस्थान काठमांडू से वापसी 23 की रात को

यात्रा व्यय ₹7500/- प्रति यात्री

इस राशि में 6 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 4 दिन का साधारण होटल का किराया, 4 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस बस यात्रा के लिये ₹7500/- का बैंक ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली' के नाम बनवाकर पृष्ठ 1 पर (A) में दिये हुए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

- (1) जो लोग वाराणसी तथा गोरखपुर तक ट्रेन से पहुँचकर वहाँ से नेपाल जाने की सुविधा चाहते हैं उन यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बड़ी कोशिशों के बाद गोरखपुर तथा वाराणसी से AC बसों की व्यवस्था हो सकी है जिससे कि यात्री नेपाल तक की यात्रा के अनेक कष्टों और असुविधाओं से बच सकें।
 - (2) सभी बसें वाराणसी तथा गोरखपुर रेलवे स्टेशनों से प्रस्थान करेंगी। प्रत्येक बस में केवल 40 यात्री ही जा सकेंगे।
 - (3) जितने यात्री 18 अक्टूबर की रात को 9.00 बजे तक वाराणसी तथा गोरखपुर पहुँच जायेंगे उन्हें 18 की रात को 11.00 बजे 40-40 के ग्रुप में काठमांडू के लिये रवाना कर दिया जायेगा। उसके बाद जितने भी यात्री पहुँचेंगे उन्हें 19 अक्टूबर की सुबह 8.00 बजे 40-40 के ग्रुप में भेजा जायेगा।
 - (4) काठमांडू पहुँचने में वाराणसी से लगभग 18 घण्टे का तथा गोरखपुर से लगभग 14 घण्टे का समय लगता है। नेपाल बार्डर रात को 10 बजे से सुबह 5.30 तक बन्द रहता है इसलिए बसों का बार्डर पर रात को 10 बजे से पहिले या सुबह 5.30 के बाद पहुँचना ठीक रहता है ताकि वहाँ समय व्यर्थ बरबाद न हो।
 - (5) गोरखपुर से काठमांडू तक के रास्ते में तथा लौटते समय नाश्ते तथा भोजन का खर्चा यात्री को स्वयं करना होगा।
 - (6) काठमांडू में 20, 21, 22 तथा 23 अक्टूबर को चार दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 22 अक्टूबर तक की होटल व्यवस्था तथा भ्रमण-व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। 23 अक्टूबर को काठमांडू भ्रमण के पश्चात् बस भारत के लिये वापस रवाना होगी।
 - (7) नेपाल जाते समय यात्री के पास पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड होना जरूरी है।
- नोट: उक्त पैकेज ता.18 अक्टूबर की सुबह से 19 अक्टूबर की सुबह तक पहुँचने वाले यात्रियों के लिये ही उपलब्ध रहेगा। जिन्हें 40 के ग्रुप में बुकिंग करानी हो वे ग्रुप बुकिंग करवा सकते हैं।

यात्रा नं. 2

(नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा)

(A) हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (7 रात 8 दिन)

दिल्ली से 17.10.16 को

वापसी काठमांडू से 24.10.16 को

" 18.10.16 "

" " " 25.10.16 को

" 19.10.16 "

" " " 26.10.16 को

एक ही दिन में ज्यादा हवाई टिकटें उपलब्ध न होने के कारण तीन अलग-अलग तारीखों में थोड़ी-थोड़ी टिकटें खरीदी जा सकी हैं। सम्मेलन से पहिले या बाद में ए.सी. बसों द्वारा पोखरा की यात्रा की जायेगी। पोखरा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर बहुत ही रमणीय स्थान है। यहाँ पर दो रात्रि का विश्राम रखा गया है। बीच रास्ते में अन्य दर्शनीय स्थलों को भी देखने का अवसर मिलेगा। यात्रा नं. 2 के अन्तर्गत काठमान्डू में एक दिन का अतिरिक्त विश्राम भी शामिल है जिससे कि सम्पूर्ण यात्रा आरामदायक रहे।

यात्रा व्यय

यात्रा व्यय ₹ 46,500/- प्रति व्यक्ति

5 सितारा होटल के लिये

" " ₹ 36,500/- " "

3 " " " "

यात्रा नं.2 के लिये सम्पूर्ण राशि का बैंक ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के नाम बनवाकर पृष्ठ 1 पर (A) में दिये हुए पते पर तत्काल भेजना होगा।

यात्रा नं. 2

(नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा)

(B) गोरखपुर तथा वाराणसी से वातानुकूलित (7 रात 8 दिन)

19 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2016 तक
पोखरा से वापसी 25 की रात को

यात्रा व्यय ₹11,500/- प्रति यात्री

इस राशि में 8 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 6 दिन का साधारण होटल का किराया, 6 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू और पोखरा घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस बस यात्रा के लिये ₹11,500/- का बैंक ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली' के नाम बनवाकर पृष्ठ 1 पर (A) में दिये हुए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

- (1) पृष्ठ 2 पर बस यात्रा सम्बन्धी दी गई सूचनाएं क्रमांक 1 से 5 तथा 7 इस यात्रा में भी लागू होंगी। नेपाल में 20, 21, 22, 23, 24 तथा 25 अक्टूबर को 6 दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 24 तक 6 दिन की होटल व्यवस्था तथा सारी भ्रमण-व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। काठमांडू तथा पोखरा घूमने के पश्चात् 25 अक्टूबर को बस भारत के लिये वापस रवाना होगी।

यात्रा नं. 3

(काठमांडू तक अपने-आप पहुँचने वालों के लिये विशेष सुविधा)

अपने-आप काठमांडू पहुँचने वालों के लिये काठमांडू में 4 दिन साधारण होटल में ठहरने की तथा 4 दिन की भोजन व्यवस्था सभा द्वारा की जा रही है। जो भी यात्री इस सुविधा को लेना चाहें वे तत्काल 4,000/- का बैंक ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली' के नाम बनवाकर पृष्ठ 1 पर (A) में दिये हुए पते पर तत्काल भेजने का कष्ट करें।

नोट: इस पैकेज में अन्य कोई सुविधा नहीं दी जा सकेगी।

कुछ आवश्यक सूचनाएँ

- (1) ग्रुप बुकिंग के कारण हवाई जहाज की टिकटें बहुत ही कम संख्या में उपलब्ध हो सकी हैं अतः आप शीघ्रातिशीघ्र अपनी बुकिंग करालें जिससे कि आपको निराश न होना पड़े। सीटें समाप्त होने पर आपको अधिक राशि देनी पड़ सकती है। (2) नेपाल यात्रा में बीमा की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु यदि आप जरूरी समझें तो स्वयं करवा लें। दिये हुए पैकेज में बीमा शामिल नहीं है। (3) जो लोग बिना किसी पूर्व सूचना के सीधे पहुँचेंगे उनके ठहरने व खाने की जिम्मेदारी सभा की नहीं होगी। नेपाल सम्मेलन में भाग लेने के लिये उन्हें ₹1500/- की सहयोग राशि नेपाल में सार्वदेशिक सभा को देनी अनिवार्य होगी। सम्मेलन में तीनों दिन भोजन व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। (4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ अथवा वोटर कार्ड की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। एअर लाइन की टिकट के लिये इसकी आवश्यकता रहती है। (5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्यसमाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है। (6) नेपाल के लिये वीजा नहीं चाहिये किन्तु एअरपोर्ट पर पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड में से किसी एक का लाना अत्यावश्यक है। (7) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य- महामंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री अरुणजी वर्मा, दिल्ली श्री एस.पी.सिंह, दिल्ली तथा श्री शिवकुमारजी मदान दिल्ली हैं।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्ज निम्न प्रकार लागू होंगे:

- (1) प्रस्थान की तारीख से 30 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर ₹7500/- की कटौती की जायेगी। (2) प्रस्थान की तारीख से 16 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर 75% की कटौती की जायेगी। (3) प्रस्थान की तारीख से 1 दिन से लेकर 15 दिन पहिले तक हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर 100% कटौती की जायेगी। (4) 30 दिन पूर्व बस यात्रा कैन्सिल कराने पर 50%, 15 दिन पूर्व कराने पर 75% तथा उससे कम समय में 100% कटौती की जायेगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं :

1. श्री अरुण वर्मा मो. 98100 86759 2. श्री एस.पी.सिंह मो. 9540040324 3. श्री शिवकुमार मदान मो. 09310474979

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद,

आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

प्रथदीप
(प्रकाश आर्य)
मो. 09826655117

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 हेतु आवेदन - पत्र

श्री सुरेशचन्द्र आर्य

प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड

नई दिल्ली - 110001

मो.98240 72509

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 में भाग लेने जाना चाहता हूँ/चाहती हूँ। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है :

नाम: _____ पिता/पति का नाम: _____

आयु: _____ जन्म दिनांक : _____ व्यवसाय : _____

स्थायी पता : _____

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : _____ ई.मेल : _____

मैं आर्यसमाज _____ का/की सदस्य हूँ।

यात्रा नं. -1 (A) तथा यात्रा नं. 1 (B)

मैं यात्रा नं. 1 (A)/ नं. 1 (B) में शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ _____/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ / वोटर कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -2 (A) तथा यात्रा नं. 2 (B)

मैं यात्रा नं. 2 (A)/ नं. 2 (B) में शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ _____/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ / वोटर कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -3

मुझे यात्रा नं. 3 वाली सुविधा चाहिये। मैं ₹ 4000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/ रही हूँ।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्यसमाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ)

भवदीय/भवदीया

(आवेदक के हस्ताक्षर)

दिनांक : _____

समाचार दर्शन

प्रगति मैदान में पुस्तक मेला

नई दिल्ली: दिल्ली के प्रगति मैदान में दिल्ली पुस्तक मेला 4 सितम्बर तक चला। भारतीय प्रकाशक महासंघ के सहयोग से भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) द्वारा आयोजित नौ दिवसीय मेले का उद्घाटन केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री डॉ. हर्षवर्धन के किया। इस बार के पुस्तक मेले की थीम 'सर्व शिक्षा अभियान' है। दिल्ली पुस्तक मेले के 22वें संस्करण का लक्ष्य युवाओं में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए सर्वशिक्षा अभियान के तहत केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न पहलों को रेखांकित करना है।

राजस्थान में 253 मन्दिर तोड़े गए प्रतिक्रिया:

- स्वर्गीय अशोक सिंहल ने भी दुःख व्यक्त करते हुए भाजपा सरकार की कटु निन्दा करते हुए कहा था कि ढाई वर्षों में इतने मन्दिर तो औरंगजेब ने भी नहीं तोड़े थे।
- यह छोटे-बड़े मन्दिर जयपुर में मैट्रो चलाने के लिए

तोड़े गए हैं।

- चूँकि भाजपा सरकार आक्रामक मुस्लिमों से डरती है। इसलिए उसने जानबूझकर ऐसा स्थान चुना जहाँ एक भी मस्जिद नहीं थी।
- अभी 22 मन्दिर और तोड़ने हैं।
- मन्दिर रक्षा बचाओ का गठन देर से हुआ लेकिन दुर्भाग्य से इसका अध्यक्ष एक भाजपाई बन गया।
- इन मंदिरों में कई मंदिर अति प्राचीन थे।
- भाजपाई अध्यक्ष ने 275 मंदिरों के बदल 13 नए मंदिर बनाने पर समझौता कर लिया है।
- हम राज्य सरकार की कार्रवाई से संतुष्ट नहीं हैं।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, 23, 24, 25 फरवरी 2017 को किया जाएगा। आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के पास) चर्च
के सामने, नई दिल्ली-110005

फोन नं. : 011-23553624, 011-23551344, मो. 09213527666

Website : www.hindisahityasadan.com

E-mail : hindisahityasadan@gmail.com

नवीण एवं पुनः मुद्रित प्रकाशन

नरेन्द्र मोदी-बहुआयामी व्यक्तित्व	रविचन्द्र गुप्ता	रु 150
बापू तुम कब सिधारोगे?	डा. विमला मल्होत्रा	रु 80
देश-विभाजन की पीड़ा (द्वितीय संस्करण)	डा. विमला मल्होत्रा	रु 80
गोडसे की आवाज सुनो (भारत विभाजन का आपराधी कौन)	जगदीश वल्लभ गोस्वामी	रु 35
राष्ट्रीय नेताओं की ऐतिहासिक भूलें	विशनचन्द्र सेठ	रु 80
चुनौतियों से घिरा भारत	शिवकुमार गोयल	रु 80
हस्त-रेखा ज्ञान (सिद्धान्त एवं व्याख्या) ओ पी वर्मा		रु 220
देश-विभाजन की खूनी इतिहास प्रचारित साहित्य		
	जस्टिस जी डी खोसला	रु 220

क्या हिन्दू मिट जाएगा	" सच्चिदानन्द चतुर्वेदी	रु 90
काफिर	" सय्याह सुनामी	रु 90
भगवान एकलिंग	" सय्याह सुनामी	रु 95
आखिर जीत हमार	" सय्याह सुनामी	रु 80
कीरो अंक विद्या और आपका भविष्य		

	“ डा. मधुकर अग्रवाल	रु 60
कीरो-हस्तरेखाए क्या कहती है	“ डा. मधुकर अग्रवाल	रु 60
हिप्नोटिज्म स्वयं सीखिए	“ आचार्य राजेश दीक्षित	रु 60
चमत्कारी शाबर मन्त्र शास्त्र	“ देवी प्रसाद भट्ट	रु 60
फलित ज्योतिष	“ देवी प्रसाद भट्ट	रु 60
टोटके ही टोटके	“ समर्थ बाबा हितदास	रु 60

किशोरों के लिए ज्ञानवर्धक रोचक, प्रकाशन

महर्षि दयानन्द	गुरुदत्त	रु 30
श्रीराम	गुरुदत्त	रु 60
श्री कृष्ण	गुरुदत्त	रु 30
जगत की रचना	गुरुदत्त	रु 30
महाभारत	गुरुदत्त	रु 60
द्वितीय विश्व युद्ध हिटलर की कहानी	गुरुदत्त	रु 30
धर्मवीर हकीकत राय	गुरुदत्त	रु 40
वीर पूजा		
(क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन पर)	गुरुदत्त	रु 50

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान को शिरोधार्य कर “स्वामी दयानन्द संस्थान” विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर “चार वेदों का हिन्दी भाष्य” तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े पाँच लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान किया था। स्वामी दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेदमन्दिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग ३० वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान, दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि - प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर, संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर, गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे, तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन - रक्षण और संवर्धन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।

अतः गौभक्तों से निवेदन है कि गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा कम मूल्य में मिल रहा है, जो बाद में दुगने दामों में लेना पड़ता है। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। गौओं हेतु अपने योगदान की राशि “स्वामी दयानन्द संस्थान” के नाम चैक/ ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा प्रेषित करें। अथवा यूनियन बैंक, शाखा-करोलबाग, नई दिल्ली-5, खाता नं० - 307902010054434, IFSC: UBIN 0530794 में भी जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को ‘जनज्ञान’ मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष-स्वामी दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.- मुखमेलपुर, दिल्ली-३६ चलभाष : +91- 8459349349 +91-9810257254,
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

पत्र व्यवहार में पते के साथ लिखी सदस्य संख्या / ई-मेल / मोबाईल / पिनकोड सदैव और अवश्य लिखें।

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	4000 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी	300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मंत्रों की व्याख्या)	100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी	100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियाँ-पं. प्रेमचन्द जी	20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री	20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा	300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य	20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी	80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी	300 रु.
17. History of the assassins	80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती	100 रु.
19. Vedic Prayer(दैन.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)	60 रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)	300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand	40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी	80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत	100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण	20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम्	20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
28. सत्संग पद्धति	15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत	20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा	5 रु.

31. उपनिषद् संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी	100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार	100 रु.
37. श्रीमद्भयानन्द प्रकाश	100 रु.
38. श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति	80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर	20 रु.
40. वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय	5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी	80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्या)	30 रु.
44. योगासन	20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश	3 रु.
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश	3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु:	2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु:	2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं-सावरकर	2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी	2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी	2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8. इस्लाम-एक परिचय	2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु:	2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर	5.00 रु.
15. Bible in the Balance	3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम माँ का संदेश	2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20. A challenge to the Christian Faith	1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर
बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254



Managing Trustee

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ॥

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST



god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017

Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

دردِ دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
دردِ طاقت کے لئے کچھ کم نہ تھے کتبِ بیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करूँ बयां

بہ پائی ہے دُعاہی کلاشِ میری : زندگی شمع کی صورت چھٹا دیا میری :
دُور دنیا کا سرے م سے اندر ابرو جانتے : ہر نگاہ میرے پسے سے اجالا ہو جانتے :
ہر گئے دم سے اپنی بے گلی کی زینت : جس طرح چول سے ہوتی ہے بچن کی زینت :
زندگی ہر پری پروانے کی صورت یارب : علم کی شمع سے ہو جب کو محبت یارب :
ہر اکلامِ منہ میں کی حمایت کرنا : دہشتوں کے غیوض سے محبت کرنا :
سے نشہ دہرائی سے بچنا مجھ کو : نیک جہادِ براس نہ ہو چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे धमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे बतन की जीनत
जिस तरह फूल से होती है वमन की जीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यावर
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यावर

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईकों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

जनज्ञान (मासिक)

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

भाद्रपद-आश्विन

सम्बत्-२०७२

सितम्बर, सन्-२०१६

प्रकाशन तिथि ३ सितम्बर

Delhi Postal NO. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017

R.N.I. -10719/65

Posted at New Sabji Mandi

Date 5 & 6 of September-2016



के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले

असली मसाले
सच - सच



महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 - 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com